Title code: UPHIN47296
UAN: UP75D0004512

नवम्बर 2017 वर्ष 2 मूल्य 15 रुपये

दिल इंडिया

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

ठुमरी साम्राज्ञी गिरजा देवी का जाना...

आगमन काल से होगा क्रिसमस का आगाज

देव दीपावली पर रौशन हुआ सारा जहां

स्पेनी पीएम ने किया कैटेलोनिया सरकार को बर्खास्त
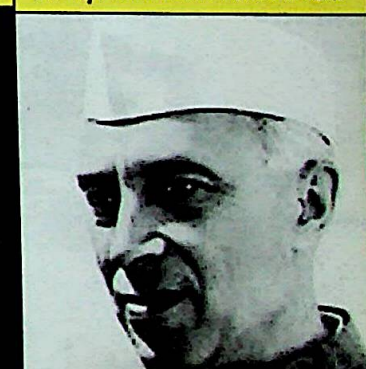
पुत्री इंदिरा की नज़र में पिता नेहरु

खूबसूरती और अदाकारी का दूसरा नाम त

दिल इंडिया

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रधान सम्पादक : इब्तेसाम अख्तर

सम्पादक : रिफत जहां

सम्पादकीय टीम :

अदब जहांगीर, डा. शाह मेराज, राजेश सेठ, मो. अरशद खां, शिव यादव, एफ. फारुकी, बाबू, एसपी राय, जुनैद अली, साधना श्रीवास्तव, आरती सेठ, शाहिद खां, प्रवीण चन्द्रा, शमशाद अहमद, प्रताप बहादुर सिंह, अरुण भारती, फिरोज खां, एस. अलीमुद्दीन।

ब्यूरो कार्यालय :

बिहार प्रदेश: खालिद अनवर
बरेली: नदीम अकबर हाशमी
भदोही: आतिफ मोहम्मद
चंदौली: शकील अहमद
गाज़ीपुर: हिमांशु राय, फज़लुल इस्लाम
जौनपुर: करामत अली
बलिया: बाबे रय्यान
मऊ: अली अकरम एडवोकेट
मिर्जापुर: विजय कुमार गुप्ता
विज्ञापन : हाजी इम्तेयाज, मो. साजिद, मदन
फोटोग्राफर : विश्वकर्मा प्रसाद, अमित
साज-सज्जा: राजेश कुमार यादव
प्रसार प्रभारी : रेयाज अहमद नूर।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक इब्तेसाम अख्तर द्वारा वाराणसी प्रिंटर्स प्रेस सी.के. 64/86 हीरापुरा, कबीरचौरा, वाराणसी से मुद्रित व एस. 3/200 उल्फत कम्पाउंड, अर्दली बाज़ार, वाराणसी, उत्तर प्रदेश से प्रकाशित, प्रधान सम्पादक इब्तेसाम अख्तर।

नोट 1-सभी विवादों का निपटारा वाराणसी न्यायालय में ही किया जायेगा, लेखकों के विचार उनके स्वयं के हैं। इससे सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं है।

नोट 2-दिल इंडिया में सभी पद अवैतनिक है।

विधि सलाहकार-इस्लामुल्लाह सिद्दीकी एडवोकेट, धीरज कुमार सिंह एडवोकेट व ताज मोहम्मद एडवोकेट।

सम्पर्क करें:-

09452246786, 05422512786

786dilindia@gmail.com

इस अंक में....

सम्पादकीय

स्मॉग के ख़ौफ में फंसी तमाम जिन्दगी

राजधानी दिल्ली में जहरीले स्मॉग की दस्तक और दहशत से तमाम जिन्दगियां ख़ौफज़दा है। आलम यह है कि स्मॉग के दिल्ली से होकर पूर्वांचल में भी पैर पसारने की संभावना से मौसम वैज्ञानियों ने इंकार नहीं किया है। दिल्ली और नोएडा में तो स्कूल कालेज तक बंद कर दिये गये हैं। हाईकोर्ट और सरकार को भी इसमें ज़रूरी कदम उठाने की पहल करनी पड़ी है। वायु गुणवत्ता सूचकांक 500 के पैमाने पर 448 अंक के साथ गम्भीर स्तर पर मापा गया। जो अपने आपमें बड़े खतरे की ओर इशारा है। उधर दिल्ली हाईकोटे ने कहा कि दिल्ली और आसपास के इलाक़ों में प्रदूषण के गम्भीर स्तर के पीछे सबसे बड़ा खलनायक पराली का जलाया जाना है। इस बीच एनजीटी ने पराली जलाने के चलन पर लगाम लगाने की कोई तैयारी नहीं करने पर दिल्ली सरकार और पड़ोसी राज्यों को लताड़ लगायी। हाईकोर्ट ने दिल्ली सरकार और पड़ोसी राज्यों से पूछा कि उन्होंने इस मामले से निपटने के लिए क्या कदम उठाये हैं। वहीं एनजीटी ने दिल्ली, हरियाणा और पंजाब की सरकारों को आपातकालीन स्थिति से निपटने की तैयारी पहले से नहीं करने को लेकर फटकार भी लगायी।

दिल्ली सरकार ने सख्त हिदायत दी है कि पब्लिक ट्रासपोर्ट का इस्तेमाल ज्यादा से ज्यादा करें, सुबह और शाम के वॉक से बचे। सूखें पत्तों, फसल के अवशेषों, लकड़ियां और कोयला न जलाये। सांस लेने में किसी भी तरह की अगर कोई परेशानी महसूस हो तो फौरन चिकित्सा सेवा केन्द्र में जाये। अगर आपको गले और नाक में परेशानी महसूस हो तो भाप लीजिए और नमक के पानी से गरारा ज़रूर करें। पर्याप्त मात्रा में गर्म या गुनगुने पानी का ही सेवन करें। बच्चों, बुजुर्ग, गर्भवती महिलाओं, दमा के रोगियों हृदय रोग, मधुमेह से पीड़ित लोगों से और अधिक एहतियात बरतने को कहा गया है। स्कूलों को भी एलर्ट किया गया कि जब तक स्थिति सामान्य न हो जाये स्कूलों में सुबह की प्रार्थना सभा,रोक दी जाये। खेल-कूद की गतिविधियां या अन्य शरीरिक गतिविधियों से बचा जाये।

निकाय चुनाव का बजा डंका

नगर निकाय (सामान्य निर्वाचन) के जरिये तीसरी सरकार के गठन हेतु पिछले दिनों डंका बज गया। इसके लिए नगर पालिका परिषद अध्यक्ष, नगर पंचायत अध्यक्ष और नगर निगम के महापौर सहित पार्षद के प्रत्याशियों के चयन हेतु प्रदेश में तीन चरणों में मतदान होगा। समाचार लिखे जाने तक कई जगहों पर नामांकन पत्र दाखिले का काम चल रहा था। कई शहरों में नामंकन भी सम्पन्न हो गया।

मतदान के पहले चुनाव प्रचार प्रसार में उम्मीदवार जुट गये हैं। महापौर पद के लिए जहां जिला मुख्यालय पर पर्चा दाखिल करने की व्यवस्था की गयी थी वहीं दूसरी तरफ निगम के जोनस्तर पर पार्षद पद के प्रत्याशियों ने अपना नामांकन दाखिल किया। इस दौरान सभी राजनीतिक दलों ने जुलूस निकाल कर अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया।

बनारस में नामांकन सम्पन्नः

नगर निगम महापौर के लिए भाजपा से मृदुला जायसवाल, सपा से साधना गुप्ता, कांग्रेस से शालिनी यादव तथा बसपा से सुधा चौरसिया ने बड़ी संख्या में पार्टी के वरिष्ठ नेताओं, कार्यकर्ताओं व शुभचिन्तकों के साथ बनारस जिला मुख्यालय पर पर्चा दाखिल किया तथा अपनी-अपनी जीत का दावा किया। सभी ने नामांकन पत्र जमा करने के अन्तिम दिन नामांकन किया। सबसे पहले कांग्रेस फिर बीजेपी प्रत्याशी ने पर्चा भरा। कचहरी में समर्थकों के जुलूस के साथ पहुंचे विभिन्न प्रत्याशियों ने नामांकन पत्र दाखिल किया। सभी प्रत्याशियों ने अपनी जीत का दावा करते हुए शहर का विकास करने की बात की। नामांकन को लेकर कचहरी में सुरक्षा के चाक-चौबंद बंदोबस्त किये गये थे। प्रत्याशियों के साथ कुछ खास लोगों को ही अंदर जाने दिया जा रहा था। प्रत्याशियों के साथ समर्थकों को जाने को लेकर पुलिस के साथ कई बार नोकझोंक भी हुई। कचहरी में सबसे पहले कांग्रेस की मेयर पद प्रत्याशी शालिनी यादव ने नामांकन दाखिल किया। इसके बाद बीजेपी प्रत्याशी मृदुला जायसवाल व सपा प्रत्याशी साधना गुप्ता ने पर्चा भरा। सबसे अंत में बसपा प्रत्याशी सुधा चौरसिया ने नामांकन किया। सभी प्रत्याशियों ने एक-दूसरे दल पर विकास विरोधी होने का आरोप लगाते हुए अपनी जीत का दावा किया। नामांकन स्थल के अंदर जाने को लेकर प्रत्याशी व समर्थकों में नोकझोंक होती रही है। पुलिस ने सभी दबाव को दरकिनार करके समर्थकों को नामांकन स्थल के बाहर ही रोक दिया। इसके बाद प्रत्याशी कुछ खास लोगों के साथ जाकर नामांकन कर पाये। सपा, कांग्रेस, बसपा व बीजेपी के वरिष्ठ नेता खुद समर्थकों के साथ मौजूद थे। एक तरफ कचहरी में मेयर पद के प्रत्याशी नामांकन कर रहे थे तो दूसरी तरफ अन्य केन्द्रों पर पार्षद पद के प्रत्याशियों ने भी सैकड़ों की संख्या में नामांकन किया।

पुत्री इंदिरा की नज़र में पिता नेहरु

एल.एस. हरदेनिया

जवाहर लाल नेहरु 20 वीं शताब्दी के महान व्यक्तियों में से एक है। वे उन मौलिक परिवर्तनों के प्रतीक है जो 20 वीं शताब्दी में दुनिया में हुए। जब नेहरु जी नौजवान थे तो इतिहास का ज्ञान पश्चिम तक सीमित था। दुनिया के बाकी हिस्सों में लगभग अंधकार था। उस समय यह समझा जाता था कि एशिया और अफ्रीका, यूरोप और उत्तर अमेरिका के लोगों की खुशहाली के लिए ही अस्तित्व में हैं। नेहरु जी की शिक्षा-दीक्षा ब्रिटेन में हुई थी। उस समय उन्होंने जो पत्र लिखे वे उनकी संवेदनशीलता के जबरदस्त उदाहरण है। उन्हें विज्ञान और अंतर्राष्ट्रीय मामलों में दिलचस्पी तो थी ही परन्तु उन्हें इस बात पर गर्व था कि वे भारत और एशिया के नागरिक है। शनैः-शनैः जिस प्रकार से नेहरु जी का विकास हुआ उसके चलते गरीब और शोषित लोगों के मामलों में उनकी दिलचस्पी बढ़ती गयी। अंततः जवाहर लाल नेहरु एक ऐसे व्यक्ति के रूप में उभरे जो एशिया और अफ्रीका की चेतना के प्रतीक बन गये।

नेहरु जी की मान्यता थी कि साम्राज्यवाद सबसे बड़ा अभिशाप है। उनकी यह भी मान्यता थी कि गरीबी और सभ्यता का सहअस्तित्व संभव नहीं है। वे यह भी मानते थे कि राष्ट्रवाद का आधार इंसान की खुशहाली होना चाहिए। नेहरु नेहरु जी ने अपने जीवन में किसी एक विचार पर अपनी आस्था नहीं रखी। जेल में बिताए लम्बे समय में भी उन्होंने बहुत पढ़ा। पूर्व और पश्चिम के दर्शन और भारत के गौरवशाली अतीत को समझने का जबरदस्त प्रयास किया। यद्यपि उन्हें एक धार्मिक व्यक्ति नहीं कहा जा सकता परंतु उन्हें भारत की संस्कृति और परम्परा से बेहद प्यार था।

वैसे वे एक प्रतिबद्ध मार्क्सवादी नहीं थे परन्तु वे समाजवाद के सिद्धांत से काफी हद तक प्रभावित थे। वर्ष 1927 में वे पहली बार सोवियत संघ गये और वहां उन्होंने जो कुछ देखा उससे वे प्रभावित हुए। इसके साथ उनकी यह भी आस्था थी कि मात्र किसी एक विचार से, किसी एक सिद्धांत से इंसान का विकास नहीं हो सकता। वे समाजवादी तो नहीं थे परंतु वे किसी भी प्रकार की तानाशही प्रवृत्ति के सख्त विरोधी थे। वे यह भी मानते थे कि वैचारिक स्वतंत्रता के साथ ही आर्थिक और सामाजिक पिछड़ेपन को दूर किया जा सकता है।

नेहरु जी की मान्यता थी कि हमारा देश दुनिया के घटनाक्रमों से पृथक नहीं रह सकता और ऐसा करते हुए वह अपने हितों की बलि भी नहीं दे सकता। उनकी विश्वदृष्टि बहुत विस्तृत थी और इस कारण उन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर न सिर्फ मान्यता मिली बल्कि उन्हें अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर बहुत ध्यान से सुना गया। जवाहर लाल नेहरु के विकास की कहानी सच पूछा जाये तो हमारे देश और विश्व के आधुनिक विकास की कहानी है।

नेहरु जी एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने तीसरी दुनिया की ताकत को पहचाना और उसे विश्व स्तर पर मान्यता दिलवाई। इस लिहाज से उनका व्यक्तित्व प्रधानमंत्री के पद से भी बड़ा था। नेहरु जी व्यक्तित्व का प्रभाव अकेले विद्वानों तक सीमित नहीं था। उनका प्रभाव विश्वव्यापी था। उनके भाषण इतिहास और आधुनिकता के दर्पण होते थे। मेरे पिता कहा करते थे कि यदि महात्मा गांधी के साथ आपको न्याय करना है तो आपको स्वयं उतना ही महान होना पड़ेगा जितने महान महात्मा गांधी थे। नेहरु जी का दृष्टिकोण इतना विशाल था कि हमारे लाख प्रयासों के बावजूद हम उनके व्यक्तित्व को पूरी तरह से समझ नहीं पायेंगे। नेहरु जी के जीवन काल में ही उनके बारे में अनेक भ्रामक बातें फैलाई गई। ऐसी बातें न सिर्फ हमारे

14 नवंबर को पैदा हुए बच्चों के चाचा नेहरु

देश के पहले प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू को बच्चे बहुत पंसद थे, यही वजह है कि उनके जन्म दिन 14 नवंबर को बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। स्कूलों में बाल दिवस पर अनेक आयोजन की धूम सी रहती है, सप्ताह भर पहले से बाल दिवस की तैयारियां चलती है। उनका जन्म 14 नवम्बर 1889 को इलाहाबाद उत्तर प्रदेश में हुआ था। घर पर ही शुरुआती तालीम नीजी शिक्षकों से प्राप्त करने के बाद महज़ 15 साल की उम्र में वे इंग्लैड चले गये और हैरो में दो साल रहने के बाद उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में एडमीशन लिया जहां से उन्होंने प्राकृतिक विज्ञान में स्नातक की डिग्री हासिल की। साइंस का स्टूडेंट होने के बावजूद देश की वर्तमान स्थिति को देखते हुए वो 1912 में भारत लौटे और राजनीति से जुड़ गए। यहां तक की छात्र जीवन के दौरान भी वे विदेशी हुकूमत के अधीन देशों के स्वतंत्रता संघर्ष में रुचि रखते थे। कई बार जेल गये, अंग्रेज़ी हुकुमत का जुल्म सहा, लाठिया खायी मगर जब देश आज़ाद हुआ तो वे ही देश के पहले प्रधानमंत्री बने। बच्चे उन्हें प्यार से चाचा नेहरु कहते थे।

देश में बल्कि दूसरे देशों में भी फैलाई गयी। परन्तु इन भ्रामक बातों से वे पूरी तरह से अप्रभावित रहे। इस समय इस तरह की दो भ्रामक बातें मुझे याद आ रही है। उनके बारे में कहा जाता थाकि वे एक वट वृक्ष के समान है जिसके नीचे कुछ नहीं उगता है। इससे ज्यादा भ्रामक बात और क्या हो सकती है। मेरा अनुभव और इसी तरह का अनुभव अनेक लोगों का भी है कि उन्होंने अपने अनेक साथियों को विकसित होने का मौका दिया। ऐसे साथियों को भी विकसित करने का मौका दिया जो उनसे वैचारिक रूप से असहमत थे। दूसरा भ्रम उनके गांधी टोपी पहनने के बारे में था। इस तरह का भ्रम फैलाने वाले लोग यह कहते थे कि नेहरु जी गांधी टोपी इसलिए पहनते हैं क्यों कि उन्हें लगता है कि इससे वे ज्यादा सुंदर दिखते हैं। मुझे याद है कि जब उन पर डाक टिकट जारी करने का निर्णय लिया गया तो अनेक फोटोग्राफरों ने यह राय प्रकट किया कि अगर नेहरु जी टोपी हटा दे तो उनके महान मस्तिष्क का सौंदर्य प्रकट होगा। क्या हम इस बात से इंकार कर सकते हैं कि हमारे देश में अपना सिर ढंकने की परम्परा है और इसी परम्परा ने भारत के आज़ादी के आंदोलन को प्रभावित किया था। गांधी टोपी भारत की आज़ादी का प्रतीक बन गयी थी। वह यथार्थ में साम्राज्यवाद के विरुद्ध एक जीते जागते विद्रोह का प्रतीक मानी जाती थी। ये दोनों उदाहरण मैने इसलिए दिये क्यों कि कभी-कभी कुछ इस तरह की भ्रामक बातें फैलाई जाती है और ये लोगों के मनो-मस्तिष्क में घर कर जाती है। उन पर अनेक किताबे लिखी गयी। मैंने उनसें से कुछ को ही पढ़ा है। परन्तु मेरी मान्यता यह है कि वे स्वयं की आत्मकथा के सबसे बड़े लेखक थे। यह बात सिर्फ मेरी आत्मकथा और भारत एक खोज किताबों तक सीमित नहीं है परंतु यह उनके अनेक लेखों और भाषणों से स्पष्ट होता है कि वे स्वयं अपनी आत्मकथा के सबसे प्रभावशाली लेखक थे। इसी दृष्टि से यह तय किया गया था कि उनके लेखों और भाषणोंका एक संग्रह प्रकाशित किया जाये। उनकी तीन किताबें बहुत प्रसिद्ध है और ये तीनों किताबें उनके चिंतन को हमारे सामने वृहद पैमाने पर प्रकट करती है। इन सबको देश और दुनिया के सामने रखना आवश्यक है।

विश्व इतिहास की झलक किताब तो मेरे लिए ही लिखी गई थी। परन्तु मैं मानती हूं कि मैंने स्वयं को भारत एक खोज के ज्यादा नज़दीक पाया, यह इसलिए क्यों कि नेहरु जी ने उसका प्रूफ पढ़ने की जिम्मेदारी मुझे सौंपी थी। भारत एक खोजकिताब 1944 में तैयार हो गई परन्तु उसके बाद बीस वर्षो का नेहरु जी का जीवन उनके प्रकार की गतिविधियों से भरपूर रहा। इस दौरान उन्होंने जो पत्र लिखे, जो भाषण दिये, जो दस्तावेज तैयार किये, वे सभी उपलब्ध है, क्यों कि नेहरु जी ने उन्हें स्वयं संभाल कर रखा था। वे मुख्यमंत्रियों को हर पखवाड़े चिट्ठियां लिखते थे। ये पत्र राज्यपालों को भी भेजे जाते थे। ये पत्र ज्ञान के गोदाम हैं। मुझे बताया गया है कि राज्यपालों और मुख्यमंत्रियों को लिखे गये इन पत्रों की कुल संख्या 6 हज़ार से ज्यादा है। इससे ही आप सोच सकते हैं कि उनका लेखन कितना महत्वपूर्ण है। वैसे यह स्वीकार करना उचित होगा कि उनके भाषणों में वे उन्हीं बातों को बार-बार दोहराते थे। यह इसलिए क्यों कि वे बुनियादी रूप से एक शिक्षक भी थे। वे अपने भाषणों के माध्यम से आम लोगों तक पहुंचते थे और उनसे ऐसी भाषा में बात करते थे जिससे वे राष्ट्र और दुनिया की समस्याओं को ठीक से समझ सकें। वे जब लिखते थे तो अपनी लिखी हुई चीज़ों को बार-बार चैक करते थे और उनके आलेखों में अंतिम रूप से तैयार होने तक अनेक परिवर्तन हो जाते थे। नेहरु जी के भाषणों, लेखोंऔर पत्रों का संग्रह उनका सबसे बड़ा स्मारक होगा जो आने वाली सदियों तक इंसान को नये रास्ते दिखाता रहेगा।

ठुमरी साम्राज्ञी गिरजा देवी का जाना...

प्रख्यात शास्त्रीय गायिका, ठुमरी साम्राज्ञी पद्मविभूषण गिरिजा देवी का सुर सदा के लिए अब शांत हो गया है। कोलकाता में पिछले दिनों उनका स्वर्गवास हो गया। पार्थिव शरीर कोलकाता से काशी लाया गया। काशी पहुंचने पर दोपहर बड़ी संख्या में लोगों ने पहले उन्हें बाबतपुर एयरपोर्ट पर अपनी श्रद्धांजेलि दी। फिर यहां से पार्थिव शरीर लेकर वाहनों का काफिला उनके नाटी इमली आवास की ओर रवाना हुआ। पार्थिव शरीर 2 बजकर 7 मिनट पर संजय गांधीनगर, काटन मिल स्थित आवास लाया गया। गिरिजा देवी की अंतिम यात्रा भी उनके सुरों की तरह विशिष्ट नज़र आयी। खूबसूरत बनारसी साड़ी में लिपटी और सजी गिरिजा देवी का पार्थिव शरीर काशी के महाश्मशान मणिकर्णिका घाट पहुंची। रास्ते भर उन्हें लोगों ने पुष्पांजलि देकर उन्हें अंतिम बिदाई दी। मणिकर्णिका घाट की चरण पादुका पर पूरे राजकीय सम्मान के साथ उन्हें अग्नि के सुपुर्द किया गया। इस मौके पर संगीत प्रेमियों, कलाकारों के साथ ही विभिन्न क्षेत्रों के लोग उनकी शव यात्रा में उमड़ें। प्रदेश सरकार के राज्य मंत्री नीलकंठ तिवारी ने शासन की तरफ से उनके पार्थिव शरीर पर 'रिथ' चढ़ाया।

पंचतत्व में विलीन हुई गिरिजा देवी:
प्रख्यात शास्त्रीय संगीत गायिका, बनारस घराने की शान पद्म विभूषण गिरिजा देवी पूरे राजकीय सम्मान के साथ पंचतत्व में विलीन हो गयी। इससे पूर्व शवयात्रा निकली जो काशी की गलियों से होते हुए शमशान घाट पहुंची जिसमें उनके कद्रदान उमड़ पड़े। उनकी शवयात्रा में जब तक सूरज चांद रहेगा, अप्पा जी का नाम रहेगा...व हर हर महादेव ...की गूंज फिज़ा में बुलंद हो रहे थे। शाम में गिरिजा देवी का पार्थिव शरीर मोक्ष के घाट मणिकर्णिका की चरण पादुका पर रखा गया। जहा मुखाग्नि देने से पूर्व उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। महामंडलेश्वर संतोष दास सतुआ बाबा ने रामनामी ओढ़ा कर श्रद्धांजलि अर्पित किया। इस मौके पर जिलाधिकारी योगेश्वर राम मिश्र, मण्डलायुक्त नितिनि रमेश गोकर्ण और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक आरके भारद्वाज ने पुष्प अर्पित कर स्वर कोकिला को श्रद्धांजलि अर्पित की। मुखाग्नि की रस्म एकलौते नाती अरिन्दम दत्ता ने अदा की। घाट पर गिरजा देवी की इकलौती पुत्री डॉ सुधा दत्ता और उनकी शिष्याएं भी पहुंची हुई थी।
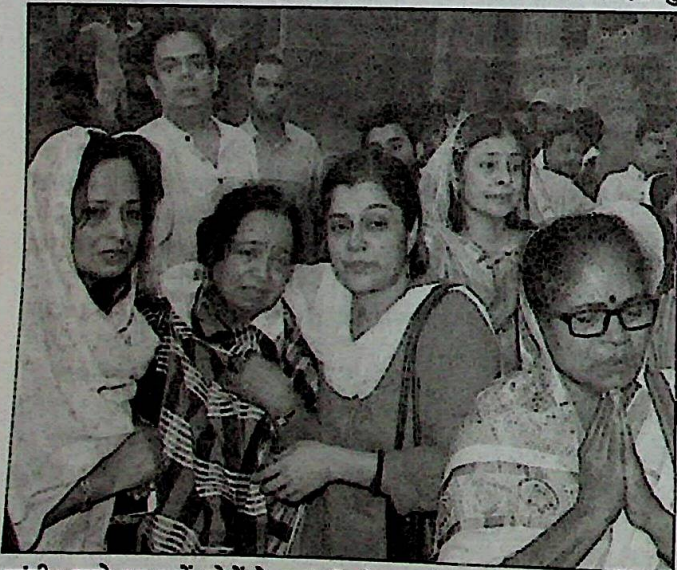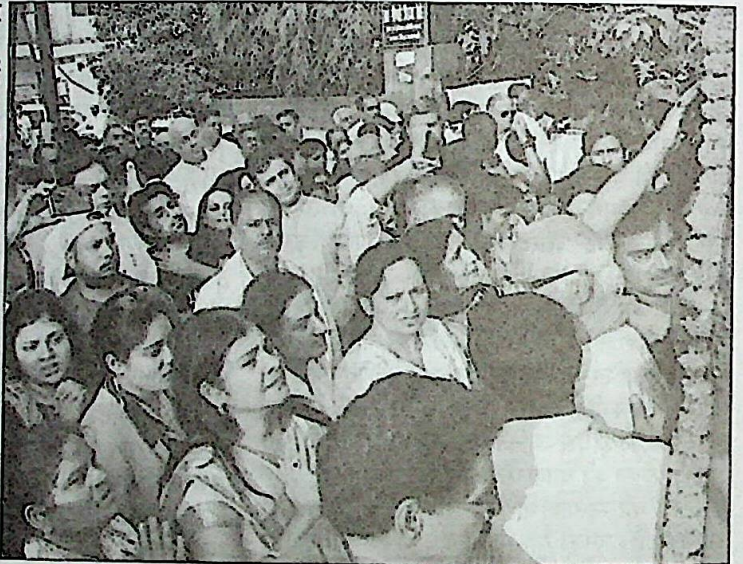
श्रद्धांजलि देने उमड़ा आवास पर रेला:
जैसे ही एम्बुलेंस से स्वर साम्राज्ञी, पद्मविभूषण गिरिजा देवी का पार्थिव शरीर एयरपोर्ट से काटन मिल स्थित संजय गांधी नगर पहुंचा। एम्बुलेंस और वरिष्ठ अधिकारियों के हूटर सुनते ही उनके परिजनों ने रौना धोना शुरू कर दिया। इससे घर के भीतर से बाहर तक पूरा माहौल ग़मगीन हो गया। पुष्प अर्पित कर तमाम लोगों ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी। उनका पार्थिव शरीर घर में लोगों को दर्शन कराने के बाद संजय गाँधी नगर पार्क में अंतिम दर्शन के लिए रखा गया जहां पर मंडलायुक्त से लेकर जिलाधिकारी, आईजी वाराणसी रेंज, श्री संकट मोचन मंदिर के महंत श्री विश्म्भरनाथ मिश्र, पूर्व मंत्री सुरेन्द्र पटेल, सपा के पूर्व सांसद राम किशुन यादव, शमीम अंसारी, सतीश चौबे, डा. जितेन्द्र नाथ मिश्र, पं. विकास महाराज, वाराणस मोटर्स पार्टस एसोसिएशन के विनय कुमार गुप्ता, पूर्व मंत्री मनोज राय धुपचण्डी, नेहरु

पांडेय, गंगा सहाय पांडेय, डा. रामअवतार पांडेय, डा. एसएस गांगुली, विनोद अग्निहोत्री, विशाल कृष्णा, कृष्णा सिंह, पूर्व विधायक अजय राय, राकेश त्रिवेदी, अशोक पांडेय, यतीन्द्र नाथ मिश्र, अजय कृष्ण अग्रवाल, मुदित अग्रवाल, संजय राय व राजेश आजाद आदि सैकड़ों लोगों ने पुष्पांजलि के ज़रिये पार्क के डायस पर रखे पार्थिव शरीर पर पुष्प अर्पित कर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा अंतिम संस्कार यात्रा में शामिल हुए।

संजय नगर पार्क में लगे अप्पा जी की प्रतिमा
पद्म विभूषण गिरिजा देवी की प्रतिमा संजय गांधी नगर स्थित स्व. गिरिजा देवी के घर के सामने पार्क में स्थापित करने की जन कल्याण परिषद ने मांग की है। जन कल्याण परिषद के प्रदेश अध्यक्ष. गंगा सहाय पांडेय ने शोक सभा में केन्द्र सरकार से उन्हें भारत रत्न भी देने की मांग की। शोक सभा में डा. केपी अग्रवाल, राजेश कुमार सिंह, आलोक कृष्ण अग्रवाल, नेहरु पांडेय, लल्ला पांडेय, राज कुमार यादव पप्पू आदि मौजूद थे।

अधूरी रह गयी हसरत

संगीत की नई पौध को सींचने की थी तमन्ना

प्रख्यात शास्त्रीय गायिका पद्मविभूषण गिरिजा देवी संगीत की नई पौध तैयार करने के लिए संगीतालय खोलना चाहती थी, मगर उनकी यह हसरत कुदरत के खेल के सामने पूरी नहीं हो सकी। यह बातें उन्होंने पिछले दिनों मशहूर शास्त्री संगीत गायिका **डा. रेवती साकलकर** से कही थी। डा. साकलकर ने उनके निधन पर अफसोस जताते हुए कहा कि 8 अक्टूबर को उनसे मेरी आखिरी मुलाकात हुई थी, उसी के बाद वो कोलकाता गयी, उन्होंने मुझसे कहा कि मैं अब थक गयी हूं, स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता, मैं अब नई पीढ़ी के लिए कुछ करना चाहती हूं। उन्हें ठुमरी की बारीकियां सिखाना चाहती हूं।

इतना कहते हुए वो फफक पड़ी, बोली गिरजादेवी का जाना जैसे मां का जाना हो, बहुत ही प्यार से वो मिलती थी, वो गुरु भी थी और मां भी, उनसे मिलकर अपनत्व मिलता था, डा. साकलकर ने कहा कि 88 वर्ष की आयु में भी उनकी आवाज़ में खनक थी, उसमें अवस्था का कहीं से कोई असर नहीं था। चिर युवा थी उनकी आवाज़, मगर अब वो मौन हो गयीं। उनका जाना हम सबको बेहद धक्का दे गया।

बनारस के सकलडीहा (वर्तमान में चंदौली जिला अंतर्गत) गांव में पारंपरिक हिंदू परिवार में जन्मी गिरजादेवी के निधन पर बनारस संगीत घराने के **पं. माता प्रसाद मिश्र** ने कहा कि उनका सम्पूर्ण जीवन संगीतमय था, वास्तव में अब उनका स्थान भर पाना बेहद मुश्किल है, वो हमेशा संगीत और केवल संगीत के विषय में सोचती थी। नटराज संगीत अकादमी की निदेशक डा. संगीता सिन्हा दिल्ली में बिरजू महाराज के कैम्प में गयी हुई थी, **बिरजू महाराज** और संगीता सिन्हा दोनों ने गिरजा देवी के निधन को संगीत का एक स्तम्भ टूटने जैसा बताया और इसे एक अपूरणीय क्षति बताया। संगीता सिन्हा ने कहा कि दुर्भाग्य है कि मैं काशी में नहीं हूं। उन्होंने अपना पूरा जीवन संगीत के रियाज में ही बीताया। शायद ही कोई ऐसी जगह हो जहां उन्होंने ठुमरी नहीं गायी। उनका जाना बनारस संगीत घराने के लिए अपूरणीय क्षति है।
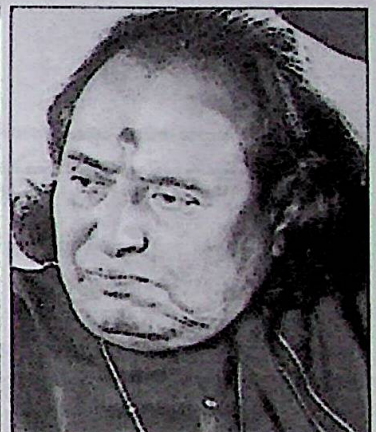
क्या बोले पं. छन्नू लाल मिश्र:

गिरिजा देवी के निधन से भारतीय शास्त्रीय संगीत जगत को बहुत बड़ी क्षति हुई है। ठुमरी गायक पद्मभूषण पं. छन्नूलाल मिश्र ने कहा कि गिरिजा देवी के सुरों में दमकशी और बेजोड़ लालित्य का समागम था। वह बनारस घराने की प्रतिनिधि गायिका थीं। सुरों का ऐसा साधक बार-बार नहीं पैदा होता है। उनकी जगह कोई नहीं भर पाएगा। गिरिजा देवी के निधन से भारतीय शास्त्रीय संगीत जगत को बहुत बड़ी क्षति हुई है।

पं. राजेश्वर आचार्य बोले:

पं. राजेश्वर आचार्य ने कहा कि बनारस शास्त्रीय संगीत परंपरा की संवाहिका थी पद्मविभूषण गिरिजी देवी। उन्होंने गुरु-शिष्य परंपरा को हमेशा जीवंत रखा। शास्त्र से लोक तक की संगीत परंपरा उनके पास थी। अपने शिष्यों को गायन की शिक्षा देकर उन्होंने अपनी विरासत को संवारने का प्रयास किया है। पिछले दिनों एक कार्यक्रम में उनसे मुलाकात हुई तो उन्होंने अपने सधे अंदाज में बातचीत की और कहा था कि अब तबियत ठीक नही रहती। बनारस आना भी कम होता है।

पं. गणेश प्रसाद मिश्र बोले:

पं. महादेव प्रसाद संगीत संस्थान के अगुवा ठुमरी गायक पं. गणेश प्रसाद मिश्र ने कहा कि पिता पं. महादेव प्रसाद जी के समय से ही उनकी ठुमरी गायिकी और उनके संगीत प्रेम को मैंने देखा। वो मुझे बहुत ज्यादा मानती थी, कई चीज़े उन्होंने ही मुझे बताया। कभी भी जब मैं उनसे मिलता था तो वो बहुत ही सहजता से ठेठ बनारसीपन के साथ मिलती थी। वो बताते हैं कि वह माता-पिता व दो बड़ी वहनों के साथ रहती थीं। वे जब दो वर्ष की थीं तभी उनके माता-पिता परिवार के साथ गांव से काशी आ गये। गिरजादेवी का निधन संगीत घराना ही नहीं बल्कि समूचे देश की क्षति है, इसे वयां कर पाना मुश्किल है।

भोजपुरी गायिका सुरभि सिंह ने मुम्बई से फोन पर कहा कि गिरजादेवी का जाना समूचे संगीत प्रेमियों के लिए बेहद अफसोस का सबब है। सुरभि ने कहा कि कई बार मुम्बई और बनारस समेत कई शहरों में उनका सानिध्य मिला मगर इतनी जल्दी वो हम लोगों के बीच से चली जायेंगी यह कभी नहीं सोचा था। **पं. पूरन महाराज** ने कहा कि गिरजादेवी का जाना बेहद दुखद है। संयोग ही है कि मैं बनारस में नहीं हूं। उस्ताद बिस्मिल्ला खां, पिता किशन महाराज, सितारादेवी के बाद अब गिरजादेवी के जाने से संगीत के घराने में सन्नाटा सा छा गया है। इसकी पूर्ति होना असंभव है। ईश्वर गिरजादेवी की आत्मा को शांति प्रदान करें।

नीतीश कुमार आरक्षण विरोधीः लालू प्रसाद

पटना (बिहार)। जब से राष्ट्रीय जनता दल के प्रमुख लालू प्रसाद यादव और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के रास्ते अलग-अलग हुए हैं, तब से लालू प्रसाद नीतीश कुमार को आड़े हाथों लेने का कोई भी मौका गवाना नहीं चाहते। जैसे ही कोई मौका मिलता है, वो नीतीश कुमार पर हमला बोल कर बिहार की सियासत में सनसनी फैला देते हैं। इधर लालू प्रसाद यादव ने प्रदेश में सत्तारूढ़ जदयू के दो नेताओं द्वारा दलितों और महादलितों की ओर प्रति पार्टी के रवैये पर असंतोष जताये जाने का समर्थन करते हुए आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार आरक्षण विरोधी रहे हैं।

पटना में पत्रकारों को संबोधित करते हुए पिछले दिनों राजद सुप्रीमो ने कहा, 'उदय नारायण चौधरी और श्याम रजक जो कुछ (दलितों के आरक्षण को लेकर) कह रहे है, वह सही है। दलितों को मिले आरक्षण पर कई ओर से हमला हो रहा है। मुझे आश्चर्य है कि उनकी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नीतीश कुमार इस मुद्दे पर चुप है। हम जानते है कि वह हमेशा आरक्षण विरोधी रहे है।' उल्लेखनीय है कि पिछले दिनो जदयू के इन दोनों नेताओं ने वंचित वर्ग मोर्चा की ओर से आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए पदोन्नति में आरक्षण को खत्म किए जाने तथा क्रिमी लेयर को शामिल किए जाने के प्रस्ताव की निंदा की थी। कहा सरकार के पास इसको लेकर राजनीतिक इच्छा शक्ति का अभाव होने का आरोप लगाया था। हालांकि बाद में श्याम रजक ने स्पष्ट किया था कि वह इसको लेकर बिहार की नीतीश सरकार की मंशा पर सवाल नहीं उठा रहे है। लेकिन जदयू के प्रदेश अध्यक्ष वशिष्ठ नारायण सिंह ने कटाक्ष करते हुए कहा कि जब कोई व्यक्ति किसी पद पर नहीं होता है, तब वह चिंता जताना शुरू कर देता है। ऐसा ही इस वक्त कर रहे हैं लालू प्रसाद यादव।

सजायाफ्ता के चुनाव लड़ने पर प्रतिबंध की वकालत

नई दिल्ली। देश की सबसे बड़ी अदालत में चुनाव आयोग ने सजायाफ्ता सांसदों-विधायकों के चुनाव लड़ने पर आजीवन प्रतिबंध की वकालत की है। चुनाव आयोग ने पिछले दिनों एक याचिका पर सुनवाई के दौरान अपने जवाब में कहा कि सजायाफ्ता सांसदों और विधायकों के चुनाव लड़ने पर आजीवन प्रतिबंध लगना चाहिए। सर्वोच्च न्यायालय ने भी मामले की गंभीरता को देखते हुए स्पेशल कोर्ट में इन केसों की सुनवाई की बात की। सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने कहा, दागी नेताओं के केस की सुनवाई के लिए स्पेशल कोर्ट बनने चाहिए और इसमें कितना वक्त और फंड लगेगा यह 6 हफ्तों में बताया जाये।

पहले केंद्र सरकार ने कहा, हम स्पेशल कोर्ट के लिए तैयार है पर यह राज्यों का मामला है। इस पर कोर्ट ने कहा कि आप सेंट्रल स्कीम के तहत स्पेशल कोर्ट बनाने के लिए फंड बताये कि कितना लगेगा? मामले की सुनवाई करते हुए कोर्ट ने याचिककर्ता को फटकार भी लगाई। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि स्पेशल कोर्ट में स्पीडी ट्रायल होगा और केंद्र से कहा कि आप बताएं इसमें खर्च कितना होगा। कोर्ट ने कहा, इसके बाद हम देखेंगे कि जजों की नियुक्ति और इन्फास्ट्रक्चर कैसे होगी। कोर्ट ने याचिकाकर्ता से पूछा कि बिना डेटा के आपने याचिका कैसे दाखिल कर दी? क्या आप हमसे चाहते है कि हम केवल कागजी फैसला दे दें और कह दें कि भारत में राजनीति का अपराधीकरण हो चुका है।

गौरतलब है की सुप्रीम कोर्ट में इस याचिका पर मंगलवार को भी बहस हुई थी। सुप्रीम कोर्ट ने आपराधिक मामलों में नेताओं को दोषी ठहराने की जानकारी मांगी थी। सर्वोच्च न्यायालय ने यह भी पूछा था कि क्या इनके खिलाफ मुकदमों की सुनवाई एक साल के भीतर पूरा करने के उसके निर्देशों पर प्रभावी तरीके से अमल हो रहा है? अगर सजायेआफ्ता लोगों के चुनाव लड़ने पर रोक लगती है तो ये एक बड़ा कदम होगा।

नोटबंदी, जीएसटी से कारोबार हुआ चौपटः राहुल

जम्बुसर (गुजरात)। कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी ने विश्व बैंक की उस रिपोर्ट को खारिज कर दिया जिसमें बताया गया था कि भारत में 'कारोबार में आसानी' का स्तर सुधरा है। उन्होंने वित्त मंत्री अरुण जेटली से कहा कि वास्तविकता को समझने के लिए वह छोटे कारोबारियों के साथ मुलाकात
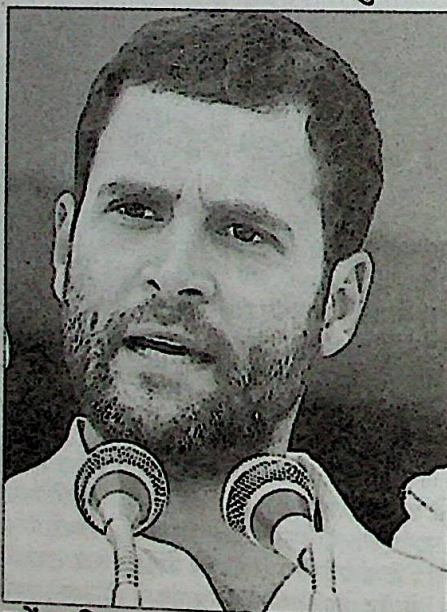
करें। दक्षिण गुजरात के तीन दिवसीय दौरे पर पहुंचे राहुल ने काले धन के मुद्दे पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधते हुए कहा कि नोटबंदी ने देश की अर्थव्यवस्था को तबाह करके रख दिया। केंद्र और भाजपा की नीत राज्य सरकार पर हमला करते हुए राहुल ने अपनी जनसभा में जीएसटी, जातिगत राजनीति और कॉर्पोरेट का पक्ष लेने जैसे विस्तृत मुद्दों पर अपनी बात रखी।

उन्होने विश्व बैंक की रिपोर्ट को जारी किए जाने के एक दिन बाद वित्त मंत्री अरुण जेटली पर निशाना साधते हुए राहुल गांधी ने कहा, जेटलीजी ने कहा था कि कुछ विदेशी संगठनों ने यह प्रमाणित किया है कि भारत कारोबार सुगमता में काफी सुधार कर रहा है। राहुल ने कहा कि वित्त मंत्री को छोटे एवं मझोले कारोबारियों से पांच से 10 मिनट के लिये मुलाकात करना चाहिए और यह पूछना चाहिए क्या हकीकत में कारोबार सुगमता में सुधार हुआ है या नहीं? राहुल गांधी ने कहा कि'समूचा देश चीख चीखकर यही कहेगा कि कारोबार सुगमता नदारत है। आपने इसे बर्बाद किया है। आपकी नोटबंदी और जीएसटी ने इसे बर्बाद कर दिया है। आम जनता की कमर टूट चुकी है, वो साल भर बाद भी नोटबंदी के कहर से निजात नहीं पा सका है। वहीं जीएसटी ने तो और लोगों का बेढ़ा गर्क कर दिया है। इससे पहले दिन में राहुल ने गालिब की शायरी का सहारा लेते हुए ट्वीट कर कहा था कि जेटली खुशफहमी में खुद को बहला रहे है। उन्होंने ट्वीट किया,''सबको मालूम है 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' की हकीकत, लेकिन खुद को खुश रखने के लिए 'डॉ. जेटली' ये ख्याल अच्छा है।''

नागा बाबा के परिनिर्वाण दिवस पर उमड़े भक्तजन

काशी की संत परम्परा के शीर्ष संत प्रातः स्मरणीय परमहंस स्वामी वीतरागानन्द सरस्वती महाराज की शिष्य परम्परा के अग्रणी भगवान श्री नागा बाबा का 48 वां परिनिर्वाण दिवस शरद पूर्णिमा, को श्रद्धापूर्वक मनाया गया। नागा बाबा का नाम आज जग विख्यात संतों में शुमार है। इस दौरान गाजीपुर जनपद के करण्डा क्षेत्र के आरी पहाड़पुर, सीतापट्टी में स्थित उनकी समाधि स्थली एक विराट जनमानस की श्रद्धा का केन्द्र बनी हुई थी। बाबा की आध्यात्म परम्परा के प्रथम बाल सन्यासी एवं उनकी आत्म साधना की सद्गुरु परम्परा के प्रतिष्ठाता प्रज्ञा पुरुष ॐ श्री आनन्द प्रभु द्वारा स्थापित स्वबोध आश्रम में भी भक्तों का रेला लगा हुआ था। देश ही नहीं विदेशों से भी बाबा में आस्था रखने वाले आयोजन में पहुंचे हुए थे।

स्वबोध आश्रु की प्रेरणानुसार बाबा की इस निर्वाण तिथि पर देश देशांतर में भी उनकी श्रद्धांजलि स्वरूप यह स्मरण निर्वाण पर्व के रूप में मनाया गया। इस दिन बाबा की समाधि स्थली पर त्रिदिवसीय मेले का आयोजन सम्पन्न हुआ। मेले में सहस्त्रों की संख्या में श्रद्धालु भक्तजनों की उपस्थिति दर्ज की गयी। स्वबोध आश्रम में भक्तजनों को सम्बोधित करते हुए प्रज्ञा पुरुष ॐ श्री आनन्द प्रभु ने कहा कि जैसे बाबा के जीवन काल में दुखी जन बाबा का दर्शन प्राप्त कर अपनी मनोकामनाओं की सिद्धि प्राप्त करने आते थे, वैसे ही अब भी प्रति दिन सबेरे से शाम तक दर्शनार्थियों की भीड़ वहां लगी रहती है। यद्यपि बाबा न तो व्यवहार की रीति से किसी से कोई बातचीत ही करते थे, न ही उनकी अटपटी गूढ़ बोली किसी को समझ में आती थी,

22 अक्टूबर को ली थी महासमाधि

शरदपूर्णिमा की रात्रि सन् 1972 ई., 22 अक्टूबर रविवार, रमजान की 13 तारीख, विक्रम संवत 2029 की क्वार पूर्णिमा 9 बजकर 36 मिनट पर बाबा ने सीतापट्टी गांव के उस दालान में जहां वे गत तीसों बरस से निवास कर रहे थे, अपनी जीवनलीला पूर्णकर महासमाधि की प्राप्ति की थी। यद्यपि उनका सांसारिक दैहिक परिचय आदि से अंत तक अज्ञात रहा है, किन्तु उनके संत जीवन का पावन स्मरण बड़ा ही अद्भूत और जीव को भवताप से त्राण देने वाला है।

फिर भी उनका दर्शन समस्त मनोरथों की सिद्धि करने वाला था। और यही कारण है कि जो भी सुनता वह बाबा की चौखट पर दौड़ा चला आता।

आज भी उनकी महिमा वैसे ही जीवंत है। यह एक बड़ी सच्चाई है कि सब कुछ होने के बाद भी मानव दुखी है। वह राजा हो या रंक, सभी किसी न किसी अभाव से पीड़ित है। और इन अभावों की पूर्ति के लिए वे संतों की शरण में भी जाते हैं, किंतु देखा जाय तो संत कृपा से यादि उनका वह अभाव पूर्ण भी हो जाये तो भी वे अंतिम रूप से दुख मुक्त नहीं होते, कोई न कोई दुख फिर से उन्हें घेर लेता है। इसलिए तत्वदर्शी संतों ने आत्म ज्ञान प्रदान की परम्परा प्रारम्भ की। जो आज भी धरती पर गुरु शिष्य परम्परा के रूप में विद्यमान् हैं।

बाबा इसी ज्ञान परम्परा के आत्म साक्षात्कारी संत थे। इस मौके पर स्वबोध आश्रम न्यास प्रवंधक आचार्य डा. सरोजनी मां व कार्यकारिणी अध्यक्ष श्री राधे मोहन एडवोकेट, भू.पू. अध्यक्ष बार एसोसिएशन, वाराणसी ने भक्तों का स्वागत किया।

आज़ाद हिन्द के पहले शिक्षामंत्री अबुल कलाम

इब्तेसाम अख्तर

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद का असली नाम अबुल कलाम ग़ुलाम मेहियुद्दीन था। मौलाना आज़ाद कई भाषाओं जैसे अरबी, इंग्लिश, उर्दू, हिंदी, पर्शियन और बंगाली के जानकार थे। मौलाना किसी भी मुद्दे पर बहस करने में माहिर माने जाते थे। देश आज़ाद होने पर वे पहले शिक्षा मंत्री बने। राष्ट्र के प्रति उनके अमूल्य योगदान के लिए मरणोपरांत 1992 में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से उन्हें सम्मानित किया गया। 11 नवंबर 1888 को मक्का में पैदा हुए मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के परदादा बाबर के ज़माने में हेरात (अफ़ग़ानिस्तान का एक शहर) से भारत आये थे। पढ़े लिखे नेक खानदान में जन्म लेने की वजह से अबुल कलाम की भी बचपन से दीनी और दुनियावी तालीम में रूचि थी। उनकी माता अरब देश के शेख मोहम्मद ज़हर वत्री की पुत्री थी और पिता मौलाना खैरुद्दीन अफगान मूल के एक बंगाली मुसलमान थे। खैरुद्दीन ने सिपाही विद्रोह के दौरान भारत छोड़ दिया और मक्का जाकर बस गए। 1890 में वह अपने परिवार के साथ कलकत्ता वापस आ गए। मौलाना आज़ाद के वालिद ही उनके शुरूआती उस्ताद और शिक्षक थे पर बाद में उन्हें मशहूर शिक्षकों से तालीम मिली जो उन्हें घर पर ही तालीम देते थे। उन्होंने कई लेख लिखे और पाक कुरान का अनुवाद भी किया। उनकी विद्वता ने उन्हें तत्कालीन यानी परम्पराओं के अनुसरण का त्याग करना और नवीनतम सिद्धांतो को अपनाने का निर्देश दिया। उन्होंने जमालुद्दीन अफगानी और अलीगढ़ के इस्लामी सिद्धांतो और सर सैय्यद अहमद खान के विचारो में अपनी रूचि बढ़ाई। विदेश से लौटने पर आज़ाद ने बंगाल के दो प्रमुख क्रांतिकारियों अरविन्द घोष और श्री श्याम सुन्दर चक्रवर्ती से मुलाकात की और ब्रिटिश शासन के खिलाफ क्रांतिकारी आंदोलन में शामिल हो गए। आज़ाद ने क्रांतिकारी गतिविधियों को बंगाल और बिहार तक ही सीमित पाया। दो सालों के अंदर मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने पूरे उत्तर भारत और मुम्बई में गुप्त क्रांतिकारी केन्द्रो की संरचना की। 1912 में मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने देशभक्ति की भावना को बढ़ाने के लिए 'अल हिलाल' नामक एक साप्ताहिक उर्दू पत्रिका प्रारम्भ की। अल हिलाल ने दो समुदायों के बीच हुए मनमुटाव के बाद हिन्दू मुस्लिम एकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अल हिलाल गरम दल के विचारों को हवा देने का क्रांतिकारी मुखपत्र बन गया। 1914 में सरकार ने अल हिलाल को अलगाववादी विचारों को फ़ैलाने के कारण प्रतिबंधित कर दिया। मौलाना आज़ाद ने तब हिन्दू-मुस्लिम एकता पर आधारित भारतीय राष्ट्रवाद और क्रांतिकारी विचारों के प्रचार के उसी लक्ष्य के साथ एक और साप्ताहिक पत्रिका 'अल बलाघ' शुरू की। 1916 में सरकार ने इस पत्रिका पर भी प्रतिबंध लगा दिया और मौलाना अबुल कलाम आज़ाद को कलकत्ता से निष्कासित कर दिया और रांची में नजरबन्द कर दिया गया, वहां से उन्हें प्रथम विश्व युद्ध के बाद रिहा कर दिया गया। मौलाना आज़ाद ने गांधी जी द्वारा शुरू किये गए असहयोग आंदोलन का समर्थन किया और 1920 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में प्रवेश किया। 1923 में उन्हें दिल्ली में कांग्रेस के एक विशेष सत्र के लिए अध्यक्ष चुना गया। गांधी जी के नमक कानून के उल्लंघन के लिए 1930 में अंग्रेजों ने उन्हें फिर गिरफ्तार कर लिया। उन्हें डेढ साल के लिए मेरठ जेल में रखा गया। मौलाना आज़ाद 1940 में रामगढ अधिवेशन में कांग्रेस के अध्यक्ष बने और 1946 तक उसी पद पर बने रहे। वह विभाजन के कट्टर विरोधी थे और उनका मानना था की सभी प्रांतो को उनके खुद केसविधान पर एकसार्वजनिकसुरक्षा और अर्थव्यवस्था के साथ स्वतंत्र कर देना चाहिए। विभाजन ने उन्हें बहुत आहत किया और उनके संगठित राष्ट्र के सपने को चकना चूर कर दिया। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने पंडित जवाहर लाल नेहरू के मंत्रिमंडल में शिक्षा मंत्री के रूप में 1947 से 1958 तक देश की सेवा की। 22 फरवरी 1958 को दिल का दौरा पड़ने के कारण उनका इंतेक़ाल हो गया। मौलाना आज़ाद के इंतेक़ाल से देश के साथ ही मुस्लिम तालीम का भी मेयार सिमट गया। आल इंडिया टीचर्स एसोसिएशन मदारिस अरबिया के महामंत्री वहीदुल्लाह खां सईदी कहते हैं कि आज़ादी के पहले मोहम्मद अली जिन्ना और आज़ादी के बाद मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के अलावा मुस्लिम तालीम पर किसी ने भी कोई खास तवज्जोह नहीं दिया। मौलाना देश भर के मदरसों को एक दूसरे से जोड़ने के लिए अरबी फारसी विश्वविद्यालय बनाना चाहते थे मगर उनके इंतेकाल से वो मिशन धरा का धरा रह गया।

आगमन काल से होगा क्रिसमस का आगाज

प्रभु ईसा मसीह के धरती पर जन्म लेने की खुशी का आगाज़ ईसा मसीह आगमन काल से होता है, आगमन काल क्रिसमस से पहले पड़ने वाले पहले चार इतवार को कहा जाता है, यानि क्रिसमस के पहले इस बार 26 नवंबर संडे हैं, 26 नवंबर से ईसा आगमन काल की शुरूआत होगी और पांचवां सड़े क्रिसमस होगा। ईसाई पुरोहितों की माने तो 26 नवंबर से मसीही क्रिसमस के जश्न में डूब जायेंगे जो 25 दिसम्बर को अपने शबाब पर होगा और जनवरी तक क्रिसमस और नये साल का मसीही कलीसिया जश्न मनायेगी। एक रिपोर्ट...

प्रभु ईसा मसीह के धरती पर जन्म लेने की खुशी का आगाज़ ईसा मसीह आगमन काल से होता है, आगमन काल क्रिसमस से पहले पड़ने वाले पहले चार इतवार को कहा जाता है, यानि क्रिसमस के पहले इस बार 26 नवंबर पहला संडे हैं, इसी से ईसा आगमन काल की शुरूआत होगी और पांचवां सड़े क्रिसमस होगा। ईसाई पुरोहितों की माने तो 26 नवंबर से मसीही क्रिसमस के जश्न में डूब जायेंगे जो 25 दिसम्बर को अपने शबाब पर होगा। जनवरी तक क्रिसमस और नये साल का मसीही कलीसिया जश्न मनायेगी। यूं तो देश क्या दुनिया के सभी चर्चेज और गिरजाघरों में क्रिसमस जैसे ग्लोबल पर्व की खुशियां मनायी जाती है पर बनारस में यह उत्सव इसलिए भी खास हो जाता है क्यों कि यहां कि मिली जुली संस्कृति जिसमें सभी धर्म और मज़हब के लोग है, वो क्रिसमस की खुशियों में न सिर्फ शरीक होते हैं बल्कि तीन दिनों तक सेंट मेरीज़ महागिरजा में लगने वाले मेले में शिरकत करके क्रिसमस उत्सव का लुत्फ भी उठाते हैं। सेंट मेरीज़ महागिरजा में बिशप यूज़ीन जोसेफ की अगुवाई में फादर विजय शांतिराज व सहायक पुरोहित फादर आरोग्य दास यीशु आगमन काल के पहले संडे को विशेष आराधना करायेंगे।

ऐतिहासिक सीएनआई चर्च तेलियाबाग में पादरी आदित्य कुमार आराधना करायेंगे। पादरी आदित्य कहते हैं कि आगमन काल का मतलब ही होता है कि प्रभु ईसा हम प्रभु ईसा के जन्म की प्रतीक्षा धीरजपूर्ण आशा के साथ करें। ईसा मसीह का धरती पर आना ही हमें यह संदेश देता है कि जब भी दुनिया में बुराईयों का साम्राज्य होता है तो उसे दूर करने ईश्वर किसी शक्ति को भेजता है और अंत में जीत सच्चाई की होती है। वो बताते हैं कि आगमन काले के दौरान चर्चेज कालोनियों में कलीसिया मसीही गीत पेश करेगी, उनके जन्म के खास गीत गाये जायेंगे। जैसे आया मसीहा चरनी में तू पापियों को बचाने को, लाये ईमान जो बेटे पर, करेगा पार इस दुनिया को...,पेश किया जायेगा।

सेंट पॉल चर्च सिगरा के पादरी सैम जोशुआ सिंह वहां

आराधना करायेंगे। उन्होंने बताया कि क्रिसमस हो हल्ला शोर शराबे का नाम नहीं है बल्कि इस दौरान हम ईश्वर के नज़दीक आते हैं, उनकी आराधना करते हैं साथ ही ऐसे लोग जो ईश्वर से दूर होते जा रहे हैं उनके लिए भी एक मौका होता है कि वो चर्चेज में आये और प्रभु ईसा मसीह की आराधना करें।

चर्च ऑफ बनारस के पादरी बेनजॉन ने बताया कि उनके ही नेतृत्व में क्रिसमस के तमाम आयोजन इस चर्च में होंगे। बनारस चर्च ऐतिहासिक चर्च है। दरअसल प्रभु ईसा मसीह का इस धरती पर आना ही अधर्म, असत्य, बुराईयों का खात्मा और शांति के राज्य की स्थापना करना था। उनके जन्म से पहले चार संडे को एडवेंट या आगमन काल कहा जाता है, आगमन काल शुरू होते ही तमाम मसीही घरों में क्रिसमस की तैयारियां शुरू हो जाती है। वो बताते हैं कि इस बार 26 नवम्बर, 3 दिसंबर, 10 दिसंबर, 17 दिसंबर आगमन काल के दौरान पड़ने वाला इतवार है, 25 दिसंबर को क्रिसमस मनाया जायेगा।

लाल गिरजाघर में पादरी संजय दान क्रिसमस की आराधना करायेंगे। इस चर्च में उनका दूसरा क्रिसमस है। उन्होंने कहा कि हमें पापों से बचाने के लिए परमेश्वर ने प्रभु ईसा मसीह को दुनिया में भेजा था। ईसा मसीह के आगमन काल की शुरुआत होते ही एक तरह से उनके जन्म की तैयारियां तेज हो जायेगी। मसीही समुदाय घरों और चर्चेज में कैरोल सांग गायेगा। हमारे चर्च में खास गीत, धरती आकाश दोनों प्रभु की आवाज़ सुनेंगे, संसार के सब प्राणी उसका ही नाम लेंगे, प्रभु का समय आता है। धरती मगन होगी...। गाया जायेगा।

सेंट बेटल फुल गॉस्पल चर्च में पादरी अरविन्द थामस, विजेता प्रेयर मिनिस्ट्रीज में पास्टर अजय कुमार, सेंट थामस चर्च में पादरी न्यूटन स्वीवन आराधना करायेंगे।शहर के गिरजाघरों व चर्चों में चर्च कमेटी की ओर से आगमन काल के पहले संडे को कलीसिया में शिड्यूल बांटा जायेगा। इस शिड्यूल के हिसाब से ही अब शहर भर के चर्चों में क्रिसमस के आयोजन होंगे। इस दौरान सेंट मेरीज़ महागिरजा में 25 दिसंबर से 27 दिसंबर तक तीन दिनों तक क्रिसमस मेला लगता है जिसका उद्घाटन वाराणसी धर्मप्रांत के अध्यक्ष बिशप यूज़ीन जोसेफ फीता काटकर करते हैं। तीन दिनों तक पूर्वांचल भर से यहां सभी लुत्फ उठाते हैं।

देव दीपावली पर रौशन हुआ सारा जहां

देव दीपावली पर काशी का नज़ारा देखने लायक था, ऐसा लगा किअंधेरे का साम्राज्य ही खत्म हो गया हो और धरती पर गंगा के आंचल में स्वर्ण लोक उतर आया हो। दीयों की झिलमिल और घाटों का अद्भुत नज़ारा काशी आये तमाम लोगों को बरबस ही अपनी ओर आकर्षित करता दिखाई दे रहा था। दीयो और दीपकों के आकर्षण में सभी बंधे-बंधे से दिखाई दिये।

एक रिपोर्ट...

दरअसल काशी में में देव दीपावली मनाने की परम्परा अति प्राचीन काल में पंचगंगा घाट से शुरू हुई थी। 1989 में काशीवासियों की दिलचस्पी के चलते इसका उदय अन्य घाटों पर भी हो गया जो आज एक महोत्सव और उत्सव के रूप में विख्यात हो नज़र आ रहा है। माना जाता है कि देव दीपावली पर काशी में देवताओं की आमद होती है और वो यहां दीपावली मनाते हैं। देव दीपावली की सजावट और गंगा आरती देख बनारस आये हर पर्यटक काशी का नज़ारा देख भाव विभोर हो उठते हैं। यूं तो कहा जाता है कि काशी के लोग उत्सव मनाने का बहाना तलाशते हैं, गंगा के किनारे बसे इस शहर में तमाम उत्सव का जन्म कब हो गया, इस पर भी चर्चाएं हमेशा होती रहती है। जहां तक देव दीपावली मनाने के बारे में पौराणिक मान्यताएं हैं, उन पर अगर ग़ौर किया जाये तो पता चलता है कि काशी के पहले राजा दिवोदास ने अपने राज्य में देवताओं के प्रवेश पर पाबंदी लगा दी थी। लेकिन कार्तिक मास में पंचगंगा घाट पर स्नान के महात्म्य का लाभ लेने के लिए देवतागण यहां छुप-छुपाकर आते और गंगा स्नान करके चले जाते। बाद में देवताओं ने राजा दिवोदास को मनाकर काशी में अपने प्रवेश पर लगे प्रतिबंध को हटवा लिया। इस दिन को देवताओं ने विजय दिवस के रूप में मनाया और हर्षोउल्लास के साथ उत्सव मनाने के लिए कार्तिक पूर्णिमा पर काशी आने लगे। काशी आने का मकसद और उद्देश्य बाबा भोलेनाथ की महाआरती का भी था। मान्यता है कि उसी समय से देवगण काशी में देव दीपावली मनाते आ रहे हैं। एक अन्य कहावत है कि त्रिपुर नामक राक्षस पर विजय पाने के बाद देवताओं ने भगवान शंकर की महाआरती काशी में की थी और इस खुशी में नगर को दीप मालाओं से सजाया गया था। इस विजय दिवस को ही देव दीपावली का रूप दे

दिया गया। वर्तमान समय में तकरीबन ढ़ाई दशक में महादेव की नगरी काशी में देव दिवाली पारम्पारिक उत्सव का रूप ले चुका है। गंगा घाटों की सीढ़ियों के साथ ही तालाब और पोखरों के किनारे भी खूबसूरत दीपक जगमगाये जाते हैं। काशी में गंगा किनारे के चौरासी घाटों पर विद्युत झालरों की झिलमिलाहट व असंख्य दीपों की रोशनी तथा दिलकश आतिशबाज़ी का नज़ारा सभी का दिल जीत लेता है और लोग देखते ही रहते हैं। आलम यह रहता है कि गंगा घाटों से सटे मुहल्लों में तकरीबन हर घर में मेहमान एक दो दिन पूर्व से ही गंगा का अद्भुत नज़ारा लेने आ जाते हैं। इसमें देसी और विदेशी लाखों पर्यटकों की आमद से काशी का पर्यटन उद्योग और होटल व्यवसाय भी चमक उठता है। बहुत से ऐसे पर्यटक हैं जिन्हें यह दिन याद रहता है और वो तकरीबन हर साल इस रौशनी के पर्व का आनन्द लेने बनारस पहुंच जाते हैं। होटल, लाज, धर्मशाला और पेइंगेस्ट हाउस सप्ताह भर पहले से ही भरना शुरू हो जाते हैं। पर्यटक छोटी बड़ी नावों के साथ ही बजड़े, मोटर बोट आदि से मोटी रकम खर्च करके यह नज़ारा बीच गंगा में जाकर लेते हैं।

इंटरनेट क्रांति से मिली ख्याति

संचार क्रांति के दौर और नेट पर सवार हो चुके तमाम पर्व के चलते सात समंदर पर बैठे लोग भी काशी की देव दीपावली का आनन्द जहां होते हैं वही से उठा लेते हैं। खासकर फेसबुक और वाट्स एप के चलते देव दीपावली पर गंगा-घाटों पर सैर के दौरान लोग दीपावली हो या देव दीपावली सेलफी लेने की जहां होड़ मचती है वहीं तमाम अद्भुत तस्वीरें तुरंत सोशल मीडिया पर पहुंच जाती है। देव दीपावली पर जगमगा उठते हैं काशी के घाट।

विद्यापीठ का दीक्षान्त

उच्चकोटि के शिक्षण संस्थान की कमी नहीं: राज्यपाल
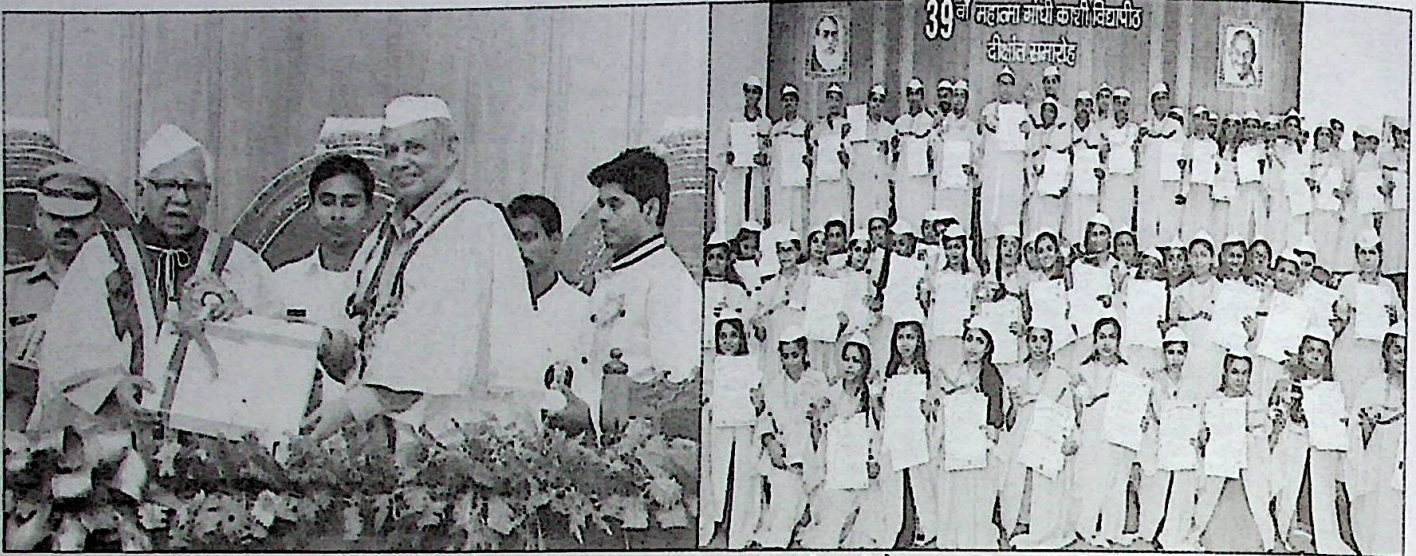
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के 39 वें दीक्षान्त समारोह को सम्बोधित करते हुए उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री राम नाईक ने कहा कि लम्बे समय बाद प्रदेश के सभी विश्वविद्यालयों में शिक्षा-व्यवस्था पटरी पर है। सभी राज्य विश्वविद्यालयों में शैक्षणिक कैलेण्डर का ईमानदारी से पालन हो रहा है। उन्होंने कहा कि शिक्षा-व्यवस्था पटरी पर आने के बाद यह जरुरी हो गया है कि शिक्षा की गुणवत्ता की तरफ भी ध्यान दिया जाये। यह कहने में मुझे कोई संकोच नहीं है कि पहले विश्व विद्यालयों में शैक्षणिक कैलेन्डर नाम की कोई चीज ही नहीं थी मगर अब सब कुछ ठीक हो चुका है। देश में उच्चकोटि के शिक्षण संस्थान की भी कोई कमी नहीं रही है।

उन्होंने कहा कि आजादी के बाद शिक्षा का बहुत प्रचार-प्रसार हुआ और यह वहां तक पहुंची जहां किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। आज सुदूर क्षेत्रों में उच्च कोटी के शिक्षण संस्थान है। शिक्षा के क्षेत्र में नये-नये आयाम स्थापित हुए है और उसके स्तर में गुणात्मक सुधार हुआ। शिक्षा के व्यापक प्रचार-प्रसार का ही नतीजा है कि आज भारत दुनिया के विकसित देशों की श्रेणी में खड़ा हो चुका है। श्री नाईक ने कहा कि यह बात उन्हें अच्छी तरह से पता है कि राज्य विश्वविद्यालयों में शिक्षकों की बड़ी कमी है। उन्होंने पूर्ववर्ती सरकार से इस दिशा में ध्यान देने का अनुरोध किया था लेकिन बात नहीं बनी। नयी सरकार ने उनके आग्रह को स्वीकार कर लिया है और सारे विश्वविद्यालय में रिक्त पदों को भरने का निर्णय हो गया है। इसकी प्रक्रिया भी शुरु हो गयी है और शीघ्र ही नये शिक्षक अपने दायित्व को सम्भाल लेंगे।

उन्होंने कहा कि महिला सशक्तिकरण का इससे बड़ा प्रमाण क्या हो सकता है कि विश्वविद्यालय में गोल्ड मेडल पाने वाली छात्राओं की संख्या 76 फीसदी है और उपाधि प्राप्त करने वाली छात्राओं की संख्या 57 फीसदी है। अब तो महिलाएं लडाकू विमान भी उड़ाने वाली है। देश की प्रगति की बागडोर अब महिलाओं के हांथों में है। उन्होंने कहा कि दीक्षान्त समारोह के साथ ही किताबी ज्ञान का दौर भी खत्म हो जाता है लेकिन हर व्यक्ति जीवन के अन्त तक छात्र बना रहता है और कुछ न कुछ सीखता भी रहता है। जीवन में सफलता भी उसी को मिलती है जो मेहनत की पराकाष्ठा में रहता है और प्रमाणिकता के साथ जीता है तथा पारदर्शी रहता है।

कार्यक्रम में कुलपति डा. पी नाग ने स्वागत भाषण दिया जबकी इसरो के पूर्व अध्यक्ष पद्मभूषण डा. के राधाकृष्णन ने बतौर मुख्य अतिथि कहा कि प्रौद्योगिकी ने शिक्षा को समय व स्थान के बंधन से मुक्त कर दिया है। औपचारिक शिक्षा प्रणाली में जिस प्रकार से अवधारणा सीखी जाती है उसे प्रौद्योगिकी बदल सकती है। उन्होंने कहा कि चार दशक पहले वे भी स्नातक करके बाहर की दुनिया में आये थे उस समय इसरो अपने प्रारंभिक चरण में था। इसरो में काम करते हुए कई चुनौती मिली, जिसका डट कर सामना किया गया और सभी के सहयोग से इसरो ने सफलता के नये मुकाम स्थापित किये। उन्होंने कहा कि छात्रों को भी चुनौतियों से मुकाबला करते हुए जीवन में सफलता पानी चाहिए।

डा. राधाकृष्णन ने कहा कि इसरो ने मंगलयान का सफल प्रक्षेपण करके इतिहास रच दिया। विश्व के अनेक देशों की अंतरिक्ष एजेंसियों को पहली बार में यह सफलता नहीं मिली थी। महत्वपूर्ण बात यह होती है कि टीम का नेतृत्वकर्ता असफलता की स्थिति में खुद को जिम्मेदार ठहराता है और सफलता मिलने पर पूरी टीम को श्रेय देता है। उन्होंने कहा कि इसरो के पास वरिष्ठों का अनुभव व युवाओं की अविष्कारक शक्ति का अद्भुत समन्वय है इसलिए आने वाला समय भारत का ही होगा। कार्यक्रम का संचालन डा. वंशीधर पाण्डेय ने किया। दीक्षान्त कार्यक्रम का संचालन कुलसचिव ओमप्रकाश ने किया। दीक्षांत समारोह में ही राज्यपाल रामनाईक ने बापू कक्ष, प्राकृतिक चिकित्सा शिक्षा व महिला छात्रावास सेवा संकुल का उद्घाटन भी किया है। दीक्षांत समारोह में 57 मेधावियों को मेडल दिया गया है। इसके अतिरिक्त लगभग एक लाख छात्रों को डिग्री व 39 को शोध उपाधि प्रदान की गयी।
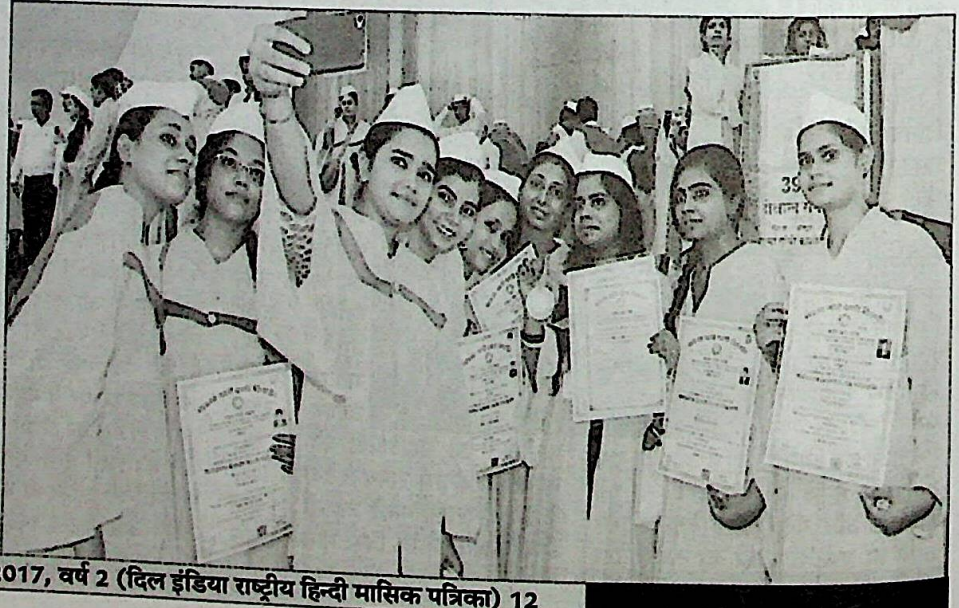
मेडल पाकर झूम उठा हर स्टूडेंट्स

पापा कहते हैं बड़ा नाम करेगा, बेटा हमारा ऐसा काम करेगा...कभी यह गीत आमीर खां सुनहरे पर्दे पर जब गाते हुए नज़र आये थे तो हर दिल झूम उठा था, करीम दो दशक बाद जब महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ का 39वां दीक्षांत समारोह हुआ तो आमीर का यह गीत जैसे ज़ेहर में ताजा हो गया हो, जब दीक्षांत समारोह में स्टूडेंट्स से बातचीत की गयी तो सभी अपने आपा-मम्मी का जिक्र करने से नहीं चूके, कि वो क्या चहते हैं और पापा क्या कहते हैं। इस बार गोल्ड मेडल हासिल करने वालों में 75 फिसदी छात्राएं रहीं जबकि छात्रों का प्रतिशत महज 25 प्रतिशत ही था। ऐसे में गोल्ड मेडिलिस्ट दर्जन भर छात्र-छात्राओं ने अपने जज्बात का इज़हार दिल इंडिया से किया। अदब जहांगीर की एक रिपोर्ट...

एमएसडब्ल्यू (एचआर) में गोल्ड मेडल प्राप्त करने वाली राम्या सिंह अपनी शिक्षकों व माता-पिता के दिशा-निर्देशों को देती हैं। उनके पिता रविन्द्र सिंह एनटीपीसी रिहंद में सीनीनियर मैनेजर (एचआर) हैं जबकि मां राजेश्वरी सिंह भी नेट क्वालिफाई हैं। वे बताते हैं कि उनका लक्ष्य है कि वह रिसर्च करेंगी और उनका श्रेय दिव्यांगों और जरूरतमंदों की सहायता करना है।

भौतिकी में गोल्ड मेडलिस्ट दीनापुर करंडा जिला गाजीपुर की सोनम सिंह से जब पूछा गया कि इस मुकाम पर पहुंचने का श्रेय किसे देती हैं वह बेहद भावुक हो जाती हैं उनकी आंखें डबडबा जाती है। वे बताती हैं कि तीन वर्ष ही उनकी मां का देहांत हुआ है जिसकी भूमिका उनकी बड़ी बहन निभाती हैं। इनके पिता विपिन सिंह लेक्चरर हैं। इनका लक्ष्य साइंटिस्ट बनना है।

एलएलबी में गोल्ड हासिल करने वाली करिज्मा कलाम का लक्ष्य जज बनना है। वे अपनी इस सफलता का श्रेय अपने बड़े पापा आफताव आलम को देती हैं जो पेशे से अधिवक्ता हैं। वे बताती हैं कि बड़े अब्बू के सानिध्य का ही असर है कि उन्हें यह मुकाम हासिल हुआ है जबकि उनका उत्साहवर्धन पिता कलाम अहमद व मां सालिया बेगम भी करती रहीं। दर्शनशास्त्र में गोल्ड प्राप्त करने पर प्रगति मिश्रा कहती हैं कि उनकी सफलता श्रेय उनकी मां गायत्री मिश्रा को जाता है क्योंकि वे मुझे पढ़ाई के लिए हर तरह से सहयोग करती हैं। हालांकि समय-समय पर पिताजी राजेश मिश्रा उनकी हौसला आफजाई करते रहते हैं। उनका लक्ष्य समाजसेवा का है और वे जरूरतमंदों के लिए कुछ करना चाहती हैं। बीएससी में गोल्ड हासिल करने वाली लांसी कहती हैं कि उनकी मां मनोरमा देवी उनकी गुरु हैं चूंकि वह शिक्षिका हैं लिहाजा उनका दिशा निर्देश मुझे इस मुकाम तक पहुंचाया है। पिता संतोष कुशवाहा भी आत्म विश्वास जगाते हैं। उनका लक्ष्य सिविल सेवा में जाकर समाज से भ्रष्टाचार का खात्मा करना है।

जेनेटिक एंड प्लांट ब्रीडिंग में गोल्ड मेडलिस्ट व बलिया के किसान की बेटी पुष्पांजलि कुशवाहा का लक्ष्य साइंटिस्ट बनना है। वह अपनी सफलता का श्रेय पिता रामप्रवेश मौर्या, माता रीता कुशवाहा के अतिरिक्त गुरुजनों को देती हैं।

बलिया के ही दुर्गविजय यादव प्राचीन इतिहास में गोल्ड मेडल प्राप्त किया है। वे बताते हैं कि उनके शिक्षक पिता अच्छेलाल यादव से जो गाइडेंस मिला उसी के चलते वह सफलता की सीढ़ी चढ़ते गये और आज इस मुकाम पर पहुंचे। मध्यकालीन इतिहास में गोल्ड हासिल करने वाली प्रगति तिवारी का लक्ष्य सिविल सर्विस में आकर समाज के वंचित लोगों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ना है। क्रिकेट प्लेयर हार्दिक पांड्या की फैन प्रगति का कहना है कि जिस तरह वह हर क्षेत्र में मुश्तैदी से डटे रहते हैं मेरा इरादा भी कुछ इसी तरह का है। एमएफए में गोल्ड मेडलिस्ट अनामिका श्रीवास्तव का लक्ष्य एकदम जुदा रहा। वे एक कुशल शिक्षिका बनकर समाज को दिशा देना चाहती हैं। वे अपनी सफलता का श्रेय पिता अनिल श्रीवास्तव व मां पुष्पा को देती हैं। ऐसे ही वीर लाल ने कहा कि वो मेहनत करके अपना लक्ष्य हासिल करने में भरोसा रखते हैं। वो समाजिक सरोकार के मुद्दे पर सक्रिय रहना चाहते हैं।

बी.कॉम में गोल्ड मेडल प्राप्त करने वाली रिद्धि सिंह का कहना है कि उनकी इस उपलब्धि में उसके पापा-मम्मी का विशेष योगदान रहा है खासकर वह अपने पिता हेमंत सिंह को इसका श्रेय देती हैं। रिद्धि एमबीए करके कार्पोरेट सेक्टर में ऊंचा मुकाम हासिल करना है। इसके लिए वो जी भर कर मेहनत करने से भी पीछे नहीं हटेंगी, क्यों कि पापा को मुझ पर नाज़ है और मैं उनका नाम रौशन करना चाहती हूं। मनोविज्ञान में मेडल हासिल करने वाली शरदांशी श्रीवास्तव ने इस मुकाम को हासिल करने का श्रेय अपने घर वालों को ही दिया। वो कहती हैं कि मेरे पापा शरद चंद्र श्रीवास्तव व मेरे विभागाध्यक्ष दोनों ने मेरा बहुत सपोर्ट किया हैं। वे बताती हैं कि वह आगे चलकर चाइल्ड काउंसलर बनना चाहते हैं।

लेखकों से अनुरोध है कि...

लेखकों से अनुरोध है कि वो अपने लेख, कहानी, विचार, कविता आदि साफ-साफ कागज़ पर हाशिया छोड़ कर लिखे, ताकि उसे शुद्ध-शुद्ध प्रकाशित करने में कोई परेशानी न हो, बेहतर हो कि टाइप कराके इस पत्ते पर भेजे एस. 3/200 उल्फत कम्पाउंड, अर्दली बाजार, वाराणसी यूपी। मो.न.09452246786, 786dilindia@gmail.com

स्पेनी पीएम ने किया कैटेलोनिया सरकार को बर्खास्त

स्पेन के प्रधानमंत्री मारियानो राजोय ने कैटेलोनिया की क्षेत्रीय सरकार को बर्खास्त करने के साथ साथ संसद भी भंग कर दी और 21 दिसम्बर को समय से पूर्व चुनाव कराने की घोषणा करते हुए सियासी सरगर्मी तेज़ कर दी है। राजोय ने टीवी पर दिए अपने भाषण में कहा, हमारा ऐसा मानना है कि कैटलन नागरिकों की आवाज को सुनने के लिए यह जरूरी है, ताकि वह अपने भविष्य को लेकर फैसला ले सके। कोई भी व्यक्ति कानून से बाहर नहीं जा सके। प्रधानमंत्री ने कहा, ''सामान्य स्थिति' बहाल करने के लिए कैटेलोनिया के शासन की सीधी बागडोर लेने का अभूतपूर्व निर्णय जरूरी था। हम बता दें कि कैटेलोनिया में संकटपूर्ण स्थिति की शुरूआत उस वक्त हुई, जब स्पेन की संवैधानिक कोर्ट की ओर से अवैध ठहराए जाने के बाद भी वहां आजादी के लिए जनमत संग्रह हुआ।

कैटेलोनिया स्पेन का अंग

अमेरिका ने कैटेलोनिया मामले पर स्पेन का समर्थन करते हुए इसे उसका अभिन्न अंग बताया है। विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता हिथर नॉर्ट ने एक बयान में कहा, अमेरिका ने केटालोनिया को मजबूत और एकजुट रखने के लिए स्पेन के संवैधानिक उपायों का समर्थन किया है। नॉर्ट ने एक बयान में कहा, अमेरिका और स्पेन उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) का एक अहम साझेदार सदस्य है। दोनों देश एक दूसरे की साझा सुरक्षा और आर्थिक प्राथमिकताओं का सहयोग करते है। प्रवक्ता ने कहा, कैटेलोनिया स्पेन का एक अभिन्न अंग है और अमेरिका को स्पेन के मजबूत और एकजुट रखने के लिए स्पेनिश सरकार के संवैधानिक उपायों का समर्थन करता है। वहीं मैक्सिको ने कहा है कि वह कैटेलोनिया को मान्यता नहीं देगा।

कैटेलोनिया का विरोध

कैटेलोनिया के अलगाववादी नेता ने इस अर्धस्वायत्त क्षेत्र पर स्पेन सरकार द्वारा लगाए गए प्रत्यक्ष शासन का लोकतांत्रिक विरोध करने का आह्वान किया है। पिछले दिनों उसकी संसद ने एकतरफा आजादी की घोषणा की थी। कार्ल्स पुइग्डेमोंट ने टीवी पर प्रसारित बयान में कहा कि अब तक हमने जो हासिल किया है, उसे बचाने का सर्वश्रेष्ठ तरीका अनुच्छेद 155 के अनुप्रयोग का लोकतांत्रिकविरोध है।

उनका बयान सावधानीपूर्वक तैयार किया गया था और ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उन्होंने अपनी बर्खास्तगी स्वीकार नहीं की है। स्पेन ने उन्हें आधिकारिक रूप से बर्खास्त कर दिया। पुइग्डेमोंट पहले कभी इस्तेमाल में नहीं लाये गये संवैधानिक अनुच्छेद 155 का जिक्र कर रहे थे जिसने स्पेन सरकार को शक्तियां अपने हाथ में लेने की अनुमति दी। उन्होंने कहा, वह और उनकी टीम स्वतंत्र देश बनाने के प्रयास में जुटे रहेंगे। कैटेलोनिया के राष्ट्रपति पद से हटाये जाने के बाद से जारी अपने पहले बयान में उन्होंने यह स्पष्ट नहीं किया कि वह नये गणतंत्र के नेता के रप काम जारी रखेंगे या नहीं। वैसे इस कथित नये देश को न तो स्पेन ने और न ही अंतरराष्ट्रीय जगत ने मान्यता दी है। टीवी पर प्रसारित भाषण के दौरान उनके एक तरफ कैटेलोनिया और दूसरे तरफ यूरोपीय संघ का झंडा लगा हुआ था।

अब सर्कसों में नज़र नहीं आयेंगे हाथी

अब देश भर में कहीं भी अगर आप सर्कस देखने जायेंगे तो उसमें अप्पू राजा यानि हाथी अब नज़र नहीं आयेगी। दरअसल केंद्रीय चिड़िया घर प्राधिकरण ने वन्य जीव 'संरक्षण' अधिनियम 1972 के तहत नियमों का उल्लंघन और अत्यधिक क्रूरता करने के मद्देनजर सभी सर्कसों में हाथी रखने की मान्यता हाल में रद्द कर दी है। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की ओर से देश भर के सभी 23 सर्कसों में हाथियों के रखने की मान्यता रद्द कर दिए जाने के बाद अब इनके द्वारा दिखाये जाने वाले कर्तब बीते जमाने की बात हो गई है।'केंद्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण' ने वन्यजीव 'संरक्षण' अधिनियम 1972 के तहत नियमों का उल्लंघन और अत्यधिक क्रूरता करने के मद्देनजर सभी सर्कसों में हाथी रखने की मान्यता हाल में रद्द कर दी है। प्राधिकरण की टीम ने पशु अधिकार समूहों, पशु चिकित्सकों की सहायता से अपने नवीनतम मूल्यांकन में हाथियों के खिलाफ क्रूरता और दुरुपयोग का पर्याप्त प्रमाण पाया। 'भारतीय हाथी वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972' की अनुसूची एकके तहत सूचीबद्ध है।

प्राधिकरण के सदस्य सचिव डीएन सिंह ने बताया कि हाथियों को रखने के लिए जो नियम-कायदे बनाये गये थे उस पर कोई भी सर्कस खरा नहीं उतरा। प्राधिकरण की ओर से सर्कस के मालिकों द्वारा हाथियों के रख-रखाव में की जा रही मनमानी और लापरवाही के बारे में समय-समय पर सचेत किया गया। प्राधिकरण के अधिकारियों ने सर्कसों का निरीक्षण भी किया और मालिकों को इसमें सुधार को लेकर तमाम हिदायतें भी दीं लेकिन उनकी कार्य प्रणाली में कोई सुधार नहीं आया। सिंह ने बताया कि लंबी जांच के बाद हाथियों के रखने की मान्यता रद्द करने की प्रक्रिया शुरु की गई थी। सर्कस में हाथियों के साथ ठीक व्यवहार नहीं किया जा रहा था। उन्हें ठीक से नहीं रखा जा रहा था। निरीक्षण के दौरान सर्कस नियमों की अवहेलना करते पाये गये। हाथियों को न तो भर पेट भोजन मिलता था और न ही उन्हें सुबह नियमित रूप से टहलाया जाता था। कई जगह हाथियों के पैर लोहे की चेन से आपस में बंधे हुए मिले। साथ ही उनकी नियमित जांच व बीमार होने पर इलाज का रिकॉर्ड भी नहीं मिला। इसलिए हाथी रखने की मान्यता रद्द कर दी गई।
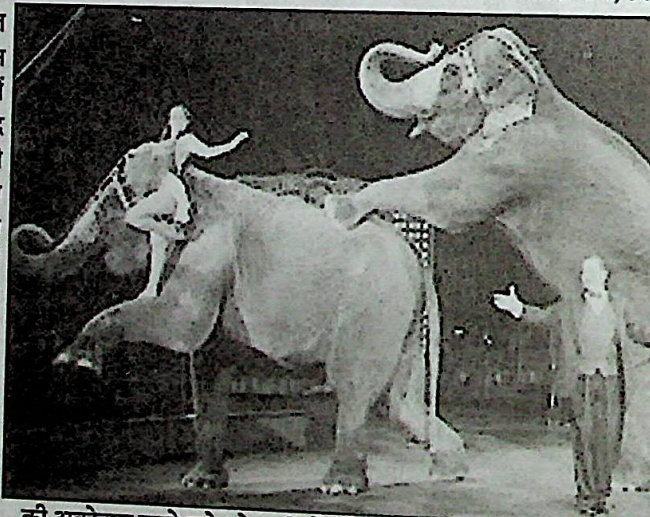
इससे पहले सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय ने 1998 में सभी सर्कसों से अन्य जानवरों भालू, बंदर, शेर, तेंदुआ और बाघों को हटाने के लिए अधिसूचना जारी की थी। इस अधिसूचना के बाद प्राधिकरण ने 1999-2001 के दौरान अलग-अलग राज्यों के सर्कसों से 375 बाघों, 96 शेरों, 21 तेंदुओं, 37 भालूओं तथा 20 बंदरों को निकाला। इन जानवरों के लिए सात केंद्र की स्थापना की गई जिसमें इनके जीवन भर देखभाल करने की व्यवस्था की गई। ये केंद्र जयपुर, भोपाल, चेन्नई, विशाखापट्टनम, तिरु पति, बेंगलूरू और साउथ खैराबाड़ी बनाए गये। वर्तमान में इन राहत केंद्रों में 51 शेर और 12 बाघ बचे है। इन जानवरों को किसी चिड़ियाघर में नहीं रखने की सबसे बड़ी वजह ये है कि ये सभी संकरित (हाइब्रिड) थे, तथा इनके प्राकृतिक स्वभाव भी काफी अलग थे। सिंह ने कहा कि इस संबंध में अलग-अलग सर्कस मालिकों का पक्ष भी सुना गया लेकिन उनकी तरफ से जो दस्तावेज मुहैया कराये गये उसमें गंभीर कमियां पायी गयी। कई सर्कस मालिकों ने इस फैसले को चुनौती दी थी लेकिन दो को छोड़कर सभी मामलों में अदालत ने प्राधिकरण के निर्णय को सही माना है। फिलहाल 'अपोलो सर्कस' और 'ग्रेट गोल्डन सर्कस' का मामला अदालत में विचाराधीन है लेकिन इस दौरान वे हाथियों को अपने सर्कस में नहीं रख सकते।

70 नये भारतीय हर्फो से सजी ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी

किसी कठिन शब्द का अर्थ ढूंढ़ते हुए यदि ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में आपको अच्छा, बापू, बड़ा दिन, अब्बा, बच्चा और सूर्य नमस्कार जैसे हिंदी शब्द मिल जाये तो हैरान होने की जरूरत नहीं। इस बार शब्दकोश को अद्यतन करते समय जो 700 नये शब्द जोड़े गए हैं, यह उनकी जरा सी बानगी है। यह अपने आप में दिलचस्प है कि कुछ शब्द दो भाषाओं के संयोग से बने हैं। हमेशा की तरह इस बार भी ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी में 70 नये भारतीय हर्फो के साथ ही हिंदी के कई दिलचस्प शब्दों को शामिल किया गया है। एक रिपोर्ट...

किसी कठिन शब्द का अर्थ ढूंढ़ते हुए यदि ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में आपको अच्छा, बापू, बड़ा दिन, अब्बा, बच्चा और सूर्य नमस्कार जैसे हिंदी शब्द मिल जाये तो हैरान होने की जरूरत नहीं। इस बार शब्दकोश को अद्यतन करते समय जो 700 नये शब्द जोड़े गए है, यह उनकी जरा सी बानगी है। यह अपने आप में दिलचस्प है कि कुछ शब्द दो भाषाओं के संयोग से बने है। हमेशा की तरह इस बार भी ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी में हिंदी केकई दिलचस्प शब्दों को शामिल किया गया है। डिक्शनरी ने अपने शब्दकोश में अच्छा और अन्ना शब्द को शामिल किया है। इसके अलावा कुछ दिन पहले डिक्शनरी को अद्यतन करते हुए तेलुगु, उर्दू, तमिल, हिंदी और गुजराती के 70 और भारतीय भाषाओं के कुछ अन्य हर्फो को शामिल किया गया है। ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी (ओईडी) ने कुछ ऐसे शब्दों को भी अपनी डिक्शनरी में शामिल किया है, जो हिन्दी, मराठी, बंगाली, पंजाबी, तमिल, तेलगु अथवा उर्दू आदि भाषाओं को मिलाकर बनाये गये है।

ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी की विश्व अंग्रेजी संपादक डेनिका सालाजार द्वारा इस संदर्भ में लिखे गये लेख के अनुसार उदाहरण के लिये उर्दू के नमकीन का इस्तेमाल हिन्दी में भी समान रूप से किया जाता है, जबकि मिर्च-मसाला का व्यापक प्रयोग मसालों के पाउडर अथवा मिश्रण के लिये होता है। हालांकि हिन्दी में मिर्च और काली मिर्च दो अलग-अलग मसाले है। इसमें मिर्च शब्द हिन्दी से लिया गया है, जबकि मसाला उर्दू भाषा से आया है। उन्होंने कहा कि नये शामिल किये गये शब्द पूरी तरह से भारतीय नहीं है, बल्कि ये नये शब्द भारतीयनुमा है। जैसे अंग्रेज यहां से जाते समय एक व्यंजन टिक्का-मसाला अपने साथ ले गये। आम तौर पर यह भुने हुये मांस का मसालेदार टुकड़ा होता है, लेकिन अब यह शब्द ब्रिटेन के दक्षिण भारतीय रेस्त्रां में भी पर्याप्त रूप से प्रचलन में आ गया है। इसी प्रकार उर्दू का शब्द दादागिरी भी हिन्दी के संयोजन से बनाया गया है। हालांकि हिन्दी में दादा रिश्ते-नाते के संदर्भ में प्रयुक्त होता है, लेकिन इसके साथ गिरी जोड़ देने से यह गुंडा या गिरोह केसरगना का अर्थ ध्वनित करता है। दादागिरी डिक्शनरी में हिंदी के शामिल नये शब्दों में, अच्छा, बापू, बड़ा दिन, बच्चा और सूर्य नमस्कार जैसे शब्द है। वहीं अब उर्दू का अब्बा शब्द भी डिक्शनरी में शामिल हो गया है। भारतीय भाषाओं के ये नये 70 शब्द संस्कृति, खाने-पीने या रिश्ते-नातों से लिए गये है। हिंदी का अच्छा शब्द भी पहले से शब्दकोश में है, लेकिन ये ओके को हिंदी में अच्छा बताने वाला शब्द है। इसे नये शामिल किये गये अच्छा शब्द का अर्थ आश्चर्य अथवा खुशी केइजहार में प्रयुक्त होने वाला बताया गया है। इसी प्रकार अन्ना पहले से ही इसमें एक संज्ञा (नाउन) के रूप में डिक्शनरी में शामिल था, जो तमिल और तेलुगु में बड़े भाई को संबोधित करने के लिए प्रयोग होता है। अब शामिल किया गया शब्द दरअसल आना है, जिसका मतलब उस मुद्रा से है, जो किसी समय भारत और पाकिस्तान में वस्तु-विनियम के लिये प्रचलन में थी। यह भारतीय मुद्रा रुपये की एक छोटी इकाई है। एक रुपये में 16 आना होते है। डेनिका ने कहा, डिक्शनरी में पहले ही भारतीय भाषाओं के 900 शब्द है, अब इसमें 70 नये शब्दों को और जोड़ा गया है।

वर्ल्ड बाक्सिंग रिंग में पहुंचा बनारस का लाल

बनारस का लाल सुधीर सक्सेना का चयन तीन से 12 नवम्बर तक हंगरी के बुडापेस्ट शहर में होने वाली वाको वर्ल्ड किक बाक्सिंग चैम्पियनशिप में हुआ है। उसमें हिस्सा लेने वाली भारतीय टीम में सुधीर यूपी से इकलौते ऐसे खिलाड़ी हैं जिन्हें इस चैंपियनशिप के लिए चुना गया है। इस टूर्नामेंट में करीब 160 देशों के खिलाड़ी हिस्सा लेने जा रहे है।

आर्थिक रूप से बेहद कमजोर होने के बावजूद भी सुधीर के जज्बे में कमी नहीं है। इस बारे में बात करते हुए उन्होंने विश्वास दिलाते हुए, कहा कि वह इस टूर्नामेंट में गोल्ड मेडल जीतकर देश का मान बढ़ाएंगे। भले ही केंद्र और राज्य की सरकार खिलाड़ियों के प्रोत्साहन के लिए तमाम वादे करती रही हो लेकिन इन दावों की जमीनी हकीकत कुछ और है। इन दावों की सच्चाई की तस्दीक इतने से ही हो जाती है कि किक बॉक्सिंग में देश के लिए मेडल लाने वाले बनारस के पहलवान सुधीर को मदद के लिए दर-दर भटकना पड़ रहा है।

सरकारों ने नहीं की कोई मदद

सुधीर अब तक तीन इंटरनेशनल और दस नेशनल टूर्नामेंट में अपने खेल का लोहा मनवा चुके हैं। बीते अप्रैल महीने में ही रूस के तुर्कीस्तान में हुए एशियन कीक बाक्सिंग चैम्पियनशिप में उन्होंने कांस्य पदक भारत की झोली में डाला था। इससे पहले जनवरी में इंडो-भूटान अंतर्राष्ट्रीय मुक्केबाजी में उन्होंने देश के लिए गोल्ड मेडल जीता था। सुधीर बताते हैं कि ढेरों मेडल हासिल करने के बाद भी उन्हें अब तक यूपी या फिर केंद्र सरकार की ओर से किसी तरह की कोई मदद नहीं मिली।

वर्ल्ड चैम्पियनशिप के लिए डेढ़ लाख रुपये की जरूरत

कई बार फाइलें जरूर दौड़ी, लेकिन बीच में ही अटक गईं। ऐसे में धन की समस्या हमेशा आड़े आती रही है। हंगरी में होने वाली वर्ल्ड चैंपियनशिप में जाने के लिए करीब 1.50 लाख रुपये की जरूरत है। इस जरूरत में सुधीर के कुछ दोस्तों ने उनकी मदद की है पर पैसों की जो कमी है उसके इंतजाम की कोशिश की जा रही है।

आर्थिक तंगी के चलते छोड़ दी थी बाक्सिंग

सुधीर को बचपन से ही बॉक्सिंग का शौक था। 2003 में उन्होंने कैरियर की शुरुआत बनारस के संपूर्णानंद स्टेडियम से की और लगातार नौ सालों तक जिले से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक कई टूर्नामेंट भी खेले लेकिन परिवार की आर्थिक स्थिति सही न होने से वर्ष 2012 में बॉक्सिंग में आगे बढ़ने का सपना खत्म हो गया। 2016 में एक बार फिर परिवार और दोस्तों के बढ़ावा देने पर वो रिंग में उतरे तो उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय बॉक्सिंग चैंपियनशिप में गोल्ड मेडल हासिल कर देश का नाम रौशन किया। सक्सेना बताते हैं कि उनके कोच डीरेका के नित्यानन्द प्रधान ने किक बॉक्सिंग की बारियों के बारे में सिखाया है जिसका फायदा उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय रिंग में मिल रहा है। मूल रूप से बलिया (नगरा) के निवासी सुधीर दो भाई व दो बहनों में सबसे बड़े हैं। पिता सुरेश सक्सेना पुलिस विभाग में एएसआई और माता धर्मावती देवी हाउस वाइफ हैं। सुधीर वर्तमान में ओरिएंटल बैंक में असिस्टेंट मैनेजर पद पर कार्यरत हैं।

नबी का आला किरदार इस्लाम का आईना

हज़रत मोहम्मद मुस्तफा (स.) दुनिया के लिए रहमत बन कर आये थे। वो किसी एक कौम के लिए या एक वर्ग के लिए नहीं बल्कि रब ने उन्हें पूरी दुनिया के लिए भेजा। उस दौर में अरब का माहौल बेहद खराब था, गुमराहियत का आलम यह था कि लोग लड़कियों को ज़मीन में जिन्दा दफ्न कर दिया करते थे, दीन और मज़हब नाम की कोई चीज़ नहीं थी, जिन्दगी जीने का कोई सिस्टम नहीं था। उसी अरब की सरज़मी पर सुबह सादिक के वक्त जनाबे आमीना के घर जब नबी का कदम पड़ा तो पूरा मंज़र बदल गया। किताबों में आया है कि उस दिन जो सूरज निकला उसकी कैफियत कुछ और थी, जो हवाएं चली उसकी अलग कैफियत थी। यहां तक बयां होता है कि फिज़ा में जिस तरह की खुशबू थी, जैसी ठंडक थी, ताजगी थी, वो न तो उससे पहले कभी अरब के लोगों ने देखी और महसूस की और न उसके बाद। दरअसल नबी का किरदार ही इस्लाम की बुनियाद है। एक रिपोर्ट...

दिल इंडिया रिपोर्टर

प्यारे नबी हज़रत मोहम्मद मुस्तफा (स.) दुनिया के लिए रहमत बन कर आये थे। वो किसी एक कौम के लिए या एक वर्ग के लिए नहीं बल्कि रब ने उन्हें पूरी दुनिया के लिए भेजा। उस दौर में अरब का माहौल बेहद खराब था, गुमराहियत का आलम यह था कि लोग लड़कियों को ज़मीन में जिन्दा दफ्न कर दिया करते थे, दीन और मज़हब नाम की कोई चीज़ नहीं थी, जिन्दगी जीने का कोई सिस्टम नहीं था। 12 रबीउल अव्वल के रोज़ उसी अरब की सरज़मी पर सुबह सादिक के वक्त जनाबे आमीना के घर जब नबी का कदम पड़ा तो पूरा मंज़र बदल गया। किताबों में आया है कि उस दिन जो सूरज निकला उसकी कैफियत कुछ और थी, जो हवाएं चली उसकी अलग कैफियत थी। यहां तक बयां होता है कि फिज़ा में जिस तरह की खुशबू थी, जैसी ठंडक थी, ताज़गी थी, वो न तो उससे पहले कभी अरब के लोगों ने देखी और महसूस की और न उसके बाद।

नबी ने अपने आला किरदार व एखलाक के बूते इस्लाम की स्थापना की। उन्होंने लोगों पर कोई जादू नहीं किया, बल्कि अपने काम से, अपने एखलाक से लोगों का दिल जीता। इस्लाम की नींव ही नबी के किरदार और एखलाक का आईना है। हुजूर जो दूसरों को बताना चाहते थे, जिस रास्ते पर लाना चाहते थे, पहले उस पर खुद चलते थे, उस काम को पहले वो करते थे फिर दूसरे को उस राह पर चलने की दावत देते। नबी के एखलाक और किरदार को इस छोटी सी मिसाल के ज़रिये भी समझा जा सकता है, कि एक बार अरब में एक बूढ़ी औरत को किसी ने भड़का दिया कि एक ऐसा नवजवान आया है जिसका नाम मोहम्मद है, वो लोगों को इस्लाम में दाखिल कर रहा है, इस डर से वो बूढ़ी औरत अपना शहर छोड़कर जाने के लिए सिर पर गठरी लिये निकल पड़ी। कुछ ही दूर चलने पर वो थक कर वही बैठ गयी। बूढ़ी औरत को थका हारा देख कर उधर से गुज़र रहे एक नवजवान ने उस बूढ़ी मां से कहा, क्या मैं आपका सामान पहुंचा दू, इतने में उस बूढ़ी ख्वातीन का सामान अपने सिर पर रखकर वो नवजवान चल पड़ा, पीछे-पीछे वो ख्वातीन चली, जो बेहद खुश थी, और सोचने लगी कि कितना भला नवजवान है मेरी गठरी अपने सिर पर लेकर चल रहा है, सड़क पर पहुंचने पर उस औरत ने कहा कि बेटा यहीं रख दे, मैं चली जाऊंगी। नवजवान ने वहीं गठरी रख दी और जाने लगा, ख्वातीन ने फिर आवाज़ दी, अरे बेटा रुक। वो नवजवान रुक जाता है, फिर वो बोलती है, तू अपना नाम तो बता दे। नवजवान ने कहा कि मुझे मोहम्मद कहते हैं, आमीना का बेटा मोहम्मद। यह सुनना था कि वो बूढ़ी औरत ज़ार-ज़ार रो पड़ी। नबी ने जब इसकी वजह पूछा तो उसने बताया कि मैं तेरे ही डर से तो अरब छोड़कर जा रही थी और तू इतना नेक और भला है मुझे नहीं पता था, और उस बूढ़ी औरत ने हज़रत मोहम्मद से माफी मांगी, उन्होंने माफ कर दिया। फिर क्या था ख्वातीन अरब वापस आ गयी और उसने मजहबे इस्लाम कुबूल कर लिया।
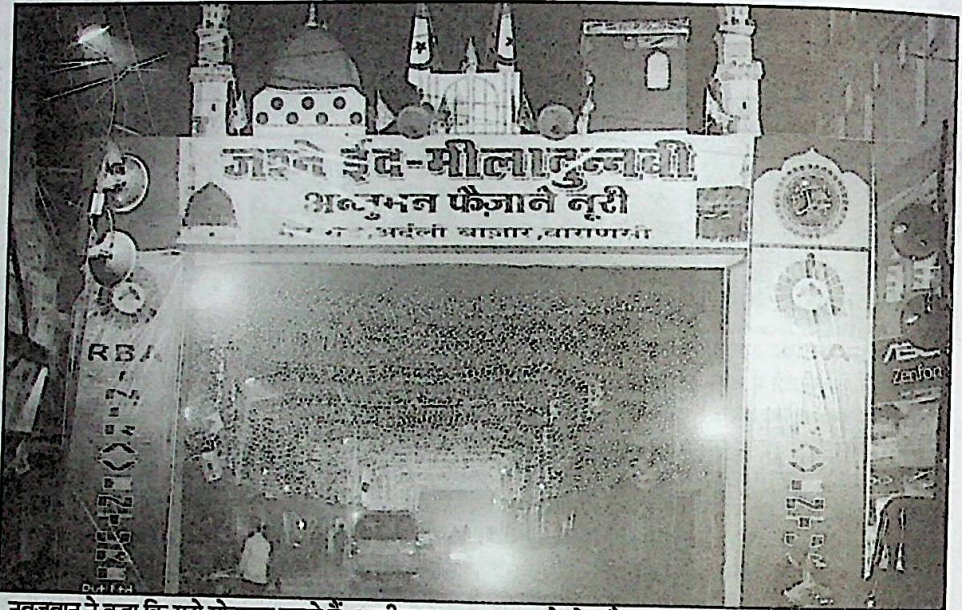
दरअसल यह तो एक छोटी सी मिसाल है, जिस प्यारे नबी के किरदार को दुनिया के सामने पेश करने में पूरी तरह कामयाब है। ऐसी तमाम मिसालों से हदीस, इस्लामी रिसाले और तमाम ग्रंथ भरे पड़े हैं, जो नबी के सिस्टम, उनकी तालीम और किरदार पर रौशनी डालती है। नबी के कर्म और उनके सिद्धानों और पहले खुद कोई काम करके दिखाना और फिर दूसरों को उस काम पर अमल के लिए कहना, उनकी सबसे बड़ी खासियत है। एक ऐसी ही मिसाल है, अरब के उस बच्चे की है, जिसके मां-बाप नहीं थे और वो ईद के दिन बेतहाशा आंसु बहा रहा था, नबी ने उससे पूछा बेटा आज ईद है फिर भी आप रो रहे हो, क्या वजह है तुम्हारे रोने की? इस पर उस बच्चे ने कहा कि यही तो वजह है कि आज ईद है सब बच्चे अपने वालिद के साथ ईदगाह के लिए जा रहे हैं और खुशी मना रहे हैं मगर मेरे न वालिद है और न वालिदैन, मैं किसके साथ ईद मनाने जाऊ? कैसे मैं खुशी मनाऊ? इस पर नबी ने उस बच्चे से कहा कि मत रो, आज से तुम मेरे साहबज़ादे हो और आयशा तुम्हारी वालिदा हैं। जो बच्चा अब तक यतीम था, उसे नबी ने अपना कह कर दुनिया का सबसे अमीर बना दिया। प्यारे नबी अपने साथ बच्चे की उंगलिया पकड़े घर ले आये, उसे जनाबे आयशा ने गुस्ल कराकर नया कपड़ा पहनाया, फिर जब बच्चा ईदगाह के लिए निकला तो नबी ने उसे अपने कंधे पर बैठा लिया और नमाज़ के लिए ईदगाह गये। जो बच्चे उसे अपने साथ खेलने नहीं देते थे, वो भी नबी के कंधे पर बैठे उस बच्चे को देखकर उसकी किस्मत पर नाज़ करते दिखाई दिये। वो सोच रहे थे कि काश मैं भी नबी के कंधे पर बैठ पाता। तो ऐसे है हमारे नबी और हमारा इस्लाम। इस्लाम को दुनिया में फैलाने के लिए उन्होंने कभी किसी को बुरा नहीं कहा, उन्होंने ख्वातीन को उनका हक़ दिया, न जाने कितने यतीम बच्चे को अपना बनाकर उसे बाप की खुशियां दी। वो सभी की इज्ज़त करते थे, उन्होंने हमेशा अहिंसा का रास्ता अपनाया। यही वजह है कि पूरी दुनिया में इस्लाम फैला, इस्लाम नबी की तालीम से फैला नाकि तलवार से। कई बार ऐसा होता है कि बुराईयां खत्म करने के लिए अपने बचाव में तलवार उठानी पड़ती है, जैसा की दूसरे धर्मों में भी मिलता है कि बुराईयां खत्म करने के लिए महापुरुषों ने ईश्वरीय शक्ति ने तलवार उठायी हो। अगर ऐसी विशेष परिस्थितियों को छोड़ दिया जाये तो नबी ने जंग के मैदान में निहत्थों पर वार न करने, ख्वातीन और बच्चों पर तलवार न चलाने, बीमारों पर हमला न करने की हमेशा हिदायत दी।

टीपू सुल्तान जयंती पर खास

टीपू सुल्तान ने शंकराचार्य को कहा था 'विश्व गुरु'

सौरभ वाजपेयी

मैसूर के शासक टीपू सुल्तान का जन्म कर्नाटक के देवनाहल्ली में 20 नवंबर 1750 को हुआ था। जब भी भीड़ के विवेक से परे हटकर टीपू सुल्तान का मूल्यांकन किया जाएगा तब उन्हें अंग्रेजी राज के ख़तरे को पहचानने और उनके ख़िलाफ़ लड़कर शहीद होने वाले शासक के तौर पर याद रखा जाएगा। अंग्रेजी राज के शुरुआती दिनों से ही टीपू सुल्तान को लेकर एक मिथ के निर्माण की प्रक्रिया शुरू हो गयी थी, बाद के काल में भी यह प्रक्रिया बदस्तूर जारी रही क्योंकि जनमानस में टीपू एक नायक की तरह गहरी पैठ रखते थे, और लोग उसे अंग्रेजों के खिलाफ लोहा लेने वाला एक वीर सिपाही मानते थे।

टीपू बहुत साहसी थे और उन्हे युद्ध की रणनीति बनाने में जबरदस्त महारत हासिल थी। उन्होंने 17 साल की उम्र में अंग्रेजों के खिलाफ अपने वालिद हैदर अली की अगुवाई में पहला युद्ध लड़ा और द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध के दौरान जब हैदर अली की मृत्यु हो गई तो 1782 में टीपू ने मैसूर की गद्दी संभाली। इस युद्ध की समाप्ति पर टीपू ने अंग्रेजों को एक अपमानजनक संधि पर राजी करने को मजबूर किया। टीपू ने अंग्रेजों से लोहा लेने के लिए अपनी सेनाओं को यूरोपीय ढंग से प्रशिक्षित करवाया और भारत की पहली आधुनिक नौसेना की नीव रखी। टीपू ने अपने समय के धुरंधर सेनापतियों (कार्नवालिस और वेलेजली) की आंखों की नींद उड़ा दी थी।

टीपू सुल्तान ने अंग्रेजों को घेरने के उद्देश्य से फ्रांस से नजदीकियां बढ़ाईं और एक अंतरराष्ट्रीय गठबंधन बनाने के प्रयास भी किये। इस तरह, टीपू सुल्तान अंग्रेजी शासन के विरुद्ध लड़ने के लिए भारतीयों के हौसले का नाम साबित हुआ। वह ऐसे महानायक थे जिसे अंग्रेज फूटी आंख नहीं देखना चाहते थे। टीपू सुल्तान की इस छवि को विखंडित करने के लिए इतिहास को विकृत करना जरूरी था। चूंकि टीपू धर्म से एक मुस्लिम शासक था, साम्राज्यवादी इतिहासकारों की यह व्याख्या सांप्रदायिक इतिहास लेखन परंपरा में जिंदा रही। जिसे साम्प्रदायिक इतिहासकारों ने आगे बढ़ाया।

इसीलिए टीपू को सांप्रदायिक साहित्य में ठीक उसी तरह चित्रित किया गया जैसा अंग्रेजों ने किया था। जब कर्नाटक की कांग्रेस सरकार ने टीपू की जयंती मनाने की घोषणा की तो विपक्षियों को एक मनचाहा मुद्दा मिल गया। साम्राज्यवाद के समर्थक इतिहासकारों, यात्रियों और लेखकों ने टीपू के इतिहास के जिस आयाम पर सबसे ज्यादा जोर दिया, वह था-टीपू का हिंदुओं पर जुल्म ढाना. लेकिन इसके उलट अगर हम हिंदुओं और हिंदू धर्म स्थानों के प्रति टीपू की नीति का मूल्यांकन करने के लिए तत्कालीन मैसूर संबंधित प्राथमिक सोतों को आधार बनाएं तो तस्वीर एकदम अलग हो जाती है। मसलन यही टीपू हिंदू मंदिरों, संस्थाओं और तीर्थों के संरक्षक के रूप में सामने आता है। जो हिंदू मंदिरों को भेटें भेजता है और हिंदू मंदिरों में विभिन्न संप्रदायों के बीच चल रहे विवादों में मध्यस्थ की भूमिका भी निभाता है। उसके राज्य में राज्य द्वारा संरक्षित मंदिरों की देखभाल के लिए एक पद सृजित था जिसे श्रीमतु देवास्थानादसिमे कहा जाता था। इसका प्रमुख कुप्पया नामक एक ब्राह्मण थे।

एक बार मैसूर के मेलुकोटे मंदिर में की जाने वाली एक प्रार्थना के पुराने रूप का एक अंश एक संप्रदाय के दबाव में निकाल दिया गया। ऐसा मैसूर के राजा के आदेश से हुआ था और इसे लेकर शुद्धतावादी संप्रदाय में नाराजगी हो गयी। इस पर टीपू सुल्तान ने एक आदेश जारी करते हुए कुप्पया को दोनों समुदायों (वडगले और तेंगले) के साथ न्याय करने की हिदायत दी। टीपू कई महत्वपूर्ण हिंदू मंदिरों को नियमित भेटें भेजता था और उनके पुजारी वर्ग को आदर के साथ संबोधित करता था। इस बात के कई प्रमाण मौजूद है। मैसूर के कम से कम चार बड़े मंदिरों के बारे में तो यह बात पूरे सबूत के साथ कही जा सकती है। इन मंदिरों में सेरिन्गापट्टनम का रंगनाथ मंदिर, मेलुकोट का नरसिम्हा मंदिर, मेलुकोट का ही नारायण स्वामी मंदिर, कलाले का लक्ष्मी कांत मंदिर और नंजनगुड का श्रीकंतेश्वारा मंदिर विशेष उल्लेखनीय है। इन मंदिरों को चांदी के बर्तन आदि भेंटस्वरूप भेजे जाते थे। कहा जा सकता है कि टीपू अपने राज्य में स्थित इन हिंदू धर्मस्थानों के प्रति अपने आदर से न सिर्फ उनका विश्वास जीतना चाहते थे बल्कि यह नीति तो टीपू से पहले हैदर अली के समय ही शुरू हो गयी थी और हैदर अली ने मैसूर की जनता के बीच अपनी उदार छवि का निर्माण करने में सफलता हासिल की थी। टीपू द्वारा प्रख्यात श्रृंगेरी मठ को लिखे गए तकरीबन तीस पत्र इस बात की गवाही है कि टीपू को अपने राज्य की धार्मिक विविधता का अंदाजा था और वो सबका यकीन जीतने का हामी था। एक पत्र में तो टीपू अपने राज्य पर तीन शत्रुओं (हैदराबाद के निजाम, अंग्रेज और मराठों) का हवाला देकर मठ के स्वामी से अनुरोध करता है कि वे राज्य की विजय कामना के साथ शत चंडी और सहस्त्र चंडी यज्ञ करें। जिसके लिए आवश्यक सामग्री का इंतजाम राज्य की देख-रेख में किया गया। यह अनुष्ठान पूरे रीति-रिवाज के साथ संपन्न हुआ जिसमे ब्राह्मणों को उचित भेटें दी गईं और कई दिनों तक चलने वाले हवन में लगभग एक हजार ब्राह्मणों को प्रतिदिन भोजन कराया गया। यही नहीं श्रृंगेरी मठ पर मराठा हमले के वक्त टीपू हिंदू धर्म के रक्षक के तौर पर सामने आये। टीपू ने मराठा हमले से क्षतिग्रस्त मठ की मरम्मत कराई जिसमें शारदा देवी की मूर्ति भी शामिल थी।

गौरतलब है कि मराठा सेनानायक परशुराम भाऊ को न ही मैसूर की हिंदू जनता और न ही हिंदू ज्ञान के महान केंद्र श्रृंगेरी के स्वामी ने हिंदू धर्मोद्धारक के रूप में देखा। ऐसे मौके पर उनकी नज़र अपने शासक सुल्तान टीपू की ओर थी जिसने उन्हें निराश नहीं किया। यहां सुलतान द्वारा मठ के स्वामी को लिखे एक पत्र से उसके हिंदू धर्म और उसके धार्मिक संस्थानों के प्रति रुख का पता चलता है. 1793 के एक पत्र में टीपू लिखते है, आप जगतगुरु है, विश्व के गुरू। आपने सदैव समस्त विश्व की भलाई के लिए और इसलिए कि लोग सुख से जी सकें कष्ट उठाए है। कृपया ईश्वर से हमारी समृद्धि की कामना करें। जिस किसी भी देश में आप जैसी पवित्र आत्माएं निवास करेंगी, अच्छी बारिश और फसल से देश की समृद्धि होगी।

यहां एक बात स्पष्ट कर देना जरूरी है कि आम मध्यकालीन या पूर्व-आधुनिक शासकों की तरह टीपू सुल्तान को न सिर्फ अपने राज्य की सुरक्षा करनी थी बल्कि उसका विस्तार करना भी उसकी प्राथमिकता था। इसलिए उसने मैसूर के आसपास के इलाकों पर हमले किये और उनका मैसूर में विलय किया। हैदर अली ने मालाबार, कोझीकोड, कोडगू, त्रिचूर और कोच्चि को जीत लिया था। अंग्रेजों और मराठों से युद्धों के क्रम में टीपू को कोडगु और कोच्चि पर फिर हमले किये। इन दोनों इलाकों और मालाबार और कोझीकोड पर नियंत्रण बनाये रखने के क्रम में एक मध्ययुगीन शासक की तरह उसने कई कड़े और बड़े फैसले किये जिसमें कई धार्मिक स्थल भी युद्ध के दौरान नष्ट हुए। लेकिन किसी भी शासक की नीतियों का मूल्यांकन उसके युद्ध-कार्यो के आधार पर नहीं किया जाता। बल्कि उसकी घरेलू नीति के आधार पर किया जाता है। टीपू के लिए कोडगु पर कब्जा मंगलोर बंदरगाह पर नियंत्रण रखने के लिए जरूरी था। क्योंकि अंग्रेज दकन और कर्नाटक के तटों पर कब्ज़ा करके अपने लिए नियंत्रणमुक्त व्यापार के रास्ते खोलना चाहते थे, इसलिए कोडगु को उसने हर हाल में मैसूर के कब्जे में रखना चाहा। इसीलिए आज भी कोडगु के इलाके में टीपू एक शासक की तरह नहीं एक आक्रांता की तरह देख जाता है यानी कि टीपू का इतिहास दो भिन्न सोतों के आधार पर लिखा जा सकता है-औपनिवेशिक सोतों के आधार पर और भारतीय सोतों के आधार पर. जिन्हें पहली तरह के सोत ज्यादा विश्वसनीय लगते है या वे उनकी राजनीति के लिए मुफीद है, वो टीपू सुल्तान को खलनायक मानने के लिए स्वतंत्र है। जिन्हें इतिहास और इतिहासलेखन की समझ है वो टीपू सुलतान को उसके परिप्रेक्ष्य में रखकर मूल्यांकित करने की कोशिश करेंगे। जो लोग ऐसा करेंगे वो टीपू की औपनिवेशिक व्याख्या को अन्य सोतों के साथ रखकर देखें व भीड़ के विवेक से परे हट जब भी टीपू सुल्तान का मूल्यांकन किया जायेगा, वो अंग्रेजी राज के खतरे को पहचानने और उसके खिलाफ लड़कर शहीद होने वाले शासक के तौर पर याद रखे जायेंगे। क्यों कि 4 मई 1799 का वो दिन जब श्रीरंगपट्टनम में वो अंग्रेजों से लड़ते हुए शहीद हुए थे। उसे कभी भूलाया या नज़र अंदाज़ नहीं किया जा सकता

काशी की बेटी रानी लक्ष्मी बाई की जयंती
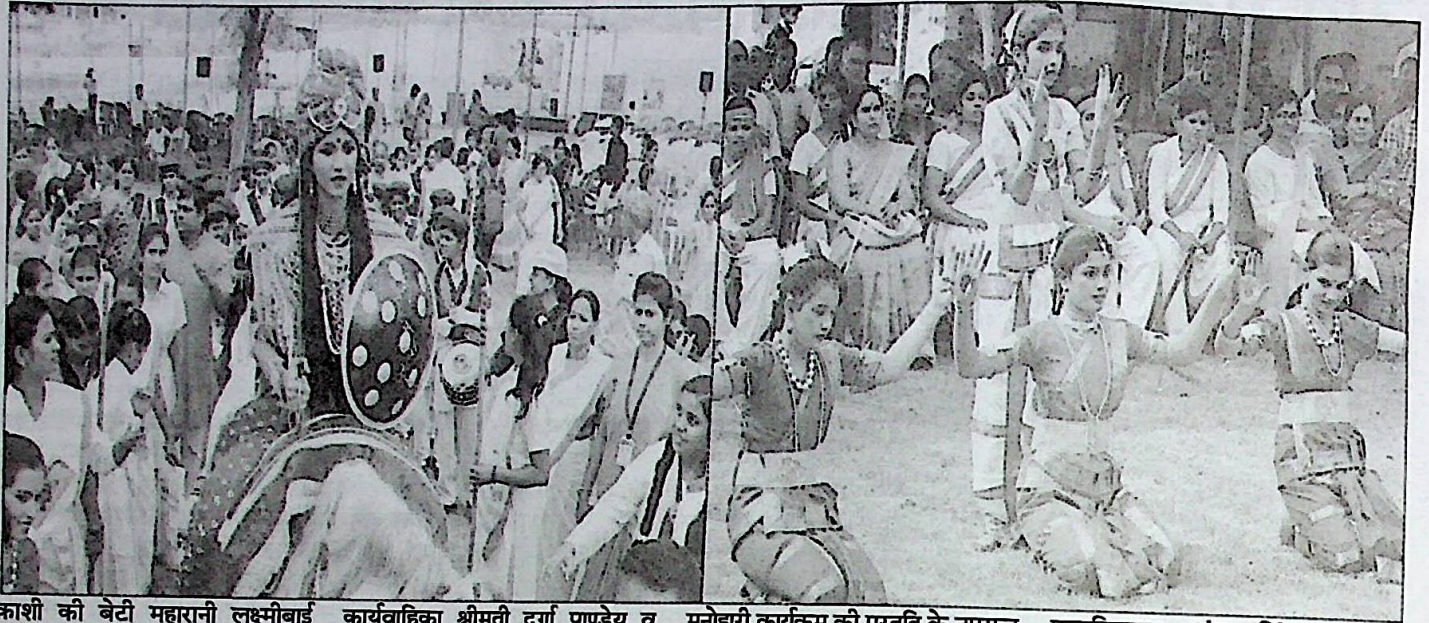
काशी की बेटी महारानी लक्ष्मीबाई मातृत्व, नेतृत्व व वीरता की प्रतीक थी। उनकी वीरता का वर्णन विदेशी विद्वानों ने भी किया है। पहली महिला जिन्होंने महिलाओं की सेना बनाकर अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिये थे। उन्होंने 'धरिता' के साथ 'सैनिका' मनोवृति का निर्माण किया। देश के प्रति समर्पण, त्याग व बलिदान का भाव जगाया। एक महिला के सफल नेतृत्व का उदाहरण प्रस्तुत किया और आज महिलाएं सैनिक प्रशिक्षण लेकर देश की रक्षा में हर मोर्चे पर दृढ़तापूर्वक खड़ी हैं। उक्त विचार महारानी लक्ष्मीबाई लक्ष्मीवाई न्यास की ओर से आयोजित वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई जयंती समारोह के अवसर पर राष्ट्र सेविका समिति की प्रमुख संचालिका वी. शान्ता कुमारी ने मुख्य अतिथि के रुप में व्यक्त किया।

उन्होंने कहा कि समिति महिलाओं में 'चरित्र' व 'धारिता' का निर्माण कर अधर्म व अत्याचार का प्रबल विरोध करने हेतु सक्षम बनाती है। उन्होंने इस दिशा में सबको साथ लेकर, राष्ट्र का संरक्षण, संकल्प, वीरता व देश के प्रति मर मिटने की उत्कृष्ट इच्छा जागृत करने में न्यास के योगदान की प्रंशसा की।

न्यास द्वारा श्री गोयनका संस्कृत महाविद्यालय अस्सी में महारानी लक्ष्मीबाई के 182 वें जन्मोत्सव कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कत्थक नृत्यागंना सोनी चौरसिया ने कहा कि दृढ़ निश्चयी के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है। इस अवसर पर राष्ट्रसेविका समिति की प्रान्त संयोजिका श्रीमती माया पाण्डेय, विभाग कार्यवाहिका श्रीमती दुर्गा पाण्डेय व महारानी लक्ष्मीबाई के पैतृक वंशज विवेक दिलीप ताम्बे भी मुम्बई से पधारे जिनका न्यास की ओर से सम्मान किया गया। उनके साथ ही दीनदयाल नगर की विधायक श्रीमती साधना सिंह का भी सम्मान किया गया।

न्यास के संस्थापक व न्यासी राजेन्द्र प्रताप पाण्डेय ने विषय प्रवर्तन रखते हुए जन्म भूमि स्थल आराजी नम्बर 3110 मौजा भदैनी मोहल्ला अस्सी के अधिग्रहण व अखण्ड ज्योति तथा भव्य स्मारक तथा नारी संवर्धन केन्द्र स्थापित करने की मांग प्रदेश व केन्द्र सरकार से की। प्रारम्भ में मंचासीन अतिथियों ने दीप प्रज्जवलित कर काशी की बेटी के चित्र पर पुष्पार्चन किया।

तदुपरान्त पाणिनी कन्या महाविद्यालय की बालाओं द्वारा मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। मुख्य शारीरिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में 'स्वागत' (दण्डयोग) समिति की सेविकाओं द्वारा तथा देशभक्ति नृत्य 'ले चले हमें राष्ट्र नौका' संत अतुलानन्द की बालिकाओं द्वारा, तथा सूर्य नमस्कार समिति व एक मनोहारी कार्यक्रम निवेदिता की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत होने के उपरान्त 'समिति' की सेविकाओं ने निःयुद्ध की सफल प्रस्तुति की। इसी दौरान गोपी राधा स्कूल व आदर्श शिक्षा मंदिर भदैनी, समिति की बहनों द्वारा मनोहारी कार्यक्रम की प्रस्तुति के उपरान्त गीत की मधुर ध्वनि पर 'योगाचाप नृत्य' प्रस्तुत किया गया। समिति की बौद्धिक प्रमुख पायल सोनी द्वारा संचालित राष्ट्र एकता मिशन की प्रस्तुति 'भाग फिरंगी भाग' ने सबका मन मोह लिया। तदुपरान्त संत अतुलानन्द कान्वेन्ट स्कूल की बालिकाओं द्वारा प्रस्तुत गीत 'चन्दन है इस देश की माटी' ने अद्भुत छटा प्रस्तुत की। इसके बाद 'दण्ड संचालन' समिति की बालाओं ने किया। संत अतुलानन्द स्कूल की 'महिषासुर संग्राम' प्रस्तुति ने पूरा वातावरण ही 'देवी' की उपस्थिति से गुंजायमान कर दिया। इसके साथ-साथ लिटिल कान्वेन्ट स्कूल, चिरईगांव व विवेकानन्द विद्या भारती, होली हार्ट स्कूल, नितिन कान्वेन्ट स्कूल तथा समिति की सीता शाखा, अदिति शाखा, दुर्गा शाखा, रामनगर शाखा, जान्ह्वी शाखा की प्रस्तुतिकरण अंजू सिंह, उर्मिला जायसवाल, रंजना श्रीवास्तव, डा. प्रियदर्शिनी तिवारी, अनुप्रिया अग्रहरि, सुनीता, शशि, पायल सोनी, अंजू अग्रवाल आदि के योगदान से हुई। इसके अतिरिक्त श्रीमती मीना चौबे के महारानी लक्ष्मी बाई बालिका विद्यालय इण्टर कालेज बेटाबर की प्रस्तुति को सराहा गया। अन्त में श्रीमती कविता ने वंदेमातरम की समधुर से वातावरण गुंजायमान होगी। कार्यक्रम का सफल संचालन डा. रंजना श्रीवास्तव ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन पायल सोनी ने किया। कार्यक्रम में रामप्यारे चौबे, सुरेन्द्र मिश्रा, त्रिलोक नाथ शुक्ला, नन्दलालजी, अरुण कुमार श्रीवास्तव, रवि, रजनीश मिश्रा, श्रीमती वीणा पाण्डेय आदि सैकड़ों लोग मौजूद थे।

प्रकाशोत्सव

नानक देव के प्रकाश पर्व की रही सारे जहां में धूम
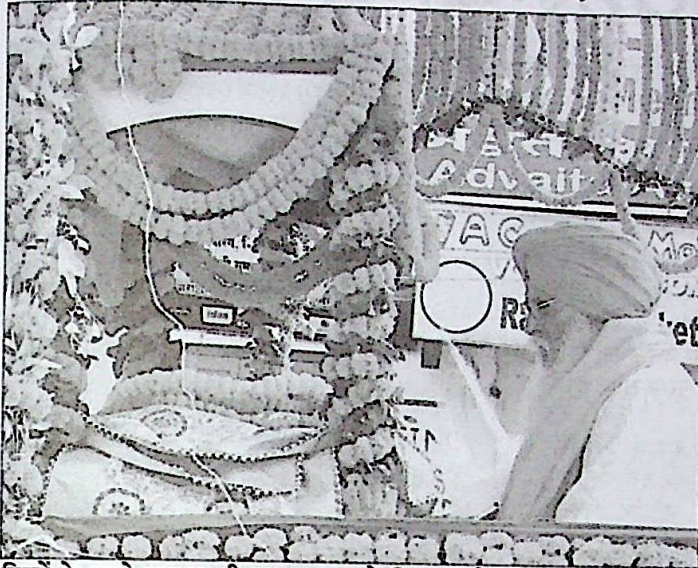
सिखों के पहले पातशाह श्री गुरु नानक देव जी महाराज के 549 वें प्रकाशोत्सव की धूम सारे जहां में देखी गयी। प्रकाश पर्व के पूर्व शहर में शोभा यात्रा निकाली गयी। इस शोभा यात्रा के चलते काशी की सड़कों पर पंजाब सा नज़ारा देखने को मिला। शोभा यात्रा में नर-नारी, बच्चे, बुजुर्ग सभी शामिल थे।

नानक देव के प्रकाशोत्सव केआगमन की खुशी में गुरुद्वारा प्रबंध कमेटी की देख रेख में गुरुद्वारा गुरुबाग से दोपहर गुरुगंथ साहिब जी की भव्य शोभा यात्रा श्रद्धापूर्वक निकाली गयी। फूलों से सुसज्जित रथ पर विराजमान गुरुग्रंथ साहिब जी के दर्शन कर संगत-भक्त निहाल हो उठें। इस मौके पर वाहे गुरु बोले सो निहाल सत् श्री अकाल...जैसे बोल फिज़ा में गूंज रहे थे। नानक देव की याद में हो रहे इस आयोजन के चलते लोगों के ज़ेहन में गुरु नानक देव महाराज के वचन...विनवेदियन के कुल विखे प्रगटे नानक राई। सभ सिक्खन को सुख दिए जह भर सहाई...ताजा हो उठें।

गुरुग्रंथ साहिब की अगुवाई में निकली इस नगर शोभा यात्रा में सबसे आगे पंज प्यारे घोड़े पर सवार, पंज प्यारे पैदल चल रहे थे तो उनके पीछे गुरु नानक इंग्लिश स्कूल, गुरुनानक खालसा बालिका इंटर कालेज व समाज की अन्य छात्राएं कतारबद्ध होकर कीर्तन करते हुए चल रही थीं। यह नज़ारा लोगों को देखते ही बन रहा था। शोभा यात्रा में कराटे दल और गतका पार्टी कर्तब दिखाते हुए चल रहे थे।

स्वच्छता मूल शिक्षा में शामिलः

शोभा यात्रा में आगे-आगे हाथों में बड़ा-बड़ा झाड़ू लिये तमाम महिलाएं, पुरुष, युवक युवतियां शोभा यात्रा की पवित्रता के लिए सड़कों की सफाई करते हुए चल रहे थे। यही नहीं कीर्तन जत्थे में महिलाओं का जत्था भी भजन-कीर्तन करते हुए कतारबद्ध चल रहा था।

शोभायात्रा बैंड पार्टी, घोड़े के साथ ही गुरुद्वारा गुरुबाग से निकल कर लक्सा, गिरजाघर, नईसड़क, चेतगंज, लहुरबीर होकर लाजपथ नगर, मलदहिया पहुंची जहां पर शोभा यात्रा का ज़ोरदार स्वागत

किया गया। मलदहिया से नानक नगर, सिगरा, रथयात्रा होते हुए वापस गुरुद्वारा गुरुबाग पहुंच कर शोभा यात्रा शाम में संपन्न हुई। शोभायात्रा जिन जिन रास्तों से होकर गुजरी रास्ते भर उसका स्वागत करने की भी लोगों में होड मची हुई थी। शाम में गुरुद्वारा गुरुबाग में भाई सुखदेव सिंह ने अरदास कराया। अरदास के बाद गुरु का लंगर लोगों ने छका।

प्रकाश पर्व की रही शहर में धूम

सिख धर्म के पहले पातशाह श्री गुरु नानक देव महाराज के 549 वें प्रकाशोत्सव की शहर भर में धूम रही। यह गुरु पर्व अलौकिक मान्यता के साथ गुरुद्वारा गुरुबाग में बड़े ही धूमधाम और श्रद्धा के साथ मनाया गया। प्रकाशोत्सव का आगाज़ भोर में 3.30 बजे गुरुग्रंथ साहिब के शहाना स्वागत फूलों से लदी पालकी में कीर्तन भजन द्वारा किया गया। जिसमें सैकड़ों लोगों ने फूल वर्षा की। तत्पश्चात् 4.15 बजे से प्रातः 5 बजे तक नाम सिमरन का दौर चला। प्रातः 5 बजे से 7 बजे तक कीर्तन-आसा दीवार, एवं 7.30 बजे श्री अखण्ड पाठ साहिब की समाप्ति हुई। कथा व कीर्तन दरबार की जो शुरुआत प्रातः 7.30 बजे हुई वो दोपहर तक तक अनवरत चलती रही।

प्रकाशोत्सव में पंथ के रागी जत्थे भाई कुलदीप सिंह हुजूरी रागी जत्था, दरबार साहिब, अमृतसर, भाई सुरेन्दर सिंह लुधियाना, भाई नरेन्द्र सिंह व भाई रकम सिंह हजूरी रागी जत्था गुरुद्वारा गुरुबाग व नीचीबाग ने संगत को निहाल किया। भईया अनंद जगत विचि, कल तारण सगली चिंत मिटाई, व, गगन मै थाल रवि चन्द दीपक बने, तारिका मंडल जनक मोती आदि...शबद, गुरुवाणी, कीर्तन द्वारा संगत को निहाल किया। इस दौरान गुरुद्वारा रोशनी में नहाया हुआ था। विद्युतीय झालरों से गुरुद्वारा देखते ही बन रहा था।

गुरुद्वारा संगत चेतन मठ

गुरुद्वारा संगत चेतन मठ में गुरु नानक जयंती पर अरदास एवं कीर्तन का आयोजन हुआ। कीर्तन के बाद लोगों में प्रसाद वितरित किया गया। यहां संत प्रीतम सिंह ने लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि गुरु का उत्सव जिस तरह हम मना रहे हैं वैसे ही जरूरत है कि हम उनके आर्दश और उनकी वाणी पर अमल करें ताकि पाखंड, छूआछूत समेत तमाम बुराईयां समाज से दूर हो सके। यहां पूर्व विधायक अजय राय, पूर्व ब्लाक प्रमुख देवेन्द्र सिंह, प्रो. एके सिंह, राकेश सिंह, पांडेय जी आदि मौजूद थे। संत बलविन्दर सिंह ने लोगों को प्रसाद वितरित किया।

गुरु का लंगर छकने जुटे सभी

संगत चेतन मठ में गुरु का लंगर छकने लोगों का हुजुम उमड़ा, यहां संत प्रीतम सिंह व बलविन्दर सिंह खुद लोगों को लंगर खिला रहे थे। ऐसे ही गुरुद्वारा गुरुबाग में दोपहर 12 बजे से गुरु महाराज के प्रसाद का अटूट लंगर जो शुरू हुआ वो शाम 4 बजे तक चलता रहा। इसमें हज़ारों की संख्या में आये सिख श्रद्धालु, शहर के प्रमुख लोग व पर्यटक ने लंगर का प्रसाद छका और गुरुद्वारे में मत्था टेका।

गुरुद्वारा गुरुबाग में ठहरे थे नानक देव

सिख धर्म के प्रवर्तक, पहले पातशाह गुरुनानक देव की काशी यात्रा का गवाह बनारस का गुरुबाग स्थित वह गुरुद्वारा है जहां स्वयं कभी नानक देव कई शहरों की यात्रा करते हुए पहुंचे थे। बात आज से लगभग पांच सौ वर्ष पूर्व
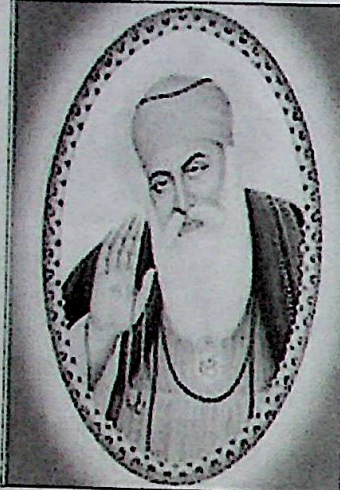
कि है, जब नानक देव काशी आये थे, उनके पाविञ कदम यहां पड़ने से काशी नगरी धन्य हो उठी थी और जिस स्थान पर नानक देव ठहरे थे वह स्थान एक बाग था जो बाद में गुरु नानक जी के आने से ही गुरुबाग नाम से मशहूर हुआ और वहां तामीर हुआ सिख धर्म का प्राचीन गुरुद्वारा, गुरुबाग। जी हां यह गुरुद्वारा आज गुरुद्वारा गुरबाग नाम से मशहूर है।

दरअसल काशी को धर्म की नगरी इसीलिए कहा जाता है क्योंकि यहां सभी मजहब का संगम देखने को मिलता है। यहां गली कूंचों में औलियाओं के अगर आस्ताने, मस्जिद और मकबरे हैं तो बाबा भोले की इस नगरी में देवताओं के मंदिर व मठ भी। इसी तरह यहां गुरुद्वारे व गिरजाघर भी बनारस की मजहवी कड़ी को मजबूत करते हैं। सिखों का इस पावन नगरी से उतना ही लगाव है जितना पंजाब और सिंध से। इसका सबसे मुख्य कारण यह है कि इस नगरी में सिख धर्म के प्रवर्तक गुरुनानक देव महाराज न सिर्फ यहां आए थे बल्कि उन्होंने इस पावन नगरी में कई चमत्कार दिखाए थे।

गुरुद्वारा संगत चेतन मठ के महंत संत प्रीतम सिंह इतिहास के पन्नों को पलटते हुए बताते हैं कि उस दौर में कलयुग के फैले हुए पंखों पर बैठकर पाखंड और अधर्म अपनी ऊंची उड़ान भर रहे थे तो दूसरी ओर अज्ञानता व अंध विश्वास के बाद जुल्मों का तांडव था। धर्म ऊंच नीच छूआछूत के भेद-भाव की भुल भुलैया में भटक रहा था। ऐसे ही विकट समय में प्रकाश का पुंज लेकर आज से तकरीबन पांच सौ वर्ष पूर्व जगत गुरु नानक देव महाराज भटके हुए मानव को राह दिखाने के लिए नाम जपना, बांट कर खाना व सत्संग करने का अलख जगाते हुए लोगों को अकाल पुरख से जोड़नें के लिए यात्रा पर निकले थे।

गुरुद्वारे से जुड़े सरदार परमजीत सिंह अहलूवालिया बताते हैं कि नानक देव सुल्तानपुर लोदी से चलकर कुरुक्षेत्र, हरिद्वार, दिल्ली, अलीगढ़, कानपुर, लखनऊ व प्रयाग होकर सम्वत् 1563 में शिवरात्रि के दिन शिव की नगरी काशी में वो अपने शिष्यों बाला-मरदाने सहित पहुंचे थे। वो कमच्छा स्थित एक रमणीय बाग में विराजमान हुए थे। यहां पर गुरु नानक देव महाराज के चरणों में उस दौर के कई महापंडित नतमस्तक हो गए थे। इनमें पंडित गोपाल शास्त्री, पंडित धर्मदास, पंडित चतुरदास मुख्य रूप से शामिल है। इनसे ही यहां पर शास्त्रार्थ हुआ और इन लोगों ने अंततः नानक देव के सामने अपना शीश झुका दिया।

इतिहास का दस्तावेज़ गुरुद्वारा गुरुबाग: वर्तमान गुरुद्वारे का निर्माण 1969-70 में गुरु नानक जयंती पर किया था। अपने भीतर उस दौर की अनूठी वास्तुकला और इतिहास की बेशकिमती धरोहर यह गुरुद्वारा बनारस आने वाले पर्यटकों को भी अपनी ओर आकर्षित करता है। गुरुद्वारा अपनी खूबसूरती और नक्काशी के लिए भी जाना जाता है। गुरुद्वारे की खूबसूरती देखते ही बनती है। गुरुद्वारा प्रबंध कमेटी द्वारा संचालित गुरुद्वारे में संगतों के ठहरने के लिए दर्जनों कमरे बनाये गये हैं तो बड़े हाल में गुरुग्रंथ साहिब का प्रकाश है। गुरुद्वारे के ठीक बगल में ही गुरु नानक खालसा इंटर कालेज का निर्माण भी गुरु नानक देव की आस्था से प्रेरित होकर किया गयां था। गुरुद्वारे में ही गुरुनानक जी के नाम पर एक पुस्तकालय है। जहां लोग पुस्तकों से ज्ञान प्राप्त करते दिखाई देते हैं। इस गुरुद्वारे से केवल सिख ही नहीं अन्य धर्मो को भी आस्था है।
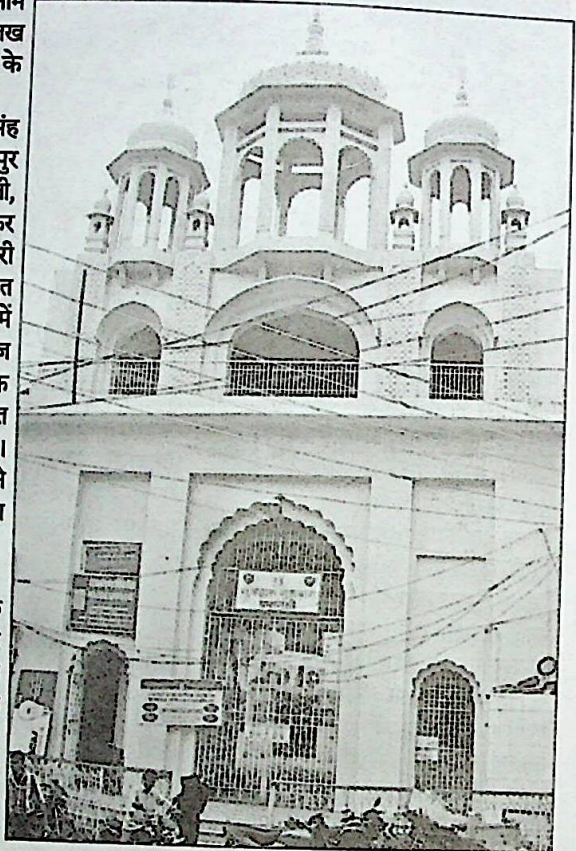
सोनिया के संसदीय क्षेत्र में रेखा की एंट्री

रायबरेली। मशहूर सिने तारिका व राज्य सभा सांसद रेखा ने अपनी सांसद निधि कोटे से रायबरेली के विकास के लिए 2.5 करोड रुपये दिये है ये रुपये रेखा ने सांसद निधि कोटे से दिया है। इन रुपयों से क्षेत्र में बिजली, पानी और सड़क जैसी मूलभूत सुविधाओं का काम कराया जाएगा।

विकास के लिए आयीं आगे

फिल्मी दुनिया में अपनी अदाकारी से सबका दिल जीतने वाली अभिनेत्री रेखा की नजर अब रायबरेली के विकास पर है। कांग्रेस अध्यक्षा सोनिया गांधी के संसदीय क्षेत्र रायबरेली में विकास कार्यो के लिए उन्होंने अपनी सांसद निधि से करोड़ों रुपये दिये है। रेखा का रायबरेली से यूं तो कोई सीधा नाता नहीं है। बताया जा रहा है कि उन्होंने खुद संप्रग अध्यक्ष सोनिया गांधी से उनके संसदीय क्षेत्र में विकास कार्यो को गति देने के लिए सांसद निधि खर्च करने की इच्छा जतायी। हालांकि, इससे पूर्व राज्यसभा सदस्य कैप्टन सतीश शर्मा भी रायबरेली की बेहतरी के लिए अपनी सांसद निधि दे चुके है। जनवरी 2017 में रेखा की सांसद निधि से रायबरेली को 1.44 करोड़ रुपये की धनराशि मिली। इससे सोलर लाइट, हैडपंप, इंटरलॉकिंग, सीसी रोड बनाने का काम हुआ। अक्टूबर 2017 में स्वीकृति 1.42 करोड़ की निधि से 1.06 करोड़ प्रशासन को मिल चुके है। शेष 25 फीसद राशि विकास कार्य पूर्ण होने पर मिलने है।
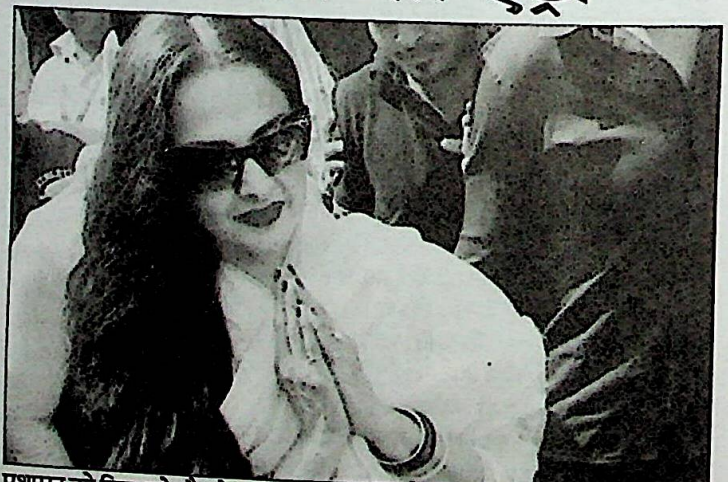
रंगारंग कार्यक्रमों संग नन्हें मुन्नों ने मोहा मन

हरिहर लाल मेमोरियल सनशाइन स्कूल रामापुरा में दीपोत्सव का रंगारंग कार्यक्रम धूमधाम से मनाया गया। संस्था के निदेशक राहुल सेठ की अगुवाई में जहां नन्हे मुन्ने बच्चों ने खूबसूरत परिधानों में जमकर धमाल किया वहीं बच्चों ने नृत्य और नाट्य के ज़रिये लोगों को चाइनिज़ झालर से बचते हुए कुम्हार के हाथों से बने दीपक जलाने को प्रेरित किया। इस मौके पर बच्चों ने कई फिल्मी गीतों पर खूबसूरत एकल नृत्य व समूह नृत्य के ज़रिये अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। आयोजन में स्वाती, अदीबा, अक्सा, अमान, अयान, अब्दुल्लाह, शाश्वत, देवेश, आस्था, अभिषेक, रीषिका, अभिजीत, रूपाली, राहुल, हीदेश, श्रद्धा, नैंसी, क्रूश, आर्यन, आराध्या, विनायक, शशांक, फरहान, विमल, वाही, अक्शीनी व प्रिंस ने अपने नृत्य व फैंसी ड्रेस प्रोग्राम के ज़रिये लोगों को बांधे रखा। इस मौके पर तान्वी विश्वकर्मा, किरन, फरहा फिरदौस, प्रज्ञा, श्वेता, शिवांगी व अमित सिंह ने कार्यक्रम की व्यवस्था खूबसूरती से संभाले रखा।

डेयर संस्था ने मनायी दीवाली

डेयर संस्था की ओर से दीवली का आयोजन सारनाथ स्थित संस्था परिसर में धूमधाम से किया गया। सिस्टर मंजू और फादर अवि की अगुवाई में यहां बच्चों ने सैकड़ों दीपक से संस्था परिसर में आकर्षक सजावट की। यहां काफी संख्या में बच्चों ने गीत गाये, रंगोली सजायी और जमकर दीवाली का जश्न मनाया। सिस्टर मंजू ने कहा कि संस्था विभिन्न पर्वों और त्योहारों को मनाती है। इसी क्रम में रौशनी का पर्व दीपोत्सव भी यहां पूरी शान से मनाया गया। फादर अवि ने धन्यवाद दिया।

इनरव्हील उदया का सेवाकार्य

इनरव्हील क्लब वाराणसी नार्थ उदया व रोशनी पवित्रा सेवा समिति की ओर से सेवा कार्य काशी सेवा समिति में किया गया। इस मौके पर एसएसपी की धर्मपत्नी नेहा भारद्वाज बतौर मुख्य अतिथि रहीं। क्लब की ओर से बच्चों को दिवाली के उपहार प्रदान किये गये। तनु शुक्ला, पियाली, रौशनी, काजल आदि थीं।

हा. अब्दुल अलीम का इंतेक़ाल

अलईपुरा की मशहूर शख्सीयत हिन्दू-मुस्लिम एकता और सौहार्द की एक कड़ी हाजी अब्दुल अलीम का इंतेक़ाल हो गया। उनके इंतेकाल की खबर जैसे ही जलालीपुरा, अलईपुरा, बड़ी बाज़ार आदि इलाक़ों में पहुंची वहां अफसोस की लहर दौड़ गयी। उन्हें सुपुर्दे खाक करने पूर्व सांसद डा. राजेश मिश्रा, पूर्व विधायक हाजी अब्दुल समद अंसारी, हाजी रईस अहमद, हाजी तोराब, हाजी अमीनुद्दीन, हाजी ओकास अंसारी, अब्दुल वहाब, सरदार अजीजुल हक़्क़, अजीम हज़ारों लोग आदि आबाई कब्रिस्तान में पहुंचे हुए थे। परिवार से जुड़े हाजी ओकास ने बताया कि गरीबों की मदद करना और झगड़ों को सुल्ह कराके खत्म करने के लिए मरहूम हाजी अब्दुल अलीम पूरे इलाक़े में मशहूर थे। वो अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं।

नागनथैया लीला में तुलसी घाट पर उमड़ी आस्था

यमुना तट (गंगा) पर लीलाधारी वृंदावन बिहारी ने एक बार फिर अपनी लीला रचाई। आव देखा न ताव अपनी गेंद निकालने यमुना में छलांग लगाई। विषधारी कालिय नाग का फन नाथा और उसके फन पर सवार होकर वंशी बजाते, मंद-मंद मुस्काते बांके बिहारी जल से बाहर प्रकट भए। मोर मुकुटधारी की यह अद्भुत व अलौकिक छवि निहारते अनगिन श्रद्धालु धन्य हो गए।

'हर-हर महादेव' व 'वृंदावन बिहारी लाल की जय' संग घंट-घड़ियाल व शंख-डमरू चारो ओर गूंज उठें। नाव-बजड़ों से लेकर घाट की सीढ़ियों-मढ़ियों में अटे-पटे हजारों आस्थावानों ने नटवर नागर के मधुर मनोहर रूप को पूजा। यह पुनीत अवसर था काशी के लक्खा मेला के नाम से जगविख्यात नागनथैया लीला का, जिसका परम्परागत रूप से जीवंत मंचन अखाड़ा गोस्वामी तुलसीदास द्वारा तुलसी घाट पर पिछले दिनों सम्पन्न हुआ। इस दौरान अपराह्न साढ़े तीन बजे ब्रजविलास के गायन के साथ लीला आरम्भ हुई। सस्वर गूंजती चौपाइयों के बीच नारद मुनि, महाराज कंस के पास पहुंचते हैं। इसके साथ ही यमुना (गंगा) तट पर बलदाऊ, श्रीदामा और अन्य सखाओं संग कान्हा कन्दुक क्रीड़ा आरम्भ करते हैं। खेल के दौरान गेंद यमुना में चली गयी और नंदलला गेंद लेने के लिए यमुना में जाने की हठ करते हैं। मना करने के बावजूद ठाकुर जी नहीं माने। नदी किनारे कदम्ब के पेड़ पर चढ़े तो भक्तों के हृदय की धड़कनें बढ़ गयी। कान्हा ने पेड़ पर परिक्रमा करते हुए भक्तों को दर्शन दिए और यमुना (गंगा) में कूद पड़े। कुछ क्षण माहौल शांत मानो हर गतिविधि थम गयी। नदी में कालिय नाग का मर्दन कर उनके फन पर सवार होकर बांसुरी बजाते हुए बाहर निकले तो हर ओर जय-जयकार होने लगा। आरती की लौ और डमरुओं की डिम-डिम गूंज उठी। कालिय नाग के फन पर विराजमान बांके बिहारी ने भक्तों को दर्शन दिया।

इस मौके पर सबसे पहले संकट मोचन मंदिर के महंत प्रो. विश्वम्भर नाथ मिश्र ने ठाकुर जी को माला चढ़ायी। इसके पश्चात महाराजा काशी नरेश कुंवर अनंत नारायण सिंह की ओर से ठाकुर जी को माला चढ़ायी गयी। परिक्रमा पूरी करने के बाद तट से दुर्गा मंदिर महंत परिवार के विकास दूबे ने ठाकुर जी को कांधे पर बैठाया और सीढ़ियां चढ़ते हुए घाट के ऊपर स्थित राधा-माधव मंदिर के श्रृंगार घर ले गये। इसके साथ लीला विराम हुई। इस लीला में कालिया नाग का मर्दन करने वाले और यमुना में कूदने वाले कृष्ण का रूप संजीत दूबे और थल पर कंदुक क्रीड़ा करने वाले कृष्ण का रूप शुभम् पाण्डेय ने किया। बलराम का रूप पवन पाण्डेय, सुदामा का रूप हर्ष दूबे एव कंस के रूप में कृष्ण शंकर सिंह रहे। लीला देखने के लिए बटुकों संग संतोष दास सतुआ बाबा बजड़े से तुलसी घाट पहुंचे थे। उनके अलावा सर्वेश्वर शरण महाराज, रामलोचन दास, डा. राजेश्वर आचार्य, एथलिट नीलू मिश्रा आदि भी मौजूद थी।
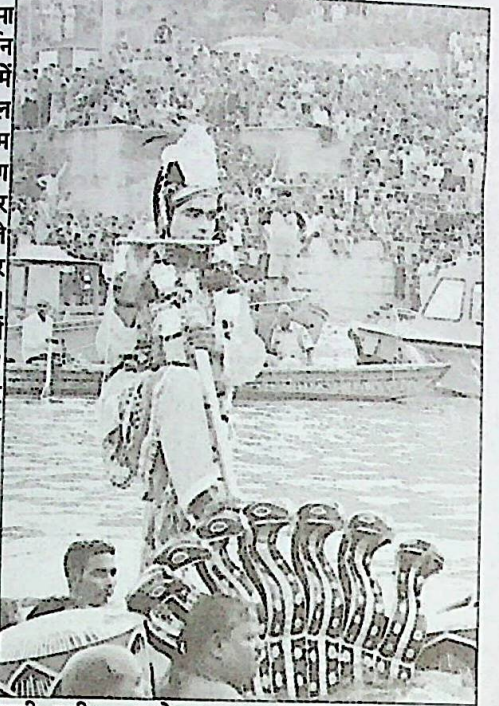
शेरे बनारस के उर्स में अक़ीदतमंदों का मजमा

मज़हरे फारुक़े आज़म हुजूर शेरे बनारस मौलाना शाह अब्दुल वहीद फरीदी फारुकी रहमतुल्लाह अलैह का 30 वां सालाना उर्स पूरी अक़ीदत के साथ पिछले दिनों आस्ताना हमीदिया शक्कर तालाब में मनाया गया। उर्स में फज्र की नमाज़ के पहले गुस्ल व नमाज़ के बाद कुरानख्वानी व हलक़ा-ए-जिक्र के साथ ही कुल शरीफ हुआ जिसमें देश के कोने-कोने से हज़रत शेरे बनारस से अक़ीदत रखने वाले पहुंचे हुए थे। मुफ्ती-ए-बनारस अहले सुन्नत मौलाना मोईनुद्दीन अहमद फारुक़ी प्यारे मियां की क़यादत में अस्र की नमाज़ के बाद खानकाह हमीदिया रशीदिया से चादर का जुलूस निकला। जुलूस में हज़ारों का मजमा शामिल था। यह जुलूस शक्कर तालाब, जलालीपुरा, अलईपुरा, नक्कीघाट आदि इलाक़ों से होकर पुनः वापस खानकाह पहुंचा जहां पर चादरपोशी हुई। ऐसे ही मगरिब की नमाज़ के बाद लोगों में तबर्रुक तकसीम किया गया।

सबके अज़ीज हैं शेरे बनारसः खानखाह हमीदिया रशीदिया स्थित हज़रत शेर-ए-बनारस मौलाना शाह अब्दुल वहीद फरीदी फारुकी रहमतुल्लाह अलैह सबके हैं। उनका हम पर एहसान बहुत है। उन्होंने लोगों को अपनी ज़ाहिरी जिन्दगी में नेकी की राह दिखाई। तकवा और परहेज़गारी उनकी रग-रग में बसा था। यही वजह है कि आपका आस्ताना शक्कर तालाब हर कौम की अकीदत का मरकज़ बना हुआ है। आस्ताने के सज्जादानशीं मौलाना मोइनुद्दीन अहमद फारुकी प्यारे मियां बताते हैं कि हुजूर शेरे बनारस रहमतुल्लाह अलैह की पैदाइश 11 रबीउस्सानी 1336 हिजरी को पितरकुंडा स्थित आबाई दौलतखाने पर हुई थी। आप पहुंचे हुए फक्कीर थे। आपके पास उस दौर में देश भर से आलीम और इस्लामी विद्वान आते थे। उनकी चर्चा देश भर में थी। हिजरी माह सफर की 13 तारीख को जुमेरात के मुबारक दिन शेरे बनारस ने इस दुनिया से पर्दा किया। आपका आस्ताना दरगाहे वहीदी शक्कर तालाब में है जहां बड़ी से बड़ी परेशानी में जकड़ा हुआ इंसान आता है तो वो यहां राहत महसूस करता है। यहां देश भर से अकीदतमंद उर्स में पहुंचे हुए थे।

मुशायरे में पेश हुए कलामः उर्स के मौके पर तरही नातिया मुशायरे का आयोजन मौलाना वहीद सिद्दीकी की सदारत में हुआ, जिसमें हलीम हाज़िक कोलकाता, यावर वारसी कानपुर, जावेद सिद्दीकी गोंडा, संदल जलालपुरी, अहमद आज़मी वगैरह ने अपनी नातिया शायरी के ज़रिये लोगों को फैज़याब किया। दूसरे दिन जलसा-ए-दस्तारबंदी में मदरसों के तलबा को दस्तारे फजीलत पहनायी गयी। जलसे में मौलाना बादशाह हुसैन बेलग्रामी, मौलाना इरफ़ान हनफ़ी, मौलाना इक़बाल मुरादाबादी, मौलाना वाहिद सिद्दीकी गोण्डा और मौलाना शकील अहमद संभल आदि कई उलेमा ने हिस्सा लिया।

नमाज़ की पाबंदी पर ज़ोर

राजापुरा के शेषमन बाज़ार में शहीदाने कर्बला की याद में जलसे का एहतमाम कारी मुजफ्फर हुसैन ने पाक कुरान की तेलावत से किया। मौलाना गुलाम नबी साहब की सदारत में हुए जलसे में मौलाना आलमगीर अशरफ ने कहा कि शहीदाने कर्बला ने जंग के मैदान में भी नमाज़े नहीं छोड़ी। इमाम हुसैन ने अपनी शहादत दे दी मगर कर्बला के मैदान में नमाज़ भी अदा की और तेलावत भी किया मगर हम आज पांच वक्त नमाज नहीं अदा कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि अगर दिल में खुदा का खौफ ज़रा भी है तो नबी और उनके नवासे के बताये हुए रास्तों पर चलो, पांचों वक्त की नमाज़ की पाबंदी करो, बुराईयों का रास्ता छोड़ कर नेकी के रास्ते पर चला। मौलाना मो. आज़म ज़ियाई की निज़ामत में हुए जलसे में तंज़ीम आशिकाने अहले बैत के नवजवान व्यवस्था संभाले हुए थे। जलसे में अशफाक अहमद डबलू, हाजी नासिर जमाल, हबीबुल्लाह, जावेद अंसारी थे।

...हम इंकलाब है हमको दबा नहीं सकते

हमारी फिक्र पे पहरा लगा नहीं सकते, हम इंकलाब है हमको दबा नहीं सकते...मशहूर शायर अहमद आज़मी ने जब यह कलाम डा. अमृत लाल इशरत की याद में पराड़कर भवन में आयोजित जश्ने इशरत में पेश किया तो मजमा झूम उठा। निजाम बनारसी ने लोगों का मिजाज अपने इस कलाम से बदला, दिल के तपते हुए सेहरा में कभी आके सनम, फूल हसरत के खिलाओ तो गज़ल हो जाये, कब्र की कैद मुकम्मल नहीं होने देती, जुल्फ चेहरे से हटाओं तो गज़ल हो जाये...। ऐसे ही डा. शाद मश्रिकी ने सुनाया, दौरे ग़म में आयेंगे चन्द ऐसी राते भी, याद जागती होगी दर्द सो गया होगा...। शमीम गाज़ीपुरी भी खूब पसंद किये गये, बहुओं को फूंकने का नहीं आयेगा ख्याल, बेटी की अपनी उंगली जलाकर तो देखिये...। सेतु के तत्वावधान व समर गाज़ीपुरी के संचालन में हुए मुशायरे में विनय कपूर गाफिल, सैयद अज़फर बनारसी, नवाब अहमद नवाब, मेयार स्नेही, प्रतिमा सिन्हा सहर, नरोत्तम शिल्पी, रामिश दिलावरपुरी ने भी महफिल लूट ली। इससे पहले दीपक मधोक, हर्ष मधोक, सलीम राजा, व मेयार सनेही आदि ने शमां रौशन करके मुशायरे का आगाज़ किया। जिसमें शाद मश्रिकी, मेयार सनेही, विनय कपूर गाफिल, नवाब अहमद व निज़ाम बनारसी को इशरत एवार्ड से नवाज़ा गया।
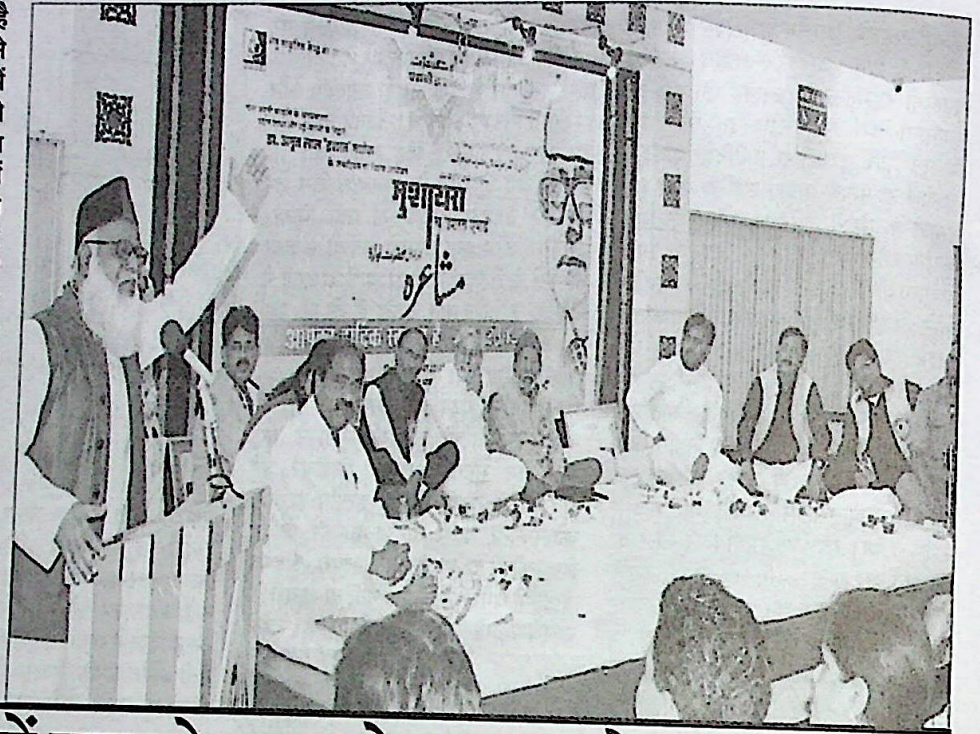
खालिद की शायरी में सबको साथ लेकर चलने का संकल्प

पराड़कर स्मृति भवन में काशी के युवा उर्दू कवि खालिद जमाल के काव्य संकलन शरीके हर्फ का विमोचन करते हुए पिछले दिनों वरिष्ठ उर्दू साहित्यकार व पत्रकार शमीम तारिक ने कहा कि खालिद जमाल की शायरी गज़ल की शायरी है। गज़ल उर्दू शायरी का एक फार्म भी है और सम्पूर्ण संस्कृति भी। उन्होंने कहा कि खालिद जमाल ने इस संस्कृति को जबरदस्ती नहीं ओढ़ा,बल्कि वो उर्दू गज़ल के कई रंग इस तरह घुल मिल गये हैं कि एक नया रंग वजूद में आ गया है। इस रंग में मोहब्बत का एहसास भी है। विरोध की आहट और सबको साथ लेकर चलने का संकल्प भी।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय उर्दू विभाग के प्रवक्ता डा. आफताब अहमद आफाकी ने कहा कि खालिद जमाल की शायरी समकालीन उर्दू काव्य परिदृश्य पर एक मजबूत हस्ताक्षर है। उनकी ग़ज़लों के विषयों में जो विविधता है वो हमारे काल के सामूहिक और व्यक्तिगत तजुर्बो की पैदावार है। जिनके अध्ययन से समकालीन संस्कृति और सभ्य मनुष्यों पर इस संस्कृति के प्रतिक्रिया का अंदाज़ा लगाया जा सकता है। विमोचन समारोह की अध्यक्षता करते हुए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय उर्दू विभाग के अध्यक्ष प्रो. याकूब यावर ने खालिद जमाल की शायरी पर विस्तृत चर्चा करते हुए कहा कि 1960 के बाद हमारी शायरी ने अभिव्यक्ति के ऐसे ऐसे बेहन्नाम तरीके निकाले और उसे आधुनिकता का नाम दिया कि समय के साथ साथ ये शब्दावली भी बहुत बदनाम हो गयी। एक पूरी योग्य नस्ल इस धमाचौकड़ी में बर्बाद हो गयी। ऐसे में खालिद जमाल की शायरी समझदारी और नासमझी के बीच में एक पुल का काम करती है। खालिद के बेहतर मुस्तकबील की हम सब उम्मीद करते हैं। इस मौके पर खालिद ने अपनी ग़ज़लों को पढ़कर जब सुनाया तो तमाम लोग उन्हें दाद देते नज़र आये। डा. सलमान रागिब के कार्यक्रम का संचालन किया तो बेखुद गाज़ीपुरी ने आये हुए लोगों का शुक्रिया अदा किया।

बहारों के मौसम

बहारो के मौसम में
जब शज़र नहाते है
फूल मुस्कुराते हैं,
मोर चहचहाते हैं।

खिड़कियों के शीशों पर,
बूंदे जब थिरकती है।
मिल के रक्स करती हैं,
चाय की प्याली से

जब धुंआ सा उठता है
एक ख्याल फिर दिल में
शक्ल सी बनाता है
कोई याद आता है

जिसको याद करके
फिर दिल उदास होता है
बारिशों के मौसम में
ऐसा अक्सर होता है

शबाना परवीन

हमें है आपके स्वास्थ्य का ख्याल

क्या आपके बाल ज्यादा टूट रहे हैं

बालों का लंबा, घना, मुलायम और चमकदार होना ना सिर्फ लड़कियों बल्कि लड़कों की भी पहली चाहत होती है। लेकिन आजकल के बिगड़ती लाईफ स्टाइल का सीधा असर न सिर्फ हमारे स्वास्थ्य बल्कि बालों पर भी देखने को मिल रहा है। यानी कि बालों का वक्त से पहले झड़ना, टूटना और रफ होना आजकल एक आम समस्या सी बन गई है। लंबे बाल पाने के लिए आजकल लोग क्या क्या नहीं करते? लेकिन फिर भी कुछ ना कुछ कमी रह ही जाती है। आपको लंबे बालों के लिए यह जानना ज़रूरी है कि आखिर आप ऐसी कौन सी गलतियां कर रहे हैं जिनसे आपके बाल इतने झड़ रहे हैं। साथ ही ये भी जानने की जरूरत है कि वो कौन से हेल्थी उपाय हैं जिन्हें अपनाकर आप अपने बालों की ग्रोथ को बढ़ा सकते है। लंबे बाल पाने के लिए सिर्फ अच्छे उत्पादों का इस्तेमाल ही जरूरी नहीं बल्कि बालों की सही देख रेख भी जरूरी है। एक रिपोर्ट...

सुंदर बाल ना सिर्फ दिखने में अच्छे लगते हैं बल्कि ये हमारी पर्सनालिटी में भी चार चांद लगाते है। बालों को खूबसूरत और लंबा करने में प्रोटीन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रोटीन युक्त आहार आपके बालों की खूबसूरती बढ़ाने का काम करता है। बाल केराटिन नामक प्रोटीन से ही बनते है और खाने में उचित प्रोटीन लेकर आप आपने बालों को चमकदार, मजबूत और खूबसूरत बनाये रख सकते है। यानी कि बालों के टूटने की सबसे बड़ी वजह शैपू नहीं, बल्कि शरीर में पोषक तत्वों की कमी होना है। इसके लिए शरीर में प्रोटीन की मात्रा सही रखना बहुत आवश्यक होता है। इसलिए अपने आहार में ऐसी चीजों को शामिल करें जिनमें प्रोटीन की भारी मात्रा मौजूद हो।

आज हम आपको बालों को कुछ ही दिनों में लंबा करने का एक उपाय बता रहे है। इसके लिए आपको कुछ भी बाजार से खरीदने की जरूरत नहीं है। बल्कि सब कुछ आपको बहुत आसानी से अपनी रसोई में ही मिल जायेगा। इसे बनाने के लिए सरसों का तेल, तिल का तेल, नारियल तेल और अरंडी के तेल को आपस में मिक्स कर के एक मिश्रण तैयार कर लें।

अब एक बर्तन में कच्चे आमले का रस निकालें। इसके बाद इसमें कड़ी पत्ते का रस, जटामांसी का चूर्ण, भृंगराज और ब्राह्मी के पत्ते के रस को अच्छी तरह साथ में मिक्स कर लें। अब इन सबको ऊपर तैयार हुए तेल में मिक्स कर लें। अब इसे हल्की आंच पर करीब आधा घंटा पकाएं। पानी उड़ जाने पर बोतल में भर दें और फिर इस मिश्रण को 1 दिन के लिए ऐसे ही रहने दें। अगले दिन से इस मिश्रण से बालों में हल्के हाथों से मालिश करें। सिर्फ 3 दिन तक ऐसा करने आपको खुद अपने बालों में फर्क दिखेगा।

पत्ता गोभी दें बालों को खूबसूरती

पत्तागोभी भी लम्बे और घने बालों का सीक्रेट है, इसका असर 3 दिन में साफ दिखाई देता है। आजकल बिगड़ते लाइफ स्टाइल और बढ़ते प्रदूषण के चलते सुंदर और घने बाल पाना ना सिर्फ लड़कियों बल्कि लड़कों की भी चाह हो गई है। हर कोई अपने झड़ते और पतले बालों से परेशान है। व्यक्ति का हेयर स्टाइल उसकी सुंदरता और व्यक्तित्व में चार चांद लगा देता है। लेकिन बिगड़ते लाइफ स्टाइल के कारण बालों की समस्या हमारी पर्सनालिटी पर धब्बा लगा रही है। बालों का झड़ना और वक्त से पहले ही सफेद होने की समस्या से कोई भी अछूता नहीं है। लेकिन आहार में पोषक तत्वों की कमी और हार्मोन के असंतुलन के कारण बाल पतले होने का सबसे बड़ा कारण है। आज हम इस लेख में आपको बता रहे है कि रोजाना सब्जी के तौर पर इस्तेमाल होने वाली पत्तागोभी से आप अपने बालों को लम्बा और घना कैसे बना सकते हैं। दरअसल हमारे बाल केरोटीन नामक प्रोटीन से बने होते है। यानी प्रोटीन हमारे बालों में होता है, इसलिए भोजन में प्रोटीन का बहुत महत्व होता है।

आमतौर पर हर महीने बालों की लंबाई 1.25 सेमी बढ़ती है। पहले बालों की समस्या के लिए उम्र, लिंग, मौसम आदि कारण जिम्मेदार होते थे, लेकिन अब इसके लिए हमारी जीवनशैली सबसे अधिक जिम्मेदार हो गई है। फिर भी आप प्राकृतिक तरीकों को आजमाकर अपने बालों को घने व मजबूत बना सकते है। आज हम जिस घरेलू नुस्खे की बात कर रहे है उसका नाम है पत्ता गोभी। जी हां, ये एक ऐसी सब्जी है जिसमें भारी मात्रा में सल्फर और लौह तत्व पाए जाते है। पत्ता गोभी का नियमित सेवन करने से बालों का झड़ना तो बंद होता ही है साथ ही बाल दोगुनी तेजी से बढ़ते भी है।

पत्ता गोभी को आप सब्जी और सलाद के रूप में सेवन सकते है। इसके अलावा पत्ता गोभी का बारीक पेस्ट बनाकर आप मुल्तानी मिट्टी के साथ बालों पर लगाएं। ऐसा करने से 15 दिनों में ही बालों का झड़ना, सफेद होना और गंजापन से छुटकारा मिलता है। प्रकृति के खजाने में इसके अलावा भी बहुत से नुस्खें है। जिनका प्रयोग करके आप आसानी से बालों को मजबूत और घना बना सकते है। बालों को मजबूत बनाने के लिए तनाव और सकारात्मक सोच भी बहुत जरूरी है।

भाई-भतीजे की कुटनीति

भारतीय संस्कृति में रिश्ता या सम्बंध का अत्याधिक अहमियत दी गई है। रिश्तों के प्रति पश्चिमी देशों की अपेक्षा हमारे देश में काफी संस्कार और मर्यादा है। परन्तु वर्तमान परिवेश में रिश्तों का स्तर काफी निम्न होता जा रहा है। आज रिश्तों का अर्थ संकुचित और सकीर्ण हो गया है। रिश्ते शब्द का उपयोग अंग्रेज़ी के रिलेटीव के रूप में किया जा रहा है। हालांकि रहीम दास जी के वचन में यह अपने सामान्य अर्थ के साथ आया है। रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय, टूटे से फिर न जुड़ै, जुड़ै गांठ पड़ जाए।। रिश्ता मानवीय स्वभाव का अंग है, जो मनुष्यता को चेतना प्रदान करता है। रिश्ता मनुष्य की दिनचर्या है। जिसके द्वारा वह समाज, वर्ग, राष्ट्र तथा परिवार के विकास की प्रक्रिया को उत्प्रेरित करने में अपना अहम योदान देता है। प्रत्येक मनुष्य अपने दायित्व का निर्वाहन करते हुए अपना और अपने परिवेश की उत्तरोत्तर प्रगति का संवाहक हो उसे रिश्ते का सही निर्वाह करने वाला कहा जा सकता है। यह कहानी भी ऐसे ही रिश्तों पर अधारित है जिसमें वासुदेव ने अपने दो भतीजों को अपने परिश्रम एवं नीजी जायदाद से पढ़ा-लिखा कर उसे मंजिल दिखाई मगर क्या वासुदेव के प्रति दोनों भतीजों ने मानवीय मूल्यों का साथ दिया? जानने के लिए पढ़े पूरी कहानी...

मनोज यादव

चाचा बासुदेव गांव से स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के पश्चात् सरकारी नौकरी करने दूसरे राज्य में जाकर रहने लगे। वो जब गांव में थे तो अपने बड़े भाई के बेटे धरमू को बहुत ही लाड-प्यार से पाला था, क्यों कि धरमू की मां बचपन में ही स्वर्ग सुधार गयी थी। धरमू को अपने पुत्र की तरह पढ़ाई-लिखाई का खर्च देना, अपने हिस्से का दूध दही देना, चाचा वासुदेव की गांव में मिसाल बन गयी थी। तभी चाचा वासुदेव सरकारी नौकरी करने लगा। लेकिन चाचा वासुदेव का मन अपने भतीजे धरमू के प्रति कम नहीं हुआ और वो अपने वेतन से धरमू को पढ़ाई करवाता रहा। धरमू पढ़ता भी रहा। चाचा वासुदेव ने अपने पैतृक खेत को अपने छोटे भाई नीरू को सौंप दिया, और कहा कि इस खेती से अपने बेटे को पढ़ाओ, नीरू ने भी वैसा ही किया। नीरू का बेटा भी पढ़ा और नौकरी करने लगा। उधर धरमू भी सरकारी अध्यापक के पद पर आसीन हो गया था। संयोगवंश चाचा वासुदेव के ही जिले में धरमू अध्यापक था। घर परिवार खुशहाल था। लेकिन वासुदेव और भाई नीरू के बीच पैतृक खेत को लेकर कुछ कहा सुनी हो गयी। जिससे कि नीरू एवं उसके पुत्रों ने चाचा वासुदेव का कोई एहसान न रखते हुए मन ही मन सामाजिक एवं आर्थिक क्षति पहुंचाने का मन बना लिया था। मन ही मन इनकी ईर्ष्या बढ़ती जा रही थी।

नीरू को इस बात का घमंड हो गया था कि अब तो मेरे बेटे सरकारी सेवा में हैं, हम कमज़ोर नहीं है। वासुदेव की कोई ज़रूरत अब हमें नहीं है। संयोगवश नीरू ने अपने बेटे की शादी बिना वासुदेव से कोई राय मशवरा लिये ही तय कर दी, यहां तक कि कोई जानकारी भी वासुदेव को होने नहीं दिया। यहां तक कि शादी का दिन और समय भी तय हो गया। उधर शादी से पांच दिन पूर्व वासुदेव परिवार के त्रयोदश संस्कार में गांव आया हुआ था, लेकिन धरमू, नीरू और प्रेम ने उससे शादी का कोई जिक्र तक नहीं किया। वासुदेव जहां नौकरी में था वहीं एक छोटा सा मकान बनवाया हुआ था, वो वहीं लौट गया। धरमू वासुदेव के घर से कुछ ही दूरी पर रहता था, लेकिन नीरू और प्रेम धरमू के घर तो आ जाते थे मगर वासुदेव के घर जाने की सोचते भी नहीं थे। शादी की तैयारी के लिए दोनों धरमू के यहां आये मगर वासुदेव के घर नहीं गये और न ही उसे भनक लगने दी कि शादी की मार्केटिंग के लिए वो आये हुए हैं। हां शादी का जब कार्ड छपने लगा तो उसमें समाज में चाचा की मान-प्रतिष्ठा को देखते हुए उच्च स्थान आकांक्षी में चाचा का ही नाम दिया। समाज में कार्ड का वितरण भी शुरू हो गया। समाज के लोगों ने जब कार्ड देखा और पढ़ा तो जाना कि चाचा वासुदेव आज भी परिवार में अहम है। लेकिन किसे पता था कि जिस चाचा वासुदेव का नाम कार्ड में इतने सम्मान के साथ प्रकाशित किया गया है, दरअसल वो चाचा वासुदेव तो शादी के बारे में जानते तक नहीं है। उधर रिश्तेदारों से वासुदेव को शादी के बारे में पता चला कि शादी हो रही है मगर उसे बहुत दुख हुआ कि जिस भाई को वो इतना मानता था, जिस भतीजे के लिए उसने अपना सब कुछ निछावर कर दिया, उन्होंने उसे शादी तक में नहीं पूछा? मगर वो अपमान का घुंट पीकर ही रह गया मगर किसी से कुछ नहीं कहा। ऐसे ही ऐन शादी की भी बेला आ गयी, शादी में जब लोगों ने नीरू और उसके घर वालों से पूछना शुरू किया कि वासुदेव नहीं दिखाई दे रहे हैं तो इस पर लोगों को यह बताया गया कि वो घमंड में हैं, हमारे यहां आना अपनी तौहीन समझते हैं। इस बीच धरमू की पत्नी नीना से एक रिश्तेदार ने कहा कि शादी हो गयी किन्तु आपका आकांक्षी नहीं आया, और आप मेरी पत्नी को खोज रही हैं। तब नीना चुप हो गयी। शादी का शोर थम गया, अब वक्त समीक्षाओं का था, हर पहलू पर जब लोगों ने सोचना शुरू किया तो नीरू को इस कुटनीति से पछतावा होता नज़र आया, वो अपने एक रिश्तेदार के पास रो-रोकर कह रहा था कि मेरा भाई शादी में नहीं आ सका, मैंने उसे बुलाया ही नहीं, मैं बहुत शर्मिंदा हूं। अपने कर्मों से, यह सब मुझसे नहीं होता लेकिन बेटों की चाल थी, मेरे हृदय में अपने भाई के प्रति आज भी वहीं करुणा और प्रेम है। लेकिन समय बहुत दूर जा चुका था, वो अब लौट कर नहीं आ सकता था। सच ही है कि अपनी बुद्धि-विवेक से अगर इंसान काम ले तो समाज में या फिर खुद के घर में रह रहे लोगों की कुटनीति आसानी से न सिर्फ समझ सकेंगे बल्कि वो वासुदेव जैसे नेकदिल चाचा का प्यार भी खोने से बच जायेंगे। उधर चाचा वासुदेव पहले से ही टूट चुका था, कि उसके सगे भाई और भतीजे ने, वो भतीजा जिसे उसने अपने खून पसीने से बेटे से भी बढ़कर पाला था, उसने अपनी शादी का न्यौता नहीं दिया। धीरे-धीरे गांव में यह बात खुल गयी कि शादी में जानबूझ कर वासुदेव को नहीं बुलाया गया था, इससे गांव में नीरू के परिवार की बहुत थू-थू हुई, आखिर में पछतावे के बाद नीरू ने अपने बेटों को समझाया, गांव के लोगों ने भी कहा कि मैं वासुदेव को समझाऊंगा, वो माफ कर देगा। हुआ भी ऐसा ही नीरू के माफी मांगने पर वासुदेव ने अपने भाई और भतीजे को माफ करके सज्जनता का न सिर्फ परिचय दिया, बल्कि अपने भतीजे की शादी की खुशी में गांव वालों को एक बड़ी दावत देकर अपनी एकजुटता का भी परिचय दिया।

चार दिनी इंडिया कार्पेट में करोड़ों का कारोबार

कालीन निर्यात संवर्धन परिषद (सीईपीसी) की तरफ से चार दिवसीय इंडिया कार्पेट पिछले दिनों सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के मैदान में बने भव्य वातानुकूलित पंडाल में सम्पन्न हुआ। केन्द्रीय कपड़ा राज्यमंत्री अजय टम्टा ने शमां रौशन करने के बाद फीता काटकर मेले का उद्घाटन किया। उन्होंने फेयर डायरेक्ट्री का विमोचन भी इस मौके पर किया। चार दिन में करोड़ों का कारोबार हुआ। इस दौरान विभिन्न देशों के सैकड़ों विदेशी ग्राहकों तथा विदेशी ग्राहकों के प्रतिनिधियों ने मेला में लगे विभिन्न स्टॉलों का भ्रमण किया। एक्सपो में ट्रेंड के हिसाब से इस बार नये रंगों के साथ मशीन मेड कार्पेट का भी बोलबाला नजर आया। मेले में देशभर के कालीन निर्माता बेहतरीन कलेक्शन लेकर पहुंचे हैं। एक्सपो में भदोही, मीरजापुर, कश्मीर, पानीपत, बनारस, गोपीगंज, कोलकाता, जयपुर, आगरा, नोएडा, गुड़गांव, नई दिल्ली, बीकानेर, लखनऊ आदि जगहों की बेहतरीन कालीनें सजायी गयी थी। कालीन मेलें में आए विदेशी ग्राहक एवं उनके प्रतिनिधि खूबसूरत भारतीय कालीनों को देख मंत्रमुग्ध हो गए। कालीन प्योर सिल्क रही हो या फिर कॉटन व वुलेन मिक्स। जूट की रही या फिर जींस आदि की। एक से बढ़कर एक डिजाइनर कालीन विदेशी ग्राहक अपलक निहारते रहे। कारोबारियों की माने तो कभी चाइना हस्तनिर्मित कालीनों में भारत का प्रतियोगी देश था लेकिन अब भारत चाइना में हस्तनिर्मित कालीनों का निर्यात कर रहा है। इस दौरान चार दिनों में सैकड़ों वॉयर एवं प्रतिनिधियों ने मेले का भ्रमण किया। हस्तनिर्मित कालीनों को जांचा-परखा और ऑर्डर दिया। कालीन मेले में ऊलेन-सिल्क मिश्रित 'ब्यूटी कार्पेट' की भी खूब डिमांड रही। इसे भदोही के मोहम्मद मीनहाज लेकर आये हुए थे। उन्होंने कहा कि जर्मनी में इसकी जबर्दस्त डिमांड है। साढ़े पांच गुणे आठ फुट के इस एक कालीन की कीमत करीब 40 हजार रुपये पड़ती है। सस्ती होने के कारण युवा वर्ग इसे काफी पसंद भी करते है। यह हस्तनिर्मित है। अमेरिका, आस्ट्रेलिया, ब्राज़ीज, रूस, जापान, सिंगापुर आदि देशों के निर्यातक मेले में पहुंचे हुए थे। विधायक शुचि स्मिता मौर्या, विकास आयुक्त (हथकरघा) शान्तनु, सीईपीसी के चेयरमैन महावीर प्रताप शर्मा, सिद्धनाथ सिंह, उमेश कुमार गुप्ता, विजय कुमार सिन्हा, सुबोध गुप्ता आदि मौजूद थे।

दीन के रहनुमा ही नहीं, देश भक्त भी थे 'आला हज़रत'

दुनिया के प्रमुख सूफी-संत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खां फाज़िले बरेली रहमतुल्लाह अलैह का तीन दिनी उर्स 23 सफर से बरेली शरीफ में शुरु होगा जो 25 सफर तक चलेगा। इस बार अंग्रेजी तिथि के अनुसार आला हज़रत का उर्स 13 से 15 नवंबर को पड़ रहा है। आला हज़रत दुनिया के मशहूर इस्लामिक विद्धान के साथ ही देश भक्त भी थे। प्रमुख इतिहासकार डॉ. मो. आरिफ बताते हैं कि दुनिया के विद्वानों में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खां फाज़िले बरेलवी एक अज़ीम शख्सीयत का नाम है। कम लोग जानते हैं कि जब देश अंग्रेज़ों की गुलामी की ज़ंज़ीर में जकड़ा हुआ था तो उन्होंने अंग्रेजो से मोर्चा लिया। उस दौर में उन्होंने ब्रिटिश हुकूमत का सिर झुका रहे इसलिए वो रानी विक्टोरिया का टिकट लिफाफे पर उलटा लगाया करते थे। एक रिपोर्ट...

दुनिया के प्रमुख सूफी-संत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खां फाज़िले बरेली रहमतुल्लाह अलैह का तीन दिनी उर्स 23 सफर से बरेली शरीफ में शुरु होगा जो 25 सफर तक चलेगा। इस बार अंग्रेजी तिथि के अनुसार आला हज़रत का उर्स 13 से 15 नवंबर को पड़ रहा है। आला हज़रत दुनिया के मशहूर इस्लामिक विद्धान के साथ ही देश भक्त भी थे। प्रमुख इतिहासकार डॉ. मो. आरिफ बताते हैं कि दुनिया के विद्वानों में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खां फाज़िले बरेलवी एक अज़ीम शख्सीयत का नाम है। कम लोग जानते हैं कि जब देश अंग्रेज़ों की गुलामी की ज़ंज़ीर में जकड़ा हुआ था तो उन्होंने अंग्रेजो से मोर्चा लिया। उस दौर में उन्होंने ब्रिटिश हुकूमत का सिर झुका रहे इसलिए वो रानी विक्टोरिया का टिकट लिफाफे पर उलटा लगाया करते थे।

डॉ. आरिफ कहते हैं कि उलटा डाक टिकट ख़त पर लगाकर आला हज़रत अपने चाहने वालों में अंग्रेज हुकूमत के खिलाफ वो साइलेंट मूवमेंट चलाते थे। इससे वो यह पैग़ाम क़ौम को देते थे कि अंग्रेज़ों का सिर हमेशा झुका रहना चाहिए। उस दौर में एक जगह से दूसरे जगह उनका ख़त इस बात का क़ौम और देशवासियों को संकेत देता था कि अंग्रेज़ों को उठने मत दो, महारानी का टिकट हो या कम्पनी हुकुमत के किसी गर्वनर को उन्होंने हमेशा उल्टा टिकट लगाया। आला हजरत ने ताउम्र अंग्रेजों से लोहा लिया। आपका महल जंगे आज़ादी के सिपाहियों के लिए हमेशा खुला रहता था, आप देशभक्तों को मुफ्त में अंग्रेज़ों से लड़ने के लिए घोड़ा दिया करते थे। आला हज़रत के दादा मौलाना रज़ा अली खां के सिर की कीमत लार्ड हेस्टींग ने उस दौर में 500 रुपये लगायी थी मगर वो कामयाब न हो सका। आला हज़रत को आला हज़रत का लकब हज़रत वारिसे पाक ने दिया, सबसे पहले वारिसे पाक ने उन्हें आला हज़रत कह कर बुलाया, फिर क्या था आज पूरी दुनिया उन्हें आला हज़रत के नाम से जानती है। मौलाना डा. शफीक अज़मल बताते हैं कि 14 जून 1856 को बरेली शरीफ में पैदा हुए आला हज़रत ने 10 हज़ार से भी ज्यादा किताबे लिखी थी। आपका लिखा फतावे रिजविया जिसे दुनिया भर के आलीम पढ़ाते हैं और जब कोई दीनी मसायल देखना होता है या कोई फतवा देना होता है तो आला हज़रत का फतावे रिज़विया पर सभी की नज़र होती है। यह 12 जिल्दों में है। आला हज़रत के उर्स में यूं तो दुनिया के कोने-कोने से ज़ायरीन रवाना होते जो नहीं जा पाता वो जहां होता है वहीं से उन्हें याद करता है। मौलाना हसीन अहमद हबीबी कहते हैं कि आला हज़रत दोनों हाथों से एक साथ लिखा करते थे। आला हज़रत ने 25 सफर को 1921 में दुनिया से पर्दा किया। आप पैदाइशी वली थे, 30 दिनों में कुरान कंठस्थ करके आला हज़रत ने सबको हैरत में डाल दिया था। अपनी पूरी जिन्दगी में उन्होंने कभी झूठ नहीं बोला। जब दुनिया के बड़े-बड़े वैज्ञानिक फंसते थे तो वो आला हज़रत से मुतमईन होकर जाते थे।

बनारस में हैं लाखों अक़ीदतमंद

मौलाना शफी अहमद कहते हैं कि बनारस में आला हज़रत को मानने वाले लाखों अक़ीदतमंद है। उर्स के मौके पर बनारस से भी हज़ारों लोग उर्स में शिरकत करने बरेली जाते हैं जो नहीं जा पाते वो बनारस में ही आला हज़रत के उर्स पर कुल शरीफ का एहतमाम करेंगे। इस दौरान अर्दली बाज़ार, मक़बूल आलम रोड, शक्करतालाब, पठानी टोला, जलालीपुरा, सरैया, मदनपुरा, रेवड़ी तालाब, कुदबन शहीद, गौरीगंज, शिवाला, बजरडीहा आदि में लोग घरों में फातेहा व मिलाद वगैरह का एहतमाम कराते हैं।

पूर्वांचल राज्य की लड़ाई लड़ेगा राजद

पूर्वांचल राज्य की लड़ाई अब लालू प्रसाद यादव के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय जनता दल लड़ेगी। राजद ने पूर्वांचल प्रभारी के पद पर नूरूल हसन आज़मी की नियुक्ति समझा जा रहा है कि इसी उद्देश्य से की है। नूरुल हसन आज़मी ने दिल इंडिया से खास बातचीत में कहा कि पूर्वांचल राज्य जब तक नहीं बन जाता तब तक पूर्वांचल का विकास नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि पूर्वांचल राज्य बने और काशी उसकी राजधानी हो। इसी मांग को लेकर राष्ट्रीय जनता दल जल्द ही एक बड़ा आंदोलन करेगी। उन्होंने कहा कि सभी सियासी दलों ने पूर्वांचल की जनता को छलने का काम किया है मगर अब पूर्वांचल के लोग इसे समझ चुके हैं। उन्होंने कहा कि केन्द्र और प्रदेश की भाजपा सरकार हर मोर्चे पर विफल हो गयी है। विकास उससे कोसो दूर है, कभी नोटबंदी, कभी जीएसटी, गाय, गोबर, तीन तलाक, लव जेहाद जैसे मुद्दों को उछाल कर भाजपा केवल बयानबाज़ी में लगी हुई और जनता का ध्यान भटका रही है। जब चुनाव आता है तो भाजपा जनता को आपस में बांटने वाला मुद्दा उछाल देती है। उन्होंने कहा कि काशी से काबा की हज उड़ान पर भी खतरा पैदा हो गया है। एक सोची समझी साजिश के चलते हज की उड़ान बंद करने की सरकार ने योजना बना ली है। नयी हज पालिसी हर तरह से मुस्लिम विरोधी है। इसे किसी भी हाल में बर्दाश्त नहीं किया जायेगा।

आस्था की गूंज
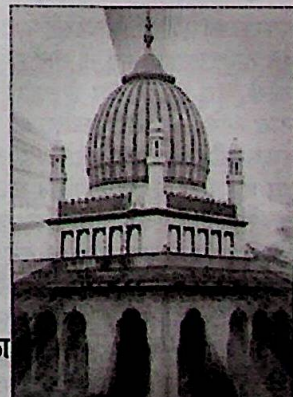
कबीर की याद में वेस्टइंडीज़ में भी कबीरचौरा

काशी के लहरतारा में जन्मे संत कबीर साहेब आज जग में छा गये हैं। आज उनकी तूती विश्व पटल पर बोल रही है। यही वजह है कि दुनिया भर के लोगों में संत कबीर को जानने और उनका अध्ययन करने की न सिर्फ अब होड़ मची हुई है बल्कि उनके अध्ययन के साथ ही अब विदेशों में भी कबीर के बड़े-बड़े आराधना केन्द्र भी तैयार हो रहे हैं, जहां दुनिया भर के कबीर पंथियों की जमात जुट रही है। इसकी ताज़ा नज़ीर है वेस्टइंडीज़ के त्रिनिडाड और टोबैगो में तैयार हुए भव्य कबीर चौरा मठ की। रिफत जहां की रिपोर्ट...

बनारस में कबीर चौरा संत कबीर का लालन पालन स्थल है। जो दुनिया में इस क़दर मशहूर हुआ कि आज न सिर्फ संत कबीर, बल्कि कबीरचौरा भी जग विख्यात हो गया। कबीर चौरा मूलगादी के महंत आचार्य विवेक दास बताते हैं कि त्रिनिडाड और टोबैगो में कबीर चौरामठ के नाम से ही मठ का न सिर्फ निर्माण हुआ बल्कि उसका भव्य उद्घाटन भी हाल के दिनों में वो करके लौटे हैं। कबीरचौरा मठ की स्थापना के तुरंत बाद, वहां एक आश्रम बनाने के लिए एक भक्त ने त्रिनिडाड की सुंदर पहाड़ियों पर कई एकड़ जमीन भी दिया है।

विवेक दास बताते हैं कि कबीरचौरा मठ का लक्ष्य कबीरपंथी समुदाय के संरक्षण के साथ-साथ कबीर साहब के दर्शन और उनकी शिक्षाओं को फैलाने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करना है।

कबीरचौरा मठ त्रिनिडाड और टोबैगो की स्थापना का मुख्य उद्देश्य कबीर साहेब का मूल दर्शन त्रिनिडाड के कबीरपंथियों को फिर से सुलभ बनाना था। आचार्य विवेक दास कहते हैं कि त्रिनिडाड की मेरी यात्रा से पहले, वहां केकबीरपंथी पौराणिक अभ्यास में फंस गए थे। वे अपने सभी रूपों में शास्त्रीय पौराणिक तरीके से अपने विश्वास का प्रयोग कर रहे थे। उनके काम का अर्थ समझने के लिए कोई प्रयास नहीं किया गया था और पौराणिक अनुष्ठानों को सामान्य रूप में स्वीकार किया गया था। यह कितना दुर्भाग्यपूर्ण था कि कबीर साहब के मूल दर्शन से उन्हें विमुख कर दिया गया। यहां तक कि बीजक कबीर साहेब का प्रमुख लेखन है, लेकिन इन लोगों को इस बारे में जानकारी नहीं थी। पौराणिक प्रभावों को अलग करने के बाद, मैने लोगों को बीजक में प्रशिक्षण देना शुरू कर दिया। सत्संग और रीडिंग में भाग लेने के बाद, लोग अंततः इस बात से आश्वस्त हो गए कि बीजक वास्तव में कबीर दर्शन का प्रमाण है और इसकी एकमात्र जगह है जहां मनुष्य मन की शांति और साथ ही आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

जन्म शताब्दी पर पड़ी थी नींव

लहरतारा में जन्मे संत कबीर के नाम पर वेस्टइंडीज में कबीरचौरा मठ का निर्माण की क्या कहानी? यह पूछने पर आचार्य विवेक दास बताते हैं कि वेस्टइंडीज में तकरीबन 200 साल से कबीर को मानने वाले थे मगर कबीर साहब के बारे में ज्यादा नहीं जानते थे। सद्गुरु कबीर साहब की छठी जन्म शताब्दी के मौकेपर 1995 में कबीर साहेब के दर्शन को स्पष्ट करने और व्याख्या करने के लिए पश्चिमी दुनिया के दौरे की मैंने शुरूआत की थी। इस दौरान मैं त्रिनिडाड और टोबैगो भी मैं गया और दो महीने तक वहां रहा। इस अवधि के दौरान कई सेमिनार और संगोष्ठियों का आयोजन किया गया जिसमें मैंने कबीर साहब के सच्चे मिशन और संदेश को लोगों के सामने रखा। त्रिनिडाड और टोबैगो के कबीरचौरा मठ दो बड़े वार्षिक त्योहारों कबीर पंथी मनाते हैं। ये जन्म दिन (जयंती) और कबीर साहब केनिर्वाण का दिन हैं। उत्सव एक रंगीन ढंग से होता है और कई तरह के हितों को जनता के लिए दिखाया जाता है। त्योहार के हिस्से के रूप में एक जुलूस भी होता है। त्रिनिडाड और टोबैगो के कबीरचौरा मठ, सिद्धपीठ कबीरचौरा मठ, मुल्गालादी वाराणसी द्वारा ही संचालित होता है। विवेक दास बताते हैं कि बाक़ायदा इस मठ का वहां रजिस्ट्रेशन पालयामेंट में कराया गया है जिसमें 3 सांसदों ने हस्ताक्षर किया है। 21 महंत वहां मठ की देखरेख के लिए हैं।

कबीरचौरा से जुड़ी यादें

कबीरचौरा स्थित सद्गुरु कबीर मंदिर कबीरचौरा मठ आदि मूलगादी वो रमणीक शांत परिसर है। जहां पर नीरू-नीमा नामक जुलाहे ने विक्रम सम्वत 1456 में कबीर को लहरतारा तालाब से उठाकर लाये थे। यहीं पर कबीर का लालन पालन हुआ। यहां परिचय और परम्परा संत कबीर से शुरू होती है। यहां कबीर ने साधना की थी ये उनकी कर्मभूमि थी। इसे कबीर का घर भी कहते हैं। इसके एक प्रखंड में नीरू-नीमा की समाधियां है। कबीरचौरा में ही कबीर सत्संग किया करते थे। करघे के ताने-बाने के साथ ही कबीर की यहां सत्संग पाठशाला चलने लगी। मठ में कबीर चबूतरा ऐतिहासिक व धार्मिक स्थल है। जहां पर 120 साल तक कबीर ने अपना सम्पूर्ण जीवन बिताया। इसी की प्रेरणा से अब दुनिया भर में कबीर की थाती बोल रही है।

एक साथ जब उठा18 ताबूत तो हुई आंखें सभी की नम

बनारस की ऐतिहासिक दरगाहे फातमान में जब एक साथ 18 ताबूत उठाया गया तो वहां मौजूद तमाम लोगों की आंखे खुद-ब-खुद नम हो गयी। लोग ज़ार-ज़ार रोते नज़र आये। दरअसल कर्बला की जंग में 72 शहीदों में इमाम हुसैन के साथ ही उनके 18 सगे रिश्तेदार भी शहीद हुए थे। इन्हीं 18 बनी हाशिम का ताबूत पिछले दिनों अंजुमन हैदरी की अगुवाई में जब उठाया गया तो पूर्वांचल भर से वहां लोगों का हुजुम ताबूत की जियारत को उमड़ा। अंजुमन के सेक्रेटरी सैयद अब्बास रिज़वी शफ़क व प्रवक्ता सैयद फिरोज हुसैन रिज़वी ने बताया कि 1314 हिजरी, सन 1882 में अंजुमन की नींव ब्रिटिश काल में रखी गयी था। अंजुमन पिछले चार साल से 18 बनी हाशिम का ताबूत उठाती चली आ रही है। इस बार ताबूत उठाया गया। इससे पहले अंजुमन हैदरी चौक की देखरेख में दरगाहे फातमान में ज़ोहर की नमाज़ के बाद से मजलिस हुई। मजलिस को मौलाना सैयद मोहम्मद अकील हुसैनी ने खेताब करते हुए कर्बला के शहीदों और असीरों की जिन्दगी पर रौशनी डाली।

कहा कि कर्बला वालों ने जंग के मैदान में भी नमाज़े नहीं छोड़ी। छोटे-छोटे बच्चे पानी के बिना प्यासे तड़पा तड़पा कर यज़ीदी फौज ने शहीद कर दिया। इसके पूर्व शराफत अली व हमनवां ने सोजख्वानी की तो पेशख्वानी सुल्तान सुरुर लखनवी, नायाब बलियावी, अतश बनारसी, वफा बुतराबी ने किया। कई नामचीन शायरों ने बारगाहे अहले बैत में अपने अशरार के ज़रिये खिराज़े अक़ीदत पेश किया। मजलिस के बाद 18 बनी हाशिम का ताबूत उठाने पूर्वांचल भर से लोगों का हुजूम दरगाहे फातमान में जुटा। ताबूत का ताअरुफ मौलाना कैसर नवाब जौनपुरी ने जब कराया तो लोग ज़ार-ज़ार रो पड़े।

एक एक ताबूत आता गया और मौलाना ने उसका ताअरुफ कराया। इस मौके पर सैयद फरमान हैदर, मौ. बाकर रज़ा बलियावी, सैयद अब्बास मुर्तजा शम्सी, सैयद आलीम हुसैन रिज़वी, लाडले हसन, नेयाब रज़ा, प्रिंस, शादाब रज़ा, शब्बीर हसन शब्बू, वसीमुल हसन, हसन मेहंदी, आरिफ रज़ा, उर्फी, विक्की जाफरी हज़ारों मर्द व ख्वातीन उमड़े हुए थे।

अंगूरी ताबूत उठाने काली महाल में उमड़ी ख्वातीन

आठवें इमाम हज़रत अली रज़ा की शहादत पर मशहूर अंगूरी ताबूत काली महाल मस्जिद में ख्वातीन द्वारा पूरी अक़ीदत के साथ पिछले दिनों उठाया गया। इस ताबूत की एक झलक पाने को ख्वातीन का जनसैलाब वहां उमड़ा हुआ था। इसमें मुल्क भर से ख्वातीन शिरकत करने पहुंची थी। मोहतरमा नुज़हत फातेमा के संयोजन में उठाये गये ताबूत के जुलूस से पूर्व नबी के 8 वें जानशीं हज़रत इमाम अली रज़ा की मजलिस भी हुई। मजलिस का आग़ाज़ मोहतरमा क़ारिया फरहा खां मुम्बई ने पाक कुरान की तेलावत से किया। मोहतरमा नौशीन फातेमा, मैरिन फातेमा तथा कनीज़ फातेहा इलाहाबाद ने मर्सिया पेश किया। मजलिस को डा. मिनहाज फातेमा नज़फी ने खेताब करते हुए इमाम हज़रत अली रज़ा को इल्म का समन्दर बताया।

उन्होंने कहा कि इमाम अली रज़ा ने इस्लाम और इल्म के उस मिशन को आगे बढ़ाया जिस पर अहले बैत चलते आ रहे थे। उन्होंने 55 साल की अपनी जिन्दगी में इल्म, सच्चाई और इंसाफ का परचम बुलंद किया। उन्होंने जिन्दगी भर लोगों को सच और सच्चाई के रास्ते पर चलने की तालीम दी। इस दौरान इमाम की शहादत के वाक्यात सुनकर मौजूद ख्वातीन की आंखों से अश्क छलक पड़े। मजलिस पूरी होने पर इमाम रज़ा का अंगूरी ताबूत ख्वातीन ने जब उठाया तो फिज़ा में हाय इमामे
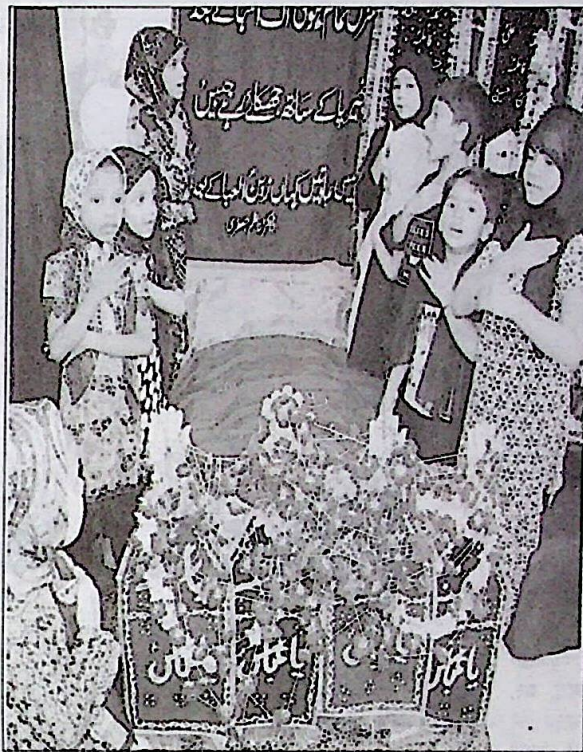
रज़ा...के नारों से माहौल ग़मगीन हो उठा। मजलिस में पहला नौहा भारत रत्न उस्ताद बिस्मिल्लाह खां की बेटी ज़रीन हैदर ने पढ़ा। उनके दर्द भरे नौहों पर ख्वातीन सिसकती दिखाई दी। अंजुमन हैदरी निस्वा की ओर से कैसर फातेमा, फरहा नाज़, शमीम बानो, फहमीदा नकवी आदि ने इमाम की शान में दर्द भरा नौहा पेश किया। मजलिस की संयोजक नुज़हत फातेमा ने लोगों का खैरमखदम किया तो नौशनी सलमान ने लोगों का शुक्रिया अदा किया। सैयद फरमान हैदर ने बताया कि इस ताबूत को अंगूरों से सजाया जाता है। जिसके चलते ही इसे अंगूरी ताबूत कहते हैं।

लेखकों से अनुरोधः

लेखकों से अनुरोध है कि वो अपने लेख, कहानी, विचार, कविता आदि साफ-साफ कागज़ पर हाशिया छोड़ कर लिखे, ताकि उसे शुद्ध-शुद्ध प्रकाशित करने में कोई परेशानी न हो, बेहतर हो कि टाइप करा कर भेजे। हमारा पता है-सम्पादक, दिल इंडिया राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका, एस. 3/200 उल्फत कम्पाउंड, अर्दली बाजार, वाराणसी, उत्तर प्रदेश। मो.09452246786,

786dilindia@gmail.com

कब्रों पर जलायी शमां, किया अपनों को याद
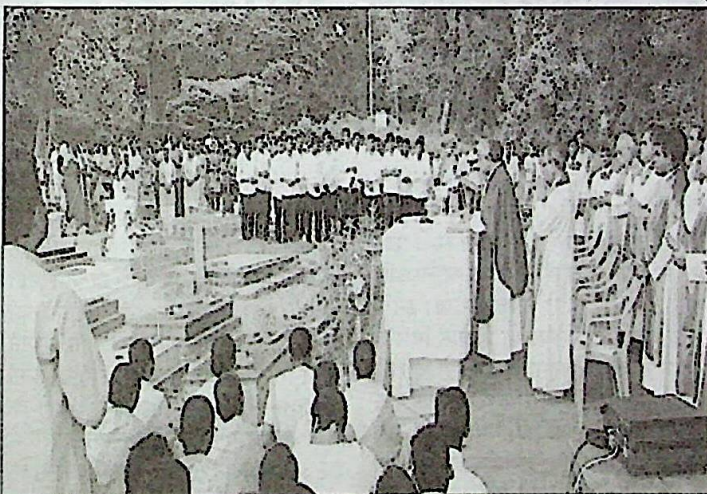
पिछले दिनों मसीही समुदाय ने अपने पुरखों की कब्रों पर जाकर शमां रौशन की और अपने अज़ीज़ों को याद किया। शहर के हज़ारों लोगों से अमूमन विरान रहने वाले कब्रिस्तान आल सोल डे पर गुलज़ार नज़र आये। ईसाई कब्रिस्तानों के मुख्य गेट पर ही फूल-मालाओं की कई दुकानें सजी थी। वहां से माला, मोमबत्ती व अगरबत्ती की खरीदारी कर अपने अज़ीज़ों की कब्र की ओर मसीही बढ़ रहे थे। चौकाघाट, फुलवरिया व सिगरा समेत जिले और आसपास के तमाम कब्रगाहों पर मसीही समुदाय का जमावड़ा दिखाई दिया। कब्रगाहों पर पहुंच कर अपने पूर्वजों की पवित्र आत्माओं के लिए लोगों ने प्रार्थना की। अज़ीज़ों की कब्र पर रौशनी किया, फूल-माला चढ़ाकर उन्हें याद किया। इस दौरान अज़ीज़ों को याद करके खुद की लोगों ने आंखे भी नम की। आल सोल डे जिसे सेंट डे भी कहते हैं, हर साल मसीही इसे पवित्रता के साथ मनाते हैं। यह दिन सभी आत्माओं की प्रार्थना का दिन मसीही समुदाय में निर्धारित है। इस दिन तमाम मसीही अपने पूर्वजों और परिवार की मृत आत्माओं के लिए प्रार्थना करने कब्रगाहों पर जुटते हैं। वाराणसी धर्मप्रांत केअध्यक्ष बिशप यूज़ीन जोसफ ने ग्रेवियार्ड में कलीसिया को सम्बोधित करते हुए कहा कि समस्त पवित्र आत्माओं का ये दिन है। यह दिन न केवल मृत विश्वासियों के लिए सहायक है बल्कि हम जैसे जीवितों के लिए भी, जिसके पास बहुमूल्य समय है। मृत्यु के बारे में सोचने से हमारा ध्यान वर्तमान समय को केन्द्रीत करने में मदद करता है। हमे वो हर पल को अच्छी तरह से जीने के लिए प्रेरित करता है। उन्होंने कहा कि आइये हम मृत विश्वासियों को याद करें और उनकी सहायता करें। आइये हम मृत आत्माओं के लिए प्रार्थना करने और उनकी सहायता करने से न हिचकिचायें। यहां सिस्टर्स ने भी मसीही गीत से लोगों को यह बताने की कोशिश की जिंदगी में प्रभु यीशु का कितना महत्व है। गीत के बाद कब्रों की आशीष हुई। फादर विजय शांतिराज, फादर सी. थामस, फादर हेनरी, फादर अवि, फादर चन्द्रकांत, फादर सिरीयक, फादर आरोग्य दास, फादर पाल, फादर दिलराज, मिस्टर राकी, सिस्टर प्रीति, सिस्टर तारा, सिस्टर मंजु, सिस्टर अंजु, विजय दयाल समेत हज़ारों लोग मौजूद थे।

इदरीसी अधिकार मंच ने दिया एकजुटता का पैग़ाम

आल इंडिया इदरीसी अधिकार मंच का स्थापना दिवस कचहरी के अम्बेडकर पार्क में पिदले दिनों धूमधाम से मनाया गया। इस मौके पर पूर्वांचल के कई जिलों के लोगों ने फजलू रहमान इदरीसी की अगुवाई में हुए इस आयोजन में शिरकत करके समाज की बुनियादी समस्याओं की ओर जहां लोगों का ध्यान आकर्षित किया वहीं दूसरी ओर समाज की तरक्की के लिए एकजुट रहने की भी सदाएं बुलंद की। एक रिपोर्ट...

स्थापना दिवस मो. अमान और मनीष शर्मा के संचालन में मनाया गया। स्थापना दिवस को सम्बोधित करते हुए दोनों ने कहा कि पूर्वांचल के विभिन्न जनपदों में इदरीसी समाज बेहद मज़बूत है मगर अफसोस की बनारस में उसकी गतिविधियां काबिले तारीफ नहीं है। जबकि समाज और संगठन की खुशहाली के लिए यकज़हती सबसे ज्यादा ज़रूरी है। कोई भी समाज तभी तरक्की करता है जब उसका मेयार ऊंचा हो, मेयार तालीम और एकजुटता से ऊंचा होता है।

एखलाक अहमद, रेयाज़ अहमद, इकबाल अहमद, डा. फैसल रहमान, अकील अहमद, नेहाल अहमद, मो. सुहैल आदि ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि दूसरों की कमी निकाल कर उनकी आलोचना एवं अपनी श्रेष्ठता साबित करने में हम लम्बे समय से लगे हुए हैं जिसके चलते छोटे-छोटे कई गुट बनते जा रहे है और संगठन का काम ठप पड़ा हुआ है। इसलिए नये सिरे से इदरीसी अधिकार मंच का गठन किया गया है, ताकि पूरे समाज को नयी सोच और नयी तकनीक के साथ जोड़ा जाये, जो भी सरकारी व गैर सरकारी प्रोजेक्ट आता है, उससे समाज के युवाओं को जोड़ा जायेगा। सर्वे कराकर इदरीसी समाज का सही आंकड़ा लोगों के सामने रखा जायेगा, सियासी दल हमेशा हमारे समाज को केवल वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल करते है मगर इदरीसी समाज को सत्ता में भागीदारी नहीं दी जाती है। ऐसे में समाज के उत्थान और उनकी तरक्की के लिए समाज को शिक्षा, सरकारी नौकरी और सत्ता में भी भागीदारी दी जाये।

कथक महोत्सव में प्रतिभाओं ने मनवाया अपना लोहा

नटराज संगीत अकादमी सिगरा की ओर से कथक महोत्सव का रजत जयंती वर्ष पिछले दिनों धूमधाम से मनाया गया। आयोजन में कथक सम्राट पद्म विभूषण पं. बिरजू महाराज के सानिध्य में हुए इस आयोजन में अस्सी घाट का सुब्हे बनारस कला मंच गवाह बना। नटराज संगीत अकादमी की निदेशक संगीता सिन्हा के संयोजन में पहली निशा में नटराज संगीत अकादमी की छात्राओं की प्रस्तुति ने जहां लोगों का मन मोह लिया वहीं दूसरी ओर प्रशिक्षु कथक कलाकारों ने अपने बूते यह दिखाने की कोशिश किया कि उनमें भी है दम, ज़रा देखो ज़रा...। पहली निशा में तबले पर कुशाल कृष्ण ने खूबसूरत संगत की तो आनन्द किशोर मिश्र के गायन ने लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। नृत्य निर्देशन खुद संगीता सिन्हा कर रही थी। इसके उपरांत मुम्बई से आयी सुश्री पूजा पंत ने अपने नृत्य से लोगों को कला और हुनर की बारीकी से रुबरु कराया। इनके साथ तबले पर मुम्बई के विवेक मिश्र व गायन पुष्कराज भागवत कर रहे थे वहीं सितार पर ध्रुव नाथ मिश्र थे। इसके बाद मुम्बई की ही सुश्री केका सिन्हा एवं ग्रुप सोमांगका भट्टाचार्य, श्वेता पडवाल ने भी लोगों के सामने अपनी कला का बखान किया। इनके साथ तबले पर कालीनाथ मिश्र, गायन वैभव मांडकर, पखावज पर सत्य प्रकाश मिश्र थे तो सितार पर ध्रुव नाथ मिश्रा ने संगत किया। ऐसे ही दूसरी निशा पर उत्कर्ष ने गिटार एवं उर्वशी ने कथक पर शानदार युगलबंदी की तो जोनाकी राघवन मुम्बई व सुश्री शाश्वती सेन दिल्ली ने अपने कथक की प्रस्तुति से लोगों का मन मोह लिया। विवेक, दिव्यांश, पुष्कराज आदि ने खूबसूरत संगत से लोगों का खूब मनोरंजन किया।

मखदूम शाह का उर्स मना

हज़रत मखदूम ताजुद्दीन शाह बुखारी रहमतुल्लाह अलैह का दो दिनी सालाना उर्स पूरी अकीदत के साथ पिछले दिनों मनाया गया। उर्स में जहां बाबा के दर पर लोगों का हुजुम उमड़ा वहीं फातेहा पढ़ने व मन्नती चादर व फूल माला चढ़ाने बाबा के दर पर दोनों वर्ग के लोग अक़ीदत लुटाते नज़र आये। बाबा के दर पर नातिया कलाम और सूफ़ियाना कलाम सुनने लोगों का मजमा देर रात तक जुटा हुआ था। बुनकर बिरादराना तंज़ीम चौदहों के सदर सरदार मक़बूल हसन की सदारत में हुए उर्स में प्रदेश अल्पसंख्यक कांग्रेस के संयोजक हाजी ओकास अंसारी, आलमीन सोसायटी के सदर परवेज़ क़ादिर खां, अनीसुर्रहमान कल्लू, मो. फारुक़ पहुंचे हुए थे। नफीस बनारसी, कैफ बनारसी, आसिफ कादरी, आरिफ अशरफी, हसीन बनारसी आदि शायरों ने नातिया कलाम पेश किया। बाबा के दर नसीम वारसी ने अपनी कव्वाली से लोगों को भोर तक बांधे रखा। हा. मो. अशरफ, अ. मजीद, अ. रशीद, बाबू, सरदार मोइनुद्दीन, रऊफ, शमीम, बेलाल, अ. रब, मुश्ताक, इकबाल आदि मौजूद थे।

खूबसूरती और अदाकारी का दूसरा नाम तब्बू

बहुत कम लोगों [illegible] है [illegible] तब्बू का पूरा नाम तबस्[illegible] फातिमा [illegible] है। उनका जन्म 4 [illegible] 1971 [illegible]राबाद में हुआ था। 19[illegible] में आई [illegible] बाजार में उन्होंने एक छोटा सा किरदार निभाया और उके बाद देवानंद के साथ हम नौजवान में मुख्य किरदार निभाया। इससे जाहिर होता है कि उन्हें बचपन से ही फिल्मों का बड़ा शौक था। उनके फिल्मी कैरियर में शबाना आज़मी का बड़ा योगदान माना जाता है। तब्बू के शबाना आज़मी से पारिवारिक रिश्ते थे। जब तब्बू की उम्र महज़ 14 साल थी। उस वक्त देवानंद फिल्म हम नौजवान'बना रहे थे। एक दिन शबाना आज़मी के घर में देवानंद ने तब्बू को देखा और अपनी फिल्म में काम करने का न्योता दे डाला। उस फिल्म में रोल था रेप विक्टिम का। तब्बू ने महज़ 14 साल की उम्र में अपनी डेब्यू फिल्म में रेप विक्टिम का रोल बखूबी निभाया और साबित किया कि वो बॉलीवुड की सबसे सशक्त अभिनेत्रियों में से है। बाद में उन्होंने कई भाषाओं में सैकड़ों शानदार फिल्में की। उन्हें कई बार राष्ट्रीय पुरस्कारों से भी नवाज़ा जा चुका है। चार नवम्बर को तब्बू 46 साल की पूरी हो गयीं।

तब्बू ने हिंदी, मराठी, तेलुगु और बंग्ला भाषाओं में कई फिल्में की है। फिल्म चांदनी बार और माचिस के लिए उन्हें दो बार राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। तब्बू ने विरासत, अस्तित्व, मकबूल, चीनी कम और हैदर जैसी कई और शानदार फिल्में की है। तब्बू आज भी फिल्मों में सक्रिय है। तब्बू को भारत सरकार की ओर से पद्मश्री से भी नवाजा जा चुका है। तब्बू के बारे में कहा जाता है कि अपनी खूबसूरती बरकरार रखने के लिए वो दूध से नहाती है। इसके अलावा तब्बू को परफ्यूम कलेक्शन का भी बड़ा शौक है। तब्बू का नाम कई कंट्रोवर्सीज में भी सामने आ चुका है। एकबार उन्होंने अभिनेता जैकी श्राफ पर भी छेड़छाड़ का आरोप लगाया था। साउथ अभिनेता नागार्जुन से उनके अफेयर के किस्से खूब चर्चित रहे। 46 साल की तब्बू अभी भी अविवाहित है। खबरों के मुताबिक फिल्म निर्माता साजिद ऩाडियाडवाला से उनके रिश्तों की बाद शादी तक भी पहुँच गई थी लेकिन फिर मामला आगे नहीं बढ़ सका। बॉलीवुड की जानी मानी एक्ट्रेस तब्बू 1980 से फिल्मों में काम कर रही है। अपने शानदार कैरियर में तब्बू ने बॉलीवुड को कई सुपरहिट फिल्में दी है। तब्बू की एक्टिंग को बाकी एक्ट्रेसेस से काफी हटके कहा जाता है। वो नए दौर में भी कई फिल्मों में नज़र आई जैसे की 'हैदर' और 'दृश्यम'। तब्बू के जन्मदिन के बहाने हमने उनसे जुड़ी वो बातें भी दिल इंडिया के माध्यम से आपके सामने रख रहे हैं जो कम लोग जानते हैं।

1.तब्बू ने शादी नहीं की, उनका नाम बॉलीवुड के कई सलेब्स के साथ जुड़ चूका है जैसे की साजिद नादियाडवाला, संजय कपूर और नागार्जुन।

2.तब्बू ने छोटी उम्र में ही जैकी श्रॉफ पर छेड़छाड़ का आरोप लगाया था।

3.तब्बू के माता पिता का तलाक तब हो गया था जब वो बहुत छोटी थी। तब्बू ने कभी अपने पिता को नहीं देखा।

4.तब्बू ने अपने बॉलीवुड कैरियर में कई बार अपने लुक्स के साथ एक्सपेरिमेंट किया है लेकिन अपना हेयरस्टाइल कभी नहीं बदला। उनका मानना है की उनके काले लंबे बाल उनकी संपत्ति है।

सितारों की दिवाली

दिवाली देश के बड़े त्यौहारों में से एक एक है। आम हो या फिर खास, हर कोई इस त्यौहार को बड़े धूम धाम से मनाता है। बॉलीवुड सितारे अपने घर पर दिवाली पार्टी रखते है जिसका हिस्सा जानी मानी हस्तियां बनती है. दिवाली के जश्न की बात हो तो अमिताभ बच्चन और सलमान खान का परिवार इसे बड़े धूम-धाम से मनाता है। इनकी दिवाली पार्टी को लोग खूब एन्जॉय करते है लेकिन इस साल ऐसा नहीं हुआ। ना ऐश्वर्या राय के जलसा में और ना ही सलमान खान के गैलेक्सी अपार्टमेंट में दिवाली मनी। बॉलीवुड के महानायक अमिताभ बच्चन की दिवाली पार्टी में हमेशा बॉलीवुड सितारों का जमावड़ा होता था, लेकिन इस साल बच्चन परिवार के सदस्य बड़े पैमाने पर दिवाली नहीं मना पाये। ऐश्वर्या राय के पिता का निधन इसी साल हुआ था और इसलिए बच्चन परिवार ने उनके शोक में फ़िलहाल कोई जश्न नही मनाया।

दूसरी तरफ सलमान खान जो हर त्यौहार को अपने गैलेक्सी अपार्टमेंट में मनाते है। अपने दोस्तों के लिए शानदार पार्टी रखते है उन्होंने इस साल दिवाली तो मनायी मगर अपने घर नहीं बल्कि अपनी बहन अर्पिता के घर। रिपोर्ट्स के मुताबिक सलमान खान की दिवाली पार्टी में शाहरुख खान, आमिर खान, अनुष्का शर्मा, जैकलिन फ़र्नांडिस और कई सितारे नज़र आये।
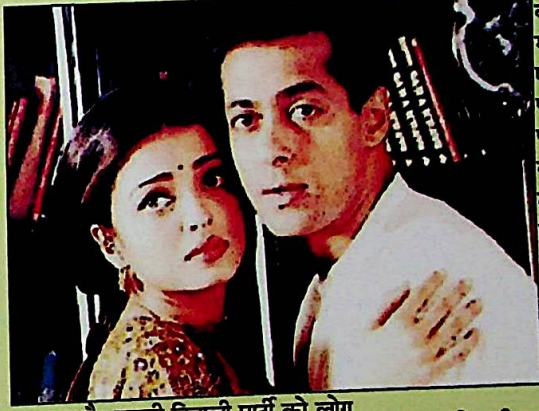
बता दें, हाल ही में मशहूर प्रोड्यूसर एकता कपूर के घर पर भी प्री दिवाली पार्टी रखी गई। जहां बॉलीवुड से लेकर टीवी जगत के कई बड़े सितारें शिरकत करते नजर आये क्षअय कुमार जहां अपनी वाइफ ट्विंकल खन्ना के संग पहुंचे वहीं संजय दत्त अपनी पत्नी मान्यता दत्त के साथ के साथ शिरकत करते दिखाई दिये तो वहीं आलिया भट्ट, श्रीदेवी, सोनम कपूर, सिद्धार्थ मल्होत्रा, करण जौहर, सुशांत सिंह राजपूत, कृति सेनन, सोनाक्षी सिंहा जैसे कई बॉलीवुड सितारे पहुंचे। तो वहीं इस पार्टी में दिव्यांका त्रिपाठी, मोना कपूर, साक्षी तंवर, रक्षंधा खान क्रिस्टल डीसूजा जैसे कई टीवी स्टार भी शामिल हुए और जमकर दिवाली का धमाल किया।